॥ श्रीः ॥

माधवनल कामकंदला

(नाटक)

शालिग्रामवैश्यकृत

दोहा ॥

करुणाहास्यशृँगाररस, वीणागानसँगीत ।
परमरम्यभाषाभणित, चातुरमाधुररीत ॥
छंद चौपई सोरठा, पद पद फूले कंज ।
रसिकवृंदसरसरसरस, पाठकमधुकरमंज ॥

जिसको

(श्रीकृष्णदासात्मज)

गंगाविष्णु खेमराजने

निज 'श्रीवेंकटेश्वर' छापाखानेमें

छपाकर प्रसिद्धकरा

मुंबई.

मार्च सन् १८८९ ई०

भूमिका.

हेमित्रो! एक समयमें मैं पुष्पवाटिकामें मनोहर २ पुष्पोंकी शोभा देख चित्त को प्रसन्न कर रहाथा. कि देखो ईश्वरने अपनी इच्छानुकूल कैसे २ सुन्दर और सुगंधित कुसुम पृथ्वीतल पर उत्पन्न कियेहैं. जिनकी कांति देख २ चित्तको भ्रांति होतीहै. उसी अवसरमें मेरे एक मित्र इसी रमणीक स्थान-पर आन सुशोभित हुये वह मुझसे कहनेलगे "हेप्रियवर आपके मोरध्वज नाटककी रचनाको देख मुझे अति आनंद प्राप्त हुआ अब किसी ऐसे नवीन नाटककी रचनाकरो जिस्में करुणा शृङ्गार और वीर रस तीनों झलकते-हों" उनका वाक्य श्रवणकर मैंने प्रत्युत्तर दिया कि ऐसेही होगा. यह कह एक पुस्तक उनको श्रवण कराई जो तीनों रस करके व्याप्तथी बस सुनते ही फडक गये और कहा "यह तीनों रसकी अद्वितीय है इसकाही नाटक रचो" मित्र तौ यह कह चले गये और मैंनेभी शोचा कि चतुर मासके दिन हैं विशेष कार्य्य भी नहीं यह मनमें ठान [**माधवानलकामकंदलानाटक**] का आरम्भकर दिया और कुछ समय उपरान्त उसको सम्पूर्ण किया.

• प्रियपाठक गण इसमें [**जयन्ती**] अप्सरा बहु [**नल**] का बिलापकलाप और [**बिक्रम**] के कटककी शूरता बहु दृढता और राजा [**कामसेन**] की सभामें शृङ्गार और [**कामकंदला**] की चतुराई देखने योग्यहै.

मुझको विश्वास है कि पाठकगण अवश्य मेरे श्रमको सुफलकर मुझे चिरबाधित करेंगे.

यह पुस्तक [**गंगाविष्णु,खेमराज**] वैश्यकुलभूषणको समर्पितहै जिन्होंने इसनाटकको अपने स्वकीय [**वेंकटेश्वर यंत्रालयमें**] छापकर प्रसिद्ध किया.

जहां कहीं अशुद्धि रहगई होगी मुझको विश्वास है कि पाठक गण क्षमाकरैंगे.

आपकाशुभचिन्तक
शालिग्राम वैश्य
महल्ला दीनदारपुरा
मुरादाबाद

नाटकपात्र पुरुष अरु स्त्री

नान्दी	नान्दी	नाटककेआरंभमेंशुभवचनकहनेवाला
सूत्र०	सूत्रधार	नाटककाअधिष्ठाता
नट	नट	नाटक रचनेवाला
नटी०	नटी	नाटकपतिकी स्त्री
गोवि०	गोविन्दचन्द्र	पुष्पावतीनगरीकाराजा
शं०पु०	शंकरदास	राजागोविन्दचन्द्रकापुरोहित
माधो०	माधवनल	नायक शंकरदासकापुत्र
रा०का०	कामसैन	कामावतीनगरीकाराजा
मंत्री	मंत्री	राजाकाप्रधान
दूत	दूत	राजाकाद्वारपाल
काम०	कामकन्दला	नायका कामकौमुदीकी पुत्री
म०मो०	मदनमोहनी	कामकन्दलाकी सहेली
म०मं०	मनोजमंजरी	दूसरीसहेली
कु०कु०	कुसुमकुमारी	तीसरी सहेली
कुं०क०	कुन्दकली	चौथी सहेली
प्रे०प०	प्रेमपताका	पांचवीं सहेली
स०स०	सबसखी	कामकन्दलाकीसबसखीं.
शुक	शुक	मैनावनकापक्षीमनोहरबोलीबोलनेवाला
शारि०	शारिका	मैनासुन्दरपक्षीवोलनेमेंपरमचतुर
रा०वि०	वीरविक्रमादित्य	उज्जैननगरकाराजा
माली	माली	राजाकेउपवनकासींचनेवाला
पुजा०	पुजारी	शिवजीकापूजनेवाला
बसी०	बसीठ	सुधिपहुंचानेवाला दूत
भा०ज्ञा०	भानमती ज्ञानमती	राजाविक्रमकीदूतिका
मंत्री	मंत्री	राजाविक्रमादित्यकाप्रधान
शू०वी	शूरवीर	वज्रनाभादिराजाकेसावंत
सै०प०	सैनापति	राजाविक्रमकेसैनापति
दूत	श्रीपति	राजाविक्रमकादूत
विदू०	विदूषक	राजाविक्रमकाभाट

कवीं०	कवींद्र	राजाविक्रमकाकडखेल
ग्राम०	ग्रामवासी	गांवोंकेरहनेवालेमनुष्य
वैद्य	वैद्य	राजाविक्रमनेवैद्यकावेषकिया
वैता०	वैतालअगियाकोयला. राजाविक्रमकेदोनोंवीर	
स०शू०	सबशूर	राजाविक्रमकेयोद्धा
मद०दि	मदनादित्य	राजाकामसैनकापुत्र
रण०	रणधीरसिंह	राजाकामसैनकापौत्र
श्रू०वी०	दन्तवज्रादि	राजाकामसैनकेमल्ल
सै०प०	सैनापति	राजाकामसैनकेसैनापति
देवी	देवी	जगत्मातादुर्गाभवानी
शिव०	शिवजीमहाराज	महादेव कैलाशेश्वर
पार०	पार्वती	शिवजीकीभार्या
वीर०	वीरभद्र	महादेवजीका गण

श्रीगणेशायनमः

माधवनल कामकंदला नाटक

सोरठा

जयजयकृपानिधानज्ञान खान मंगल करण॥
देहुमोहिंवरदान माधवनल नाटकरचौं॥१॥

कवित्त

सिद्धिके सदनगजवदनविशालतनदरशाकेकु
रतहीहरतहैं कलेशाको अरुणपरागकोललला
टमेंतिलकसोहै बुद्धिकेनिधानरूपतेजज्योंदिने
शांको मंगलकरण भवहरणशरणगयेउदितम
भावजाकोविदितसुरेशाको जेतेशुभकाजता
मेंपूजियेप्रथमताहि ऐसो जगवंदनसुनंदनम-
हेशाको

सूत्रधार आताहै

सूत्रधार०- हे भ्राता देखतौ कैसे कैसे यशस्वी तेजस्वी धर्मार्थीप-
रमार्थी भाग्यवान गुणनिधान दाता पुरुष आज समाज
में विद्यमानहैं जो मुँहमाँगे दान केदेनहारे हरिश्चंद्र विक्र
म करणके समान हैं इन सज्जनोंको कोई नवीन नाटक
रसीलारंगीला विरह रसभरा अत्यंत चटकीला दिखाना
चाहिये जो उस्से इनके चित्तको प्रमोद होगा तो हम लो
गोको ऐसा पारतोषिक प्राप्ति होगा कि जिसको हमारीसा
त शाख बैठी खाया करें.

नट०—आकर धन्यधन्य भाई तेरी बुद्धिको ऐसे दाता पुरुष कहां मिलैंगे परंतु यह तौ कहो कौनसा नाटक ऐसा उक्त गुणोंका विचाराहै वर्णन तौ सबकुछ किया परंतु नाम अबतक न लिया वियोगके चाहनेसेभी कोई नवीन अभिनयका नाम समझ सक्ता है.

सूत्रधार—आज इस सज्जन समाजमें लाला शालिग्राम कृत माधवनल कामकंदला नाटक करनेका विचारहै क्योंकि आजकल वियोगही सबके मनको आनंददायकहै अरु नवीन रचनाके सुन्नेको सब सज्जनोंके चित्तको अवश्य परमोत्साह होताहै.

नट०—अहाहाहा! यह नाटक तौ ऐसा अद्भुत रचूंगा कि एकवार तौ सबके नेत्रोंसे जलधारा नीलधाराकी भांति बहा देनी अरु सब सभा चित्रपटी सम बना देनी जो सदास्वप्नमेंभी नाटकही नाटक पुकारा करैं जो आज्ञाहो तो अभिनयारंभ किया जाय

सूत्रधार—यहचटपटी वार्ता भला तुम अकेलेही नटीके यह नाटक कैसे रच सक्तेहो तुमतौ माधवनल बनगये परंतु कामकंदला किसे बनाओगे भ्रातजो मेरा कहा मानो तौ प्रथम अपनी नटीसे सम्मति करो विना स्त्रीके कोई काम सिद्ध नहीं हो सक्ता.

नट०—अहाहाहा यहबात तौ आपने मेरे अंतरकी विचारकी कही क्या आप ज्योतिष विद्याभी जानतेहैं मेरे लोचनचकोर प्यारीका चंद्रानन देखनेको अत्यंत भटक रहेथे सत्यहै एक हाथसे ताली नहीं बजती एक पगसे कोई नहीं चल सक्ता इसीभांति सुनयनीके विना संयोग संसारका

कोई कार्य सिद्ध नहीं होसक्ता नेपथ्यकी ओर निहार करहे प्राणप्यारी हे प्राणप्यारी शीघ्रसिधारो यह समय विलंब करनेका नहीं है.

नटी०–हे प्राणवल्लभ दासी उपस्थित है. क्या आज्ञा है.

नट०– आज इस राज समाजमें माधवनल कामकंदला नाटक करनेका विचार है इसकारण तुम अपनी पूर्ण प्रीतिकी रीति हृदयमें धारण कर साक्षात कामकन्दला बन सबका मन ऐसा मोहितकर जो सबके नेत्रोंमें चित्रकी नाई आठोपहर सन्मुख दिखाई दियेकरै.

नटी०–हे प्राणनाथ दयाकीजे कामकन्दलाके नामसे मेरा हृदय कांपता है उसके वियोगको देख वियोगभी योग साध शिरमें छारडालता फिरताहै उसकी विरहविथा सुनसुन शून्य हुई जातीहूं अरु जबमें साक्षात् ही बनगई तौ फिर क्या ठिकानाहै यहविरहानल नजानिये किधरको चलपडै आप कृपा करकै इसनाटकको नौ शांतिही रखिये. कल्ह नाही मुझे आपका दर्शन नहीं हुवा चारही पहरमें मेराचित्त ऐसा व्याकुल हो गयाकि हृदय अबतक धकधक करता है बरसोंका वियोग अरु मदनका रोग किस्से झिलसकैगा अरुवैसेमें आपकी दासीहूं किसी भांति आपकी आज्ञा उल्लंघननहीं करसक्ती परंतु यहदुःखमुझसे नदेखा जायगा हेकंत यह वसंत ऋतु अरु यह विरहानलका प्रकाश.

कवित्त

जबतेहमारे प्राणप्यारे हैं पधारेउत धीर नहीं धारेजात पीरहियेमेंजगैं शीतलशरीर भयो नीरकालिंद्रीकेतीर बलबीरबिननीर दृगतेडगैं केशरीसमान ज्याबिरहपरै हैभानयोगज्ञानयेमपन्थपृथतवहीमगैं बोलीकोकि-

लानकीकैर हैं शूलहूलहमैं प्यारेये कदंबनके फूलगोलीसे लगें ॥१॥

हे प्रीतम इससमय कुछरंगही और दृष्ट आताहै.

कवित्त

औरे भाँति कुंजनमेंगुंजरत भौंर भीर औरडौरझौरनमें बौरनके व्हैगये कहैपदमाकरसो औरे भाँतिगलियानछलिया छबीलेछैलऔरछबिछ्वैगये औरभाँतिविहंगसमाजमें अवाजहोतऐसा ऋतुराजकेन आजदिनद्वैगये औरैरस औरैरीति औरैराग औरै रंग औरै तन औरैमन औरै वन व्हैगये ॥२॥

नट०- हे पंकज लोचनी! क्यों वृथा भयकरकै अभिनयका समय संकोच करे देती है इससोचको त्याग अनुरागसहित कामकंदलाका वेष धारणकर विना वियोगके संयोगमें रस नहीं प्राप्तिहोता जैसे ऊषाके वियोगमें चित्ररेखाने संभोग कराय उसका मनोरथ पूर्ण किया ऐसेही जबमाधवनलवीर विक्रमादित्यसे मिलगया फिर काम कन्दलाके मनोरथ सिद्ध होनेमें क्या सन्देह है.

सूत्रधार०- देखो इस कुसुमोद्यानसे कैसी कोकिलाकी धुनि मनभावनी सुहावनी सुनाई आती है.

मोर कैसा मनोहर शोरकर रहे हैं.

पपीहापियापिया अलगही पुकाररहाहै.

दादुरका दुरदुरशब्दसुन हृदय मेंदरारसी होती है.

झींगरझींझींझींझीं अपनीही धुनिअलापरहे हैं.

कोयलकीकूक कलेजेके टूकटूककरेडालतीहै.

नट०- इस शब्दमें नूपुर किंकिणादिझांझनकी झनकार भी मि

लरही है इस्से थे किसी कोकिलकण्ठी की रसीली मधुरवाणी ज्ञात होती है अरु जिसको आपने मोर समझा है वह बांसुरी जान पडती है अरु जिसको आप पपीहा कहते हैं वह मंजीरोंका शब्द है अरु जिसको आप झींगर की झहरान जानते हैं वह सारंगी है अरु जिसको आप दादुर वर्णन करते हैं वह मृदंगकी ताल है अरु जिसको आप कोयल बतलाते हैं वह वीणा मालूम होता है ऐसा जान पडता है कियह कामकन्दला है सखियों समेत पुष्पोद्यान से नैपथ्यकी ओर होकर गाती बजाती चली आती है.
हे प्राणपति मैं तो कामकन्दलाका वेष धारण कर सखियों सहित आगई अरु आप अबतक बातेही बनारहे हैं झटपट माधवनल बन किसीको राजा किसीको मंत्री बनाय नाटकरचायदो विलंब क्यों करते हो.

सूत्रधार०– तुम अपना अपना वेष धारणकरो अरुहम अपने ताल तम्बूरसे निश्चिंत होय सब जाते हैं.

दोहा

कवि०– सुंदर शुण्ड स्वरूपशुभ शमन सकल सन्देह
शिव शक्ति सुरशेष शशि सेवत सहित सनेह

कवित्त

आनँदके सदन एकरदन मदन कदन तनय मोहे लेतमनको छबिगजवदन विशालकी सेंदुरको तिलक भाललाललाल नेत्रसोहैं जोहें सोमोहें कण्ठ शोभामणिमालकी दीननके सहायक सुरनायक सबलायक होपूरण वरदायक पीरमेट

त कलिकालकी माधवनल नाटककेरचिवे
कोशालिग्रामबारंबार विनयकरत गिरिजा
केलालकी ॥१॥

प्रथम अंक

(स्थान कामावती नगरी राजाकामसैनका नृत्यभवन)

राजाकी सभामें नृत्यहोरहाहे कामकन्दला नाचरहीहै.



द्वार०- महाराज कुछ निवेदन है.

राजा०-कहो.

द्वार०- महाराज एक परदेशी ब्राह्मण द्वारपर आयाहै.

राजा०-सो क्या कहताहै.

द्वार०- वह नृत्यतालका विचार करके आपकी सब सभाको मूर्ख बनाता है.

राजा०- क्यों.

द्वार०- यह कहताहै कि बारह मृदंगियोंमें एक मृदंगीके दहने हाथका अंगूठा मोमका है.

दोहा

सातचारके मध्यहै उठिकिनदेखहु जाय॥
तालनपूरीपरतहै पातरकहतलजाय॥१॥
कवितरागसुरतालसब शुद्ध अशुद्ध जु होय॥
सूररवमनसमतासकल विरलाबूझे कोय॥२॥

राजा०- मृदंगीको हमारे पास लाओ.

द्वार०- (जो आज्ञा) सातचारके बीचवाले मृदंगीको राजाके सन्मुख लाताहै अरु राजा उस्का अंगूठा देखता है अरु सबसभा चकित हो जातीहै.

राजा०- अच्छा उस ब्राह्मणको अभी हमारे सन्मुख लाओ.

द्वार०- (जो आज्ञा) (बाहरजाकर) महाराज पधारिये आपको राजाने बुलाया है (ब्राह्मण सभामें जाताहै.)

राजा०- (ब्राह्मणको देखकर) प्रणाम करताहूं.

माधो०- आशीर्वाद.

राजा०- महाराज आसनपर विराजो (माधवनल बैठताहै)

माधो०- बैठताहै अरु मनमें यह कहता है कि हे परमेश्वर यह कैसा प्रकाश है.

कवित्त

खडीखण्डतीसरे रंगीली रंगमहलोंमें जाकी
छबिदेखस्वासछबिहूकोबंदहै कालिदास
बीचनिदरीचिनिकैझलकनि छबिकीमरी
चिनिकीझलक नमंदहै चिनदेखिभगमें

हा धौंयहघरमेंहैरगमगैजगमगैजोतिनकीकं
दहै जीगनिकी ज्वालहैकिलालनकीमालहैकि
चामीकरचपलाकिरविहैकिचंदहै ॥१॥

सचतौ यहहैकि यह शचीहै नरंभाहै रतिहै नअचंभाहै
परंतु रतिपतिका फंदहै इसफंदसे मेरे मनका निकलना
महा कठिणहै.

राजा॰– आप बडे योग्य अरु गुणवानहौ इसकारण यह स्व
र्णका रत्नजटित मुक्तमाल स्वर्णमयी कुंडल सुंदर सुंदर
वस्त्र अरु यह अमूल्य रत्न लीजिये (देताहै)

माधो॰– (स्वस्ति पढ लेताहै)

काम॰– (आपहीआप) अहाहा यह पुरुष कौन है इंद्रहैया
चंद्रहै कुबेरहै या किन्नरहै देवहै या यक्षहै अरु वीणाको
देखकर नारदका संदेह होता है या यह रतिपतिहै रतिके
वियोगमें योगी बना फिरताहै परंतु यहतौ कामसेभी अ
धिक गुणवान जानपडताहै जो यहगुणी न होता तौ यहां
तक कौन इसे आने देता सत्यहै ऊंचनीच कैसाही पुरुष
होय परंतु गुणी होय तौ सबठौर सन्मान पाताहै जोगु
णी पुरुष परदेशमें जाताहै तौ अत्यंत महँगे मूल्य बि
काता है (यथाहीरा पन्नामणिमुक्ता) जैसे पुत्रको माता
पालतीहै तैसे गुणीको गुण पालता है इससभामें आ
ज यह कोई बडाही गुणवान पुरुष आयाहै नहीं तौ इस
निर्गुणी सभामें गुण अवगुण कौन जान सक्ताहै आज
फिर नवीन शृंगारकर इसपुरुषके सन्मुख अपना गुण
प्रगट करूंगी (फिर शृंगार करती है)

माधो॰– (कामकंदलाको देखकर आपहीआप) धन्यहै वि

धाताके करतव्यको जिसने संसारमें ऐसीऐसी सुंदर शो-
भायमान सोहनी मनमोहनी स्त्री रचीहैं कि जिसके दे
खतेही मन हाथसे निकल गया अव यह फिर इंगार
करके क्या मेरे प्राणलेगी यह स्त्री नहीं है कोई छलावाहै
इसकी मांग चंदन भरी ऐसी शोभा देतीहै जैसे काले स
र्पके मुखमें दुग्धकीधार मांगके मोती कैसे शोभायमान
सुहावने दृष्टि आतेहैं मानो यमुनामें तारोंकी जोति.

दोहा

मांग अग्रमाणिकदिपै अरु मुक्ता गुणसंग
क्षणक्षण जोतिधरैं बहुत मणिप्रगटे सुभुजंग

करणफूल ऐसे शोभा पाते हैं मानों चंद्रमाकी कोरोंमें
तारागण कुमकुमका तिलक सँभालते में ऐसी शोभा मालू
म होती है मानो मनोजवाण तानरहा है इसके चंचल न-
यन हृदयको वेधे डालते हैं वेसरके मोती ऐसे चमकर
हेहैं जैसे शुधा करके निकट रोहिणी बिम्बाफलसे अधर
कीरकेसी नासिका दामिनिद्युति साहास्य बांसुरीके शब्दसे
वचन मनको मोहे लेतेहैं कविलोग कहतेहैं कि कोकिला
की ध्वनि नीकी होतीहै परंतु इसकी ध्वनि सुनि सब ध्वनि
फीकी लगती हैं.

दोहा

प्राण धरणचिंता हरण अवलाबचन अमोल
मुनिजनमन नहिंथिररहैं श्रवणसुनत यहवोल

हरित पीतमणियोंकी माला हृदयपर शोभितहै कुचकं
चनयातो सांचेमें ढाले हैं या गंगाकिनारे ईश्वरके द्वारे हैं मो
तियोंकी मालहिये में विराजमानहै दोनों कुचोंके बीचमें ऐ

सी शोभा देरहीहै मानो दोसुमेरोके वीचमें सुरसरीकी धार लहरें लेरही है उसी सरिताकी धारके इधरउधर दो चक्रवाक रात्रिके समय बैठे हैं अथवा कनक कीलतामें दोश्रीफल लगेहैं.

दोहा

अति कठोर कुच कलशसम मुखश्यामता सुभाय। मनो भस्म करिमयनकी बैठेईशाच ढाय ॥

अति सुंदर दोनों भुजामानो कंचनकी मंजरीहैं कमलनाल उनकी समता कब करसक्ते हैं देखनेमेंतो कंचन केसी चमक दमक है परंतु स्पर्शसे माखन समतुल्यहै जैसे कंचनके वृक्षमें दोशाखा निकलीहैं उसमें नख कैसे छबि देरहेहैं जैसे कंचनकी बेलिमें विद्रुम जटित हैं.

दोहा

नहिंनागिनि नाहिंनालिनिहै नहिंरोमावलिरेख वेणीकी झाईझलक निर्मल गातविशेख

अत्यंत कोमल उदरपर रोमावलि ऐसीशोभायमानहै मानो कंचनके खंभपर मृगमदकीरेखा खिंचरहीहै जंघा केलेके खंभके सदृश चिकनाई लिये परम सुंदर हैं इस सुंदरीको विधाताने बडे सावकाशमें रचा होगा इसकी चंचलताको देख चित्त चकित हुआ जाताहै परंतु इसकी चतुराईका चमत्कार देखना अवश्य चाहिये.

राजा०- महाराज चुप किसलिये हो.

माधो०- कौतुक देखते हैं.

राजा०- काहेका.

माधो०- सभाका.

राजा०- महाराज अब अभिनय देखियेकि ऐसा आपने आ जताईं कभी देखा तौक्या परंतु सुना भी न होगा.

माधो०- हां पृथ्वीनाथ सत्यहै (यह कहकर मनमें हँसा) (आपही आप) धन्यहै परमेश्वर तेरी महिमाको इन मूर्खोंको यह अभिमान.

(कामकंदला माधवनलकी ओरदेखकर गातीहै)

राग नट

कहै कोचंद्र बदनकी शोभा
जाको देखत नगर नारिकोसहजहिंतेमनलोभा
मनहुँचंद्र आकाशछांडिके भूमिलखनको आयो
कैधौंकामबासके कारण अपनोरूपछिपायो
भौंहकमानकटाक्षबाणसे अलक भ्रमर घुंघरारे.
देखतखबनबेधतहैं मनकोवचनहिंसकनबिचारे

विदू०- धर्मरक्षक यह क्या रागहै.

राजा०- नट.

विदू०- दीनदयाल नटतौ नवदशाघट शिरपरधर झटपट बाँसपर चढजाताहै क्या यहभी अबवाँसपर चढैगी अरु नटस हस्त्रों कला करता है इसने तौ एककलाभी नहींकी यह कैसा नट उछलहै न कूद है कुश्तीहै न कलाहै इसमें न टका एक लक्षणभी नहीं पाया जाता.

राजा०- नहीं नहीं आप क्या समझे यह नटरागका नामहै

विदू०- तौ कुछ चिंता नहीं अब हमारा सब संदेह जातारहा परंतु रागका नाम नट किसी नटखटने रक्खाहै अच्छा

उसकी मूर्खता उस्के संग हमको क्या प्रयोजन परंतु एक संदेह मेरा और दूर करदीजे.

राजा०- क्या.

विदू०- महाराज आज यह क्या कारण है जो कामकंदला ऐसा सुंदर नाचनाच रहीहै पहिले कभीभी ऐसा नाच नहीं नाची परंतु इसका नाचदेख मेराभी जी चाहता है कि इस पातरके संगमैंभी नाचूं.

राजा०- तुम क्या जानो.

विदू०- आपको सुधि नहीं हमने श्रीकृष्णके साथ बहुत नाच नाचा है.

राजा०- धिक् मूर्ख तू श्रीकृष्णके समयमें कहांथा चल झूंठ न बक.

विदू०- महाराज मैंतो पिछले जन्मकी बातें करताहूं आपने झूंठ कैसे जाना मैं लाखों वर्ष तक घाघरा पहरपहर कर श्रीयदुनाथकेसाथ नाचा अरु छाकखाई हमाराही नाम विशाखा अरु श्रीदामाथा.

राजा०- यह तो कहिये तुम स्त्री होया पुरुष.

विदू०- दयासागर मैंतो स्त्रीको जानूं न पुरुषको मुझको तो मेरी माता नपुंसक बताया करैथी.

राजा०- (हँसिकर) अब बहुत गप्पाष्टक होचुका अब नृत्य अवलोकन करो.

विदू०- देखो महाराज कामकंदलाके गुण अरु कर्तव्य दो जलके कुंभ भरे शिरपर धरे दोनों हाथोंमें चक्रलिये अंगुलियोंसे फिराती है अरु रागभी गातीहै परंतु अभिमानमें भुनी जातीहै सोमहाराज यह कोई अद्भुत बात नहीं

यह बात तौ सब पनिहारी जानती हैं जो घरघरका पानी भरती हैं मैंने अपने नेत्रोंसे देखाहै कि तीनतीन घडे पानीके भरे शिरपर धरे अरु दो दोनोंकाखों में अरुएक हाथमें फूल समठिलियालिये अरु दूसरे हाथमें रस्सी चक्र सम घुमाती अस्सी अस्सी स्त्रियोंकी धांगकी धांगवे खटकपरस्पर बातैंकरती यह रागिनी गाती चली जाती थीं.

रागिनी

हिलमिलपनियाँ चलोरीननदिया हिलमिल
पनियाँ। शिरपर घडाघडे परझारी शीतलजल
लेचलो भमनियाँ। किसके मारग कारण तानी
नैनशैनकीतीरकमनियां

राजा ०-तुमतौ सतयुगके मनुष्यहो तुम्हारी सबबातैंटीक हैं

(कामकंदला नाचतेहुए माधवनलकी ओर देखकर गाती है अरु उससमय एक भँवरस्तनोंपर आनकर बैठताहै).

राग काफी

मेरोचितचकोर भरमायो। धरनपर चंदकहाँते
आयो॥ कैकहूँ रूसरोहिणीदुखकीताकारणअ
कुलायो। पीप्यारीके डंडनकोहलदुर्बलवेषबना
यो॥ कैबिरहनि कोतापदेखकर दयाचितमेंलायो
जिन्हें जरायो कामनिरदई तिनको आनजिवायो
गगनहु मेंशशिदेतदिखाई धरनिहुमाहिंसुहायो
कैकहुं चंद्रदूसरोप्रगटो कैममगर्व घटायो॥ इत
हू शशिउतहूशशिदरशत भेद परतनहिंपायो।

इत उतनकत थकित भई आंखियाँ सबदुख सुख
बिसरायो यहचितवन यहरूपरसीलो आजमेरे
मनभायो दोऊ ओर चंद्रसे दरसैं मोहिमहा भ्रम
छायो

(आपही आप) यह भ्रमर मेरे स्तनोंको कमल जान
कर भेदन करताहै जो हाथसे छूतीहूं तो चक्रहाथसे गि
रताहै जो फूंकसे उडातीहूं तौ कुंभकुंभराशिसे कन्यारा-
शिपर जाताहै अरु जो बैठ रहताहै तो कुचको डंक मार
मारकर विदीर्णकरे देताहै चित्त अत्यंत व्याकुल होताहै क्या
करूं क्या नकरूं अबजीमें आताहै यह काम करूं कि स
बद्वारोंकी वायु रोककर स्तनोंके द्वारको पवन निकालूं
(सोनाट्य उसी भाँति चला जाताहै. अरु भँवर स्तन की
समीर लगनेसे उड जाताहै.

माधो०- (इस कलाको निहार चकित हो राजाकी ओर देखक
र आपही आप) राजा तौ मूर्ख ठहरा यह गुण अवगुण
को क्या जानै.

दोहा

कहासगुण समझेबिना कहासमझबिनहेत
कहाहेत आलमसुकवि रीझनसर्वशदेत

दोनों कुंडल उतार कर इसको दूं या मणिमाल वस्त्र उ
तार दूं क्यादूं जो प्राण भी दूं तौ इसके गुणके आगे कुछ
वस्तु नहीं.

(यह विचार सब वस्त्रालंकार जो राजाने दियेथे का-
म कंदला को उतार दिये.)

मदन०- सखी देखो हमारी प्यारी तो आज आपे में नहीं है इ

सके नेत्र बारबार इसपरदेशी हीपर पडतेहैं यह नेत्र ऐ सेढीठ हैं लज्जितनहीं होते आपही बसीठबन मन पराये हाथ में दे देतेहैं फिर आपही रोरो कर आँसुवोंकी नदी बहातेहैं.

दोहा

पहिले मन परबस करैं फिर रोवैं दिनरैन
वैरी आग लगायके दौरैं पानीलैन ॥

मनोज०- सखी यह परदेशी भी टकटकी बांधे इसीकी ओर देख रहाहै नयन की शायन दे दे कर मन पलटतेहैं पहि ले तो नेत्र रूपरसपान करतेहैं पीछे वियोगी बनाबन बन फिरातेहैं यह नेत्र बडे लोभी हैं.

दोहा

समझाये समझैं नहीं पलकदेत नहिं चैन
नीर भरे प्यासेरहैं निपट अनोखेनैन १
अनियारेतीखेकुटिल अंकुशसेदृगबाण
लागतसीधे आयके पीछे खैंचैं प्राण २

हमारी सखीने आजतक किसी पुरुषको दृष्टि भरकर नहीं देखा सो आज देखो यहइसे यहउसे देखदेखके सी मग्न होरहीहै जैसे चंद्रमाको देख चकोर को आनंद होता है.

मदन०- अरी कहे सुनेमें क्या होताहै दोनोंकामन पराये हाथ मेंहै नेत्रोंके मार्गहोकर इसकामन उसके हृदयमें अरु उसकामन इसके हृदयमें प्रवेश होगया नयनसे नय नके मिलनेही मन व्याकुल तन थकित हो जाताहै मा नो आज कुसुमायुधने धनुष बान तानदोनोंको बसमें

करलिया.

विदू०- महाराज इसपरदेशीने तौ सर्व सर्वस्व उतारकर पात र को देदिया हमभी अपना जामा पगडी दुपट्टा दिये देते हैं इनके अधिक और हमारे पास क्याहै (पगडी दुपट्टा उतारकर देताहै अरुसबसभा हँसतीहै)

राजा०- तुम यह क्या करते हो.

विदू०- कृपासिंधु वेश्याको दानदेताहूं मैं इसपरदेशीसे किस-बातमें कमहूं हमने किसी समय हरिश्चंद अरु करण कोनीचादिखायाथा इसबिचारे ब्राह्मणकी क्या साम-र्थहै जोहमारी समताकरसके परंतु आजकल वह स मय नरहा फिरभी मराहाथी विठौरे बराबर होताहै क्या इस भिखारीसेभी हमगये.

राजा०- नहीं विदूषकजीनही यह ब्राह्मण आपकीतुल्यता नहीं करसक्ता कहां आप कहां यहदीन ब्राह्मण तुम अपनी ओर देखो परमेश्वरने आपको सब लायक ब-नायाहै.

विदू०- आपही विचार देखो.

राजा०-(क्रोधकरके) हे ब्राह्मण मैंने दोकोटिका दान तुझको दियासो तैंने मणिरत्न गणिकाको उतार दिये अंतको फिर भिखारीका भिखारी तुझको लज्जा नहीं आती अरे भिक्षुक मेरे आगे दानीबनताहै कौनसीकलापर रीझकर तैंने सर्वस्व वेश्याको उतार दिया.

माधो०- हे राजन् जो मनुष्य समयपर नहीं रीझते सोजीवत-ही मृत हैं देखिये मृगपशुसदाबनमें बसतेहैं जब व्याध बिपिनमें जाकर वीणाबजाताहै तबहरिणहरिणीसे

कहताहै रीझकर पारधीको क्या दीजै हमारेपास देने को क्या है कुरंगिनी बोली प्राणसे अधिक और क्या वस्तुहै सो प्राणदान करदीजै जबबधिकने धनुष हाथ में लिया मृगने हिया आगे करदिया.

दोहा

धनकुरंगतेनादसुनि रीझनराखतप्राण
धैनकरणबलिविक्रम दियो न ऐसोदान

सोरठा

तूकहाजानैभंद दानमानसन्मानकरि
दियोसर्वसहरिश्चंद्र नीरनीचद्वारेभयौ

जो कोई कोटिदान देयतौभी मृगके दानके समान नहीं तुच्छहीदानका तुझे ऐसा अभिमानहै.

कवित्त

दानी भयेराजाबलिअंगहू न पायदयोदानी
भयेमोरध्वजआराशीशरेवायोहै दानीभ
ये करणधरणदानसेदीछायसकलदानीभ
येदशरथजिनप्राणको गमायोहै दानीभये
राजानृगगायें अनगिन्तदई दानी भयो विक्र
मजगजाकोयश छायोहै ऐरेअभिमानीअ-
ज्ञानी तुहूँदानी बन्योदेकै नेकदान नाहिंआ
पेमें समायोहै ॥१॥

तुमसे तो पशुही भलेहैं.

राजा०-अरे उदासी ऐसी कोनसी अद्भुत कला तैंने देखी जो रीझकर सर्वस्व पातरको उतार दिया हमको भी तो बताजो हमारे मनको धीर्य हो.

माधो०- हे राजन् तुम्हारी सारी सभातौ मूर्खहै ही परंतु मनि पट अनाडी निकले तुम्हारे यहां सवधान बाईस पसेरी हैं परंतु मैं जिसकलापर रीझासो सुनो.

दोहा

नाचततियकुच अग्रपै मधुकर बैठ्यो आय
आलमसोतससमीरसों दीनो मधुपउडाय ॥१॥

पंकजकी महिमाको दादुर मच्छ नहीं जानते उसके रसको मधुकरही पहिचानतेहैं तुम ॥अविवेकी गुण अवगुणको क्या जानो गुणका पहिचान्ना महा कठिण है गुण अमूल्यरत्नहै इसके आगे धन कुछ वस्तु नहीं जिस स्थानमें गुणी पुरुष जासक्तेहैं धनी कभी नहींजा सक्ता गुणीको गुणीही पहिचानतेहैं धनास्थिर नहीं रहता गुण शरीरके संगहै.

कवित्त

करणको सोनोदियोको ऊधो दिखावे आयगु
णिनके गुणकीकीरतिनिकेतहैं भोजदीनेहा
थी घोरे ओरसेविलायगये गुणिनके गुणप्र
सिद्ध आजलौंसेतहैं जिनकी बडाईकेग्रंथगु
णीगायगयेतेनर अमर अजरजगमें यशले
तहैं जेतो कुछगुणीदेतराजनकोराजीह्वैक
बते तोकोउराजागुणिनकोदेतहैं. ॥१॥

कलापर रीझकर गुणीजन प्राणकालोभ नहीं करते

राजा०- (क्रोधकरके) हे ढीठ चुप नहीं रहता मैं इककीनाईदर टर करेही जाताहै अभी खड्गमारूं तौ खण्डखण्डहोजा य परंतु ब्रह्महत्यासे डरताहूं.

माधो०- तूतो मेरे खंड खंड क्या करैगा परंतु खंड खंडमें तेरा अपयश होगाकि ब्राह्मण को मारा सबलोग हत्यारा कहैंगे अरु स्वर्गसे पतित होगा इसमें माता पिता का-वडा नाम उछलेगा यह काम अवश्य करने योग्य है तैंनेयह इतिहास नहीं सुना इंद्रने एक समय ब्रह्मह-त्या करीथी चारयुग घोर नरक भोगना पडाथा जो मनुष्य ब्रह्महत्या करतेहैं संसारमें चाण्डालके घर जन्म लेतेहैं जो कोटि तीर्थ यज्ञ करै तोभी ब्रह्महत्या न-हीं छूटती तथाच मनुः-

श्लोक

अवगूर्य्यत्वब्दशतं सहस्रमभिहत्यच जिघांसया ब्राह्मणस्यनरकम्प्रतिपद्यते १ शोणितं यावतः पांशुसंगृह्णातिमहीतले तावत्यब्दस हस्राणितत्कर्तानरकेवसेत २ अवगूर्य्यचरेत्कृच्छ्रमतिकृच्छ्रन्निपातने कृच्छ्रातिकृच्छ्रौ कुर्वीतविप्रस्योत्पाद्यशोणितम् ३ इयंविशुद्धिरुदिताप्रमाप्याकामतोद्विजम् कामतोब्राह्मण वधेनिष्कृतिर्नविधीयते ॥४॥

राजा०- अरे कोई इसदुष्टको यहांसे निकालता नहीं है शठ मेरे नेत्रोंके आगेसे हट जा अरु मेरे नगरसे अभी निकल जा जिसके घरमें तुझको पाऊंगा कुटंब सहित जीता गडवा कर तीरोंसे छिदवा दूंगा.

मंत्री०- आप चतुर होकर किसके मुंह लगतेहैं यह तो मूर्ख है इसी कारण मारामारा फिरताहै.

दो० चातुरनरनिशिदिनदुखी मूरखके घरराज

घटीबढीजानै नहीं पेट भरनसे काज ॥१॥

आप जानबूझकर वृथा क्रोधकरतेहैं इनलोगोंकी क्या सारा आजकहीं कलकहीं.

विदू०-हमारे नरेंद्रके नगरमें ऐसे मूर्खका क्या काम जो यह मूर्ख है तो कानपकडकरअभी इसदेशसे निकालदो अरु कहदो अरे पाखंडी तैंने राजाके सन्मुख सर्वस्व वेश्याकोदे दिया जो पापकी मूलहै तूकैसा ब्राह्मणहै इसदोषसे तू देशसे निकाला जाता है.

माधो०-राजन् तेरे नगरमें कौन रहताहै मैंतो ऐसे देशको दूरसेही नमस्कार करताहूं मैं उनराजाओंके नगरमें रहताहूं जो नित्य प्रतिमेरेचरण धो धो पीतेहैं धनका क्या तनका भीलोभ नहीं करते हे राजा तेराभी कुछदोष नहीं यहसब मेरेकर्मका अरु कलियुगका प्रतापहै हे मूर्ख.

श्लोक

शशिदिवाकरयोर्ग्रहपीडनं गजभुजंगमयो
रपिवन्धनं मतिमतांचाविलोक्यदरिद्रतां वि
धिरहो बलवानितिमेमतिः १

राग भैरव

तेरीमतिकितखोईगई धरणियहकाहूकीनभई
सगरदलीप भगीरथनृगकीकीरतजक्तेछई
सागर खोदधरणि परक्षणमेंगंगबहायदई। १
दुर्योधनरावणसे योधाकंचनकोटमई क्षणमें
छारभईहोरीसीएकएकईंटदई २ विश्वामित्र
महाप्रतापीविरचीसृष्टिनई मेरीमेरीकरतमर
गयेकाहूसंगनलई ३ परशुरामनेक्षितिक्षत्रि

नतेजीतीयारकई धरणिजहांकीनहां विराज
नकहंगईलईदई ४

कवित्त

सभामाहिं वैठगप्पाष्टक अलापनलगेहमारी
वसाईहै दिल्ली औजगादरी लोगकहैं मोरध्य
जहरिश्चंद्रदानी भयेयताबोतोहमैं ऐसीनेकना
मीक्याकरी चारवेद षटशास्त्र अष्टादश पुरा
णपढे जानीहै हमारी सबफारसी औनागरी
गुणिनकी बूझगईरीझभई भाटनकी कलिके
धनीलगेकरनकरनकी बराबरी १

विदू०- महाराज अबसंध्यासमयहुआ संध्यावंदनको चलिये कि
स मूर्खके मुँह लगते हो.

चलो सभा विसर्जन करो (उठकर मंदिरमेंगये मंत्री अरु
सेनापति सकल सभासद अपने अपने स्थानोंको जातेहैं
अरु यवनिका गिरती है)

इतिश्री माधवनल कामकंदला नाटक प्रथमो अंक
समाप्तम् ॥१॥

दूसरा गर्भांक

स्थान सभाका दालान

(कामकंदला सखियों समेत बैठीहै माधवनल उसकी ओर निहार रहा है.)



माधो०-(आपही आप) यहसब कर्मके दोषहैं इसमें और किसीका दोष नहीं.

दोहा

दक्षिणदिशियदि ध्रुवउदय तसीअग्निसिराय
पश्चिम भानुउदयकरै तउनकर्मगतिजाय १

भले वाबुरे जिसके कर्ममें विधाताने जो अंक अंकितकिये हैं चाहैं कोटियत्न करोराव होवा रंक विना भुक्ते किसी भांति

छुट नहीं सक्ता चाहे समुद्रका जल थाह होय गंगाका पश्चिमको प्रवाह होय चाहै शिलाके पंरवज में पहन पर पंकज उत्पन्न होय जो इतनी विपरीति होय तौभी कर्म गति नहीं मिटती अवश्यमेव भोक्तव्यं.

अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म्म शुभाशुभम्

श्लोक

ब्रह्मायेन कुलालवन्नियमितो ब्रह्मांड भांडोदरे
विष्णुर्येन दशावतार गहने क्षिप्तो महासंकटे
रुद्रोयेन कपालपाणि पुटके भिक्षाटनं कारितः
सूर्य्यो भ्राम्यति नित्यमेव गगने तस्मै नमः कर्मणे:

कर्मसेही रामचंद्रनें देश छोड वनमें जाय मूल फल खाये कर्महीसे पांडव बनको सिधाये कर्महीसे हरिश्चंद्रने नीच घर नीर भरा कर्महीसे विष्णुने बलिका सर्वस्व हरा.

दोहा

सोई कर्म मनुष्यका कोटि करावै वेष
सो कधि आलमना मिटै कठिन कर्म की रेखा

(भगट) सो आज इस नगरमें ऐसा कौन है जो मुझको एक रैन शैन करनेको स्थान दे हाय जिसने प्रीतम प्यारीसे छुटाया उसीने यह दुःख दिखाया है ईश्वर धन्य है तेरी गतिको

काम०- (आपही आप) इसके बचन सुनकर अब मुझसे रहा नहींजाता इस्से चलकर कुछ कहूं (भगट) हे विद्याधर क्यों सोच करतेहो तुम मेरे गुणको जानतेहो अरु में कुछ तुमारा गुण पहिचानतीहूं भंवरही कमलके गुणको जानताहै भला कच्छमच्छ उसके गुणको क्या जानैं अंधा नाच कूद कुछ नहीं जानता रूपकुरूप एकही करमानताहै वहिरेके

आगे जो कोई शंख बजावैहै वह जानताहै कि यह कोई अमृतफल खारहाहै हे प्रीतमप्यारे सोच संकोच त्याग नकरो इस राजाकी क्या शंका करतेहो मैं सब प्रकार आपकी सेवा करूंगी यहदासीतो आपके चरणोंके चरणोदककीप्यासीहै आपचलकर मेरा घर पवित्र कीजै अरु कुछ प्रेमकथा सुनाकर मेरे हृदयकी विरहानल बुझाइये.

दोहा

तुवमधुकरमैंकमलनी आयवासरसलेय
मैंसीपीतूस्वातिजल ओसबूंदभरिदेय ॥१॥

माधो०-(नेत्रोंमें जल भरकर) हे प्रिये इसजगत्में नेह स्थिर नहीं रहता जो स्थिर रहैतो नेहकीजे नहींतो स्नेह करना वृथाहै स्नेहके उपरांतका वियोग सन्निपातके रोगसे भी कठिण रोग है राति दिन रोमरोममें शोक होता है इस्से नेहकरना अच्छा नहीं. नेह तो खांडेकी धारहै दोनों ओरसे पैनी कौन छू सके.

दोहा

मिलत नयननहिं रहिसकैं जानै नेहपतंग
छूटै विरहवियोगते जियतजु होमैं अंग ॥१॥

सोरठा

हे प्रियविपतिवियोग अधिकअप्सरामुहिंदियो
कहा जानै सबलोग जोमेरे मनमें बसै ॥१॥

काम०- हे प्यारे कौनसी अप्सराने किस प्रकार तुमको दुःखदिया उसका वृतान्त तोकहो.

माधो०- सुनप्यारी जयंती नाम एक अप्सरा इंद्रके यहां अभिनय करनेवाली अत्यंतही रूपवान गुण निधानथी जिसकी शो-

भा वर्णन नहींहोसक्ती सोयौवनकी सरसाईसे इंद्रका ति-
रस्कार करनेलगी एकदिन जबराजा इंद्रने उसको बुला
या तो नाटक में नहीं आई यहसुन इंद्रने कोपकर शाप
दियाकि जापत्थरकी हो मृत्युलोकमें रहु शापका वृतांत
जान भयमान कंपायमान हो इंद्रके निकट जाय चरणों
परगिर निवेदन करने लगीकि हे सुरराज शापोद्धार कृपा
कर कहिये तबइंद्रने कहाकि पुष्पावती नगरीके विषय
शंकरदास नाम ब्राह्मणके गृह माधवनल नाम पुत्र होगा
द्वादश वर्ष उपरांत जब वह विचाहके हेतवनमें तेरा कर
गहैगा तबतू निजशरीरपाय यहाँ आवैगी यहसुन जयं
ती शिलाहो पृथ्वीपर पछाड खायगिरी.

काम०- हे प्यारे फिर क्या हुवा.

माधो०- हे सुंदरी जबमैं सात वर्षका हुवा तो मेरे पिताने पाठशा
लामें पढानेको भेज दिया पांच वर्षमें षडंग सहित वेदा
ध्ययन कर सम्पूर्ण शास्त्रका पारगामी हुवा एकदिनगु
रूने पुष्पलेनेके कारण मुझे पुष्पोद्यानको भेजा अरुब
हुत बालक मेरे संगकरदिये सुमनवाटिकामें जातेही ब
डे जोरशोरसे महाघोरकाली पीली आंधी आई चारो
ओर अंधेरा होगया सबबालक संगके मार्ग भूलकर व
नमें ढूंढते फिरे सूर्य्य भगवान अस्ताचलको प्राप्तहुए सं
ध्या हो गई चंद्रमा उदयहुवा आंधीथमगई तब एक सुं
दरमूर्ति पाषाणकी एक वृक्षकी जडमें दृष्टिपडी.

दोहा

नयन नासिका उरजमुख बाहुजंघपद ऐन
कामिनिउनिहारीलखी शिला सुंदरीनैन

सब संगके लडके मुझसे कहने लगे हे मित्र यह स्त्री तो तुम्हारे योग्य है तेरे रूपपर रीझ यह कामिनि कैसी चित्र सी हो रही है लज्जित हो मुखसे कुछ कह नहीं सक्ती इस कारण इसके संग अपना विवाह करले ऐसे कह सुन स ब लडके मुझे चलकर उस मनमोहनीके निकट लेगये मैंने कहा अरे मूर्खो तुम किस प्रपंचमें फस गये तुम्हारी बुद्धि नष्ट हो गई भला इस पत्थरकी स्त्रीके संग मेरे फेरे कैसे फेरे जा यगे परंतु मेरी बात किसीने एक न सुनी दशमें एककी क्या चले जैसे उनके मनमें आया वैसे वेद मंत्र पढ मेरा गं धर्व विवाह किया अरु आशीर्वाद दिया कि इन दोनोंकी प्रीति करतार जन्म जन्मांतर बनाये रक्खे फिर स्वस्तिव चन पढ उसका हाथ मेरे हाथमें देने लगे मेरे करका स्प र्श करतेही वह बाला बिजलीकी भांति चमक आकाशको च ली गई मेरी आंखोंके आगे चखा चोंधीसी आगई मैं दे खनेका देखता रह गया.

काम०- फिर क्या हुवा जबसे वह सुंदरी मिली वा नहीं.

माधो०- हे चंद्र मुखी जब वह चंद्र मुखी इंद्र लोकमें गई सुरेशने देखकर यथावत आदर सन्मान सहित सावधान कर पूंछा अरु कहा अब सब सोचसंकोच त्याग पिछली प्रीति निरं तर उसी भांति समझ आनंदसे रहाकर जयंती हाथजोड बोली महाराज क्या रहूं क्या न रहूं बडे आश्चर्यकी बात है मनुष्यका हाथ लगतेही मैं शिलासे अप्सरा हो गई क्या दे वताओंसे भी मनुष्य पवित्र हैं इंद्रने कहा जिस्के करके स्प र्शसे तू अप्सरा हो गई वह मनुष्य नहीं है वह शिवका पुत्र है जयंतीने बूझा वह शिवका सुत कैसे है कृपाकर वह इति

हास मुझे सुनाओ इंद्रने कहा जयंती सुन एक समय कै लास पर्वतपर शिवजीने द्वादश वर्षकी समाधि सम्पूर्ण कर फिर वनविहारहेत गंगातटपर आये तहां सुंदर व नकी शोभा देख उसी स्थानपर आसन लगादिया जब दिन व्यतीत हुवा अरु आधीरात हुई ठंडीठंडी सुगंधस नी पवनके लगनेसे शिवके नेत्रोंमें निद्रा आगई स्वप्न में ऋतुराजकी शोभा देखनेलगे भागीरथीकी निर्मल धार धूमधामसे लहरै लेतीचली जातीहै किनारे परकाम देवकी सैना अस्त्रशस्त्र लिये धनुषबाण संधाने खडी है फाग होरहाहै अबीर गुलालसे बादल लाललाल दृष्टि आतेहैं केशरिया रंगकी पिचकारी छूट रहीहैं नृत्य हो र हाहै गानेका शब्द कानोंमें सुनाई चला आताहै.

दोहा

चंद्रउदयलखिकै मदन काननलों धनुतानि
जीत्योजगसबपंचशर त्यागसकल कुलकानि
तजोगर्व अबचंद्रतुम भूलोमतिमनमाहिं
क्रोधहंसनि भ्रूबंकछबि तुममें स्वपनेहु नाहिं

कोकिला कुहकरहीहै कलित ललित बाणी बोलरही है आम्रके वृक्ष मौरके भारसे नीचेको झुकरहेहैं पपीहा वियोगियोंका हृदय विदीर्ण करनेको पिया पिया पुकार रहाहै सरोवरोंमें रंगरंगके सुंदर सुंदर कमल खिल रहे हैं त्रिविधिबयारिके संग पुष्पोंकी सनी सुगंधकीलपटैंकी लपटैं चली आतीहैं तहां एक सुंदर मंदिर अति विशाल शोभादेरहाहै अप्सरागानकररहीहैं यंत्री बाजे बजारहे हैं अरु एक चौकीपर कामदेव कृष्णचंद्रकीउनिहार मु

खमें गुलाल मले केशरिया वस्त्र पहरे पुष्पायुध लिये बै
ठाहै शंकरका भयंकर तेजदेख पंचशर घबराकर भा
गाहाय मारडालाहाय मारडाला यह कहताहुवा दौडाच
ला जाताथा क्योंकिवहतो पहिलेका दग्धा हुवाथा झट
पट मधुकर का रूप बनाय एक नल शरके छिद्रमें प्रवे
शकिया हायहायका शब्द सुन शिवजीके नेत्र खुलग
येदेखैं तो वहां बागहै नतडागहै न कामहै न धामहै शि
वने समझाकि यह सबकामका कौतुकथा महाक्रोधवा
न होलगेइधर उधरढूंढने नलशरके पत्रकंपतेदेख शि
वजी उसी जगह खडे होगये तबतो मारने जानाकि अ
ब मुझे मारा ऐसा समझ छिद्रांतरसे मदन शिवजीकी
स्तुति करने लगा.

श्लोक

नमोरुद्रायशर्वायमहाग्रासायविष्णुवे
नमउग्रायभीमायनमो क्रोधायमन्यवे ॥१॥
नमो भवायशर्वायशंकरायशिवायते
कालकालाय कालायमहाकालायमृत्यवे ॥२॥
वीरायवीर भद्रायक्षयद्वीराय शूलिने
महादेवाय महतेपशूनां पतये नमः ॥३॥
एकायनील कंठाय श्रीकंठायपिनाकिने
नमोनंतायसूक्ष्मायनमस्ते मृत्युमन्यवे ॥४॥
पराय परमेशायपरात्पर तरायते
परात्परायविश्वायनमस्तेविश्वमूर्तये ॥५॥
नमोविष्णुकलत्रायविष्णुक्षेत्राय भानवे
कैवर्तायकिरातायमहाव्याधायशाश्वते ॥६॥

भैरवाय शरण्याय महाभैरवरूपिणे
नमोन्नृसिंह संहर्त्रे पुरारयेनमोनमः ॥ ७ ॥
महापाशौघसंहर्त्रे विष्णुमायांतकारिणे
अम्बकाय अक्षरायशिपिविष्ठायमीढुषे ॥ ८ ॥
मृत्युंजयाय शर्वायसर्वज्ञायमरवारये
मरवेशायवरेण्यायनमस्ते वह्निरूपिणे ॥ ९ ॥
महाघ्राणाय जिव्हाय प्राणपान प्रवर्तिने
नमश्चंद्राग्निसूर्याय मुक्तिवैचित्र्यहेतवे ॥ १० ॥
वरदायावताराय सर्वकारणहेतवे
कपालिनेकरालाय पतये पुण्यकीर्तये ॥ ११ ॥
अमोघाय त्रिनेत्राय लकुलीशायशंभुवे
भिषक्तमाय मुण्डाय दंडिनेयोगरूपिणे ॥ १२ ॥
मेघवाहाय देवाय पार्वतीपतयेनमः
अव्यक्ताय विशोकाय स्थिराय स्थिर धान्विने ॥ १३ ॥
स्थाणवे कृत्ति वासायनमः पंचार्थहेतवे
वरदायैक पादायनमश्चंद्रार्द्ध मौलिने ॥ १४ ॥
नमस्ते ध्वर राजाय वयसांपतयेनमः
योगीश्वराय नित्याय सत्याय परमेष्ठिने ॥ १५ ॥
सर्वात्मनेनमस्तुभ्यंनमः सर्वेश्वरायते
एकद्वित्रि चतुष्पंचकृत्वस्ते स्तुनमोनमः ॥ १६ ॥
दशकृत्वस्तुसाहस्त्रकृत्वस्तेचनमोनमः
नमोपरिमितंकृत्वानंतकृत्त्वोनमोनमः ॥ १७ ॥
नमः शिवायदेवायईश्वरायकपर्दिने
नमोनमो नमोभूयः पुनर्भूयोनमोनमः ॥ १८ ॥ इति
उनकानौ नामही भोलानाथ था सबबातोंको भूलल्गे

कहने वरमांग वरमांग निसंदेह हमारे सन्मुख चला आ अरु जो इच्छा हो सोवर मांग हम तुझसे बहुत प्रसन्न हैं काम देव बोला हे त्रिपुरारि मैं आपको मुख दिखाने योग्य नहीं रहा आपकी क्रोधानलसे मेरा तन श्यामवर्ण होगया अब जो आप मुझपर प्रसन्न हैं तौ यहवर मुझे दीजे अपना सुत सकल संसारमें मुझको प्रसिद्ध कीजे भोलानाथ बोले एवमस्तु उस नलका मुख बंदकर कहा हे नल इसको पुत्रसम एक वर्ष लों पोषण कर यह कह शंकर तौ कैलाशको चले गये अरु नलद्वारसे एक वर्ष उपरांत परम सुंदर स्वरूप धारी कामदेवने अवतार लिया.

एक दिन शिव पार्वती देशाटन करते करते पुष्पावती नगरीमें आ निकले अरु एक मनोहर मंदिर देख कहने लगे हे गिरिराजनंदिनी इसनगरमें एक शंकरदास नाम ब्राह्मण राजा गोविंद चंद्रका पुरोहित मेरा भक्त पुत्र हेत तपस्या करताहै परंतु उसके भाग्यमें निजस्त्रीसे पुत्रकी उत्पत्ति नहीं है पार्वती बोलीं हे दीनदयाल पतितपावन दीन बंधु जैसै होसके वैसे आप उसको निश्चय पुत्र दीजै जो महाराज इसका मनोरथ सुफल न होगा तौ फिर कौन आपकी सेवा करैगा परंतु यह कहैंगे.

दोहा

कहिहै सब संसारमें प्रगटा विप्रकी गाथ
शंकर शंकरसेवते कछु फल लगो न हाथ

हे आनंद निधि इसकारण इसका कष्ट निश्चय निर्वारण कीजै जिसपर आप दया दृष्टि करैं उसको संताप अरु प्रारब्धसे क्या काम तृण ते गिरि गिरि ते तृण आपकर

नेमें समर्थहैं अधमको इंद्र अरु इंद्रकोमशक कर सक्ते हो सुख संपत्ति जो जगत्का आनंदहै तो प्रभु तुमको कुछ दुर्लभ नहीं यह सच्चा भक्त आपकाहै इसको दयाकर पुत्रकावर अवश्य देनापडैगा.

यह सुन शिवजीने पहिली कथा सुनाय नलमें से बालकको लाय माधवनल नाम धर पार्वतीसे कहने लगे चलो इस बालकको चलकै भक्तकोदें ऐसे कह रात्रिके समय उसके स्थानपर जाय महादेवजी अपने भक्तसे कहनेलगे.

सोरठा

रेउठि शंकरदास लेस पुत्र प्रसिद्धजग
पूजी तेरी आस सुफल भई शिवसेवतव

शंकरदासने नेत्र खोलकर देखातो शिवजी सन्मुख विद्यमानहैं झट घबडाकर चरणोंपर गिरगया शिवने पीठ ठोक वीर्य दिया यह पुत्र कुल मंडन पाखंड मतिखंडनचौदह विद्या निधानपूर्ण प्रतापीहोगा अरु माधवनल इसका नाम रखना यह कह शिवतो अंतर्द्धान होगये अरु शंकरदासने अपनी पत्नीकोजगाय बालक उसकी गोदीमें दे बोला यह भोला नाथका प्रसाद है मुझपर प्रसन्न हो यह सुंदर शिशु मुझको दे गयेहैं पुत्रका मुख देख ऐसी मग्नहुई मारे आनंदके रात काटनी भारी पडी दिवाकरका प्रकाश हुवा शंकरदास सब नगरनिवासियोंको बुलाय षटरस भोजन जिमाय अत्यंत पुष्कल दान किया अरु अति आनंद सहित जातिकर्मकर पुत्रका नाम शिवजीकाबताया माधवनल रक्खा हे जयंती यह वही माधवनल था जिसने तेरा हाथ पकडा अरु तू पतितहो गई.

अप्सरा यह वृत्तांत सुनासीरके मुखसे सुन परमानंद हो अपने घर आय यह विचार करने लगी.

दोहा

सज्जनद्रोही कृतघ्नी करतजो मिलकर घात
तेनर रविशशि उदयलों घोर नर्कमें जात ॥१॥
मोहिकरी माधोचतुर तीनोंविधि इकसाथ
जन्मांतर पीठनतकों सोसांचो मम नाथ ॥२॥

ऐसे समयमें जिसने मेरा हाथ पकडा भला मैं उसको कैसे छोडदूं यह विचार आधी रातको मेरे पास आई.

काम०- तुमने यहबात कैसे जानी.

माधो०- हे पिकबेनी जब वह मृगनैनी मेरे पास आई तबमैंने उस्से बूझातब वह अपना सब वृतांत सुनाय कहने लगी किमैं वही आपके चरणोंकी दासीहूं आपमेरे पतिहैं तुमको सुधि नहीं मैं पुष्पावती नगरीके निकट चंपक वनमें मालती की लताके नीचे शिलारूप बनी पडीथी आप सब सखाओं समेत मेरे पास आय सुंदर वेदीरचाय मुझको चनी बनाय गंधर्व विवाह किया जभी मेरा हाथ तुम्हारे हाथमें दियामैं उसी समय इंद्रशापसे मुक्ति हो अपसरा बन इंद्रलोकको चली गईथी हे प्राण वल्लभ मैं वही जयंती अप्सराहूं.

हे प्रिये जबतो मेरे मनका सब संदेह जाता रहा अरु निसंदेह हो कहने लगा कि हे चंद्रानन तेरे कारण मैंने अत्यंत कष्ट सहा मेराहीजी जानताहै नित्य उस काननमें जाकर तेरे रूप अरु लावण्यताकी छविकी सुधिकरकर पहरोंलों घुटनोंपर शिर धरधर कर रोताथा अरु बारबार

यह कहताथाहे शशिमुखी मुझे दुखी छोड तू कहां चली गई शीघ्र दर्शन देनहीं तोमैं इसी समय अपने शरीका त्याग न करताहूं.

जयंती बोलीकि हे ब्रह्मवंशउजागर अब इस सोच सागरसे निकलिये यह आनंदका समयहै आनंद कीजै क्यों कि यहरात वृथा व्यतीत होतीहै कुछ प्रेम प्रीतिकी बात चीत करो इससोच संकोचकोहरो परमेश्वरने चाहा तौ अबनित्य आधीरातको तुम्हारे चरणकमलका दर्शन किया करूंगी इस भांतिरीति प्रीतिसनी बातैं करविरहपीर हर चरणदाबने लगीउस कोकिलकंठीकी मधुरबाणी सुन मैंने परमानंद हो कंठसे लगाय बिरहकी तप बुझायमनकी आसा पूरणकी इतनेमें उषःकालके लक्षण दृष्टि आये मुक्तमालशीतल भई दीपशिखा मंद होगई चंद्रमा मलीन, तारे द्युतिहीन कुमुदिनी कुंभलायगई कमल खिलने लग चकवीचकवे मिलने लगे चिडियोंकी मधुर धुनि सुनि उससमय प्राणप्यारी बोली हे प्राणनाथ जो तुम आज्ञा दो तौमैं जाऊं कलको फिर उसी समय आ जाऊंगी यहबात सुन मैंने मेरे मनसे कहाकि जा परंतु भूलमतिजाना इसी भांति वह प्राणप्यारी नित्य प्रति मेरेपास आती अरु प्रातकाल होतेही चली जाती.

काम०-हे चित चोर फिर क्या हुवासो वर्णन कीजे.

माधो०-हे चंद्रकला एकदिनमैं अरुवह अप्सरा परस्पर वार्तालापकर रहेथे इस बातकी भनकतनकतनक मेरे पिता के कानमें पडगई तब पिताने समझाकि हमको इस मंदिरमें वास करना उचित नहीं यह विचार आपतौ ओर

ठौरजाबसे अरु उस भवनको ऐसासजाया मानो सुरपुर बना दिया फिरतौ मेरी सबशंका जाती रही.

दोहा

मनमानो मंदिर भयो नयो ऊपजो चैन
नृत्यराग आनंदमें वीतै सारीरैन ॥१॥

इसी रीति प्रीतिमें सबरात बितानी अरु प्रातकाल होतेही सुरपुरको चली जाती जब ऐसे आनंद भोगते भोगते दो तीन महीने होगये तब एक दिनमैंने उस प्रेम प्रकाशिनी भोग विलाशिनीसे अपना मनोर्थ प्रगट किया हे प्रिये मुझे इंद्रपुरीके दर्शनकी इच्छा है एकवार किसी प्रकार इंद्रलोकका दर्शन करादे.

यह सुन वह चंद्रकिरण बोली अहो प्राणप्यारे यहबात महा कठिनहे क्योंकि आजतक कोई मनुष्य सुरपुरको जीतेजीनगया अरु जो दुखमय सुखमय तुमको लेभीगई अरु इंद्रको ज्ञात हो गया तौ तुमको तौ जानसे मारडालैगा अरु मुझको इंद्रपुरीसे निकालैगा हे प्यारे यह हठ अच्छीनहीहै.

मैंने कहाकि हे कोकिल कंठी जो तूमुझे इंद्रलोकका दर्शन नकरावैगी तौ कलको मुझेजीता नपावैगी मुझे मरने का कुछ संशय नहीं परंतु सुरपुर अवश्य देखूंगा.

सोरठा

सुनि अप्सर यहबैन पतिवृताको वृतगह्यो
दियोलु कंजननैन मंत्रयंत्र मधुकरकियो

मंत्र विद्यासे मुझको मधुकर बनाय कंचुकीमें छिपाय इंद्रके अखाडेमेंलेगई मैंने एक एक मंदिर अपने नेत्रोंसे देखा जिसकी शोभाका वर्णन नहीं होसक्ता जोही जान

ता है.

फिर मुझको प्यारी नृत्य भवनमें लेगई वहांका रंग ढंग देखमैं दंग होगया अरु सुंदर सुंदर सुंदरियां जो अटाओं पर लटाखोले झांकरहीं थीं उनके रूपकी छटादेख चित्तमें आनंदकी घटा उमडती चली आतीथी अरु मनमोर झिंगार झिंगार नाच रहाथा अरु उनके हंसन दसनकी चमक चपलासी चमक चमक रह जातीथी. दाँतोंकी बत्तीसीव गपांतिसी दृष्टि आतीथी. भृकुटी इंद्र धनुषसी जनातीथी मांग गंगयमुनसी दरशातीथी उनके नूपुर अरु घुंघुरूओं की घोर गर्जनका शब्द सुनातीथी नेत्रोंके पलकोंकीनो कोंके बाणोंकी वर्षासी बरसातीथी मधुरमधुर बाणी कोकिलासी गीत गातीथी इंद्रका नाट्यभवन क्या मानो वर्षाका चातुर्मासथा उसीसमय प्राणप्यारी सोलह श्रृंगार बनाय बत्तीस आभूषणप हर मेहदी महावर रचाय तांबूल चबाय अतनकेसी कामिनिव न अप्सराओंमें ऐसी शोभादेतीथी जैसे तारोंके मध्य कलानिधि

प्यारीने सब सखियों समेत गानेका प्रारंभकिया लगी तानै उडाने दुगन तिगन पंचम मेखैंचकर लेजाती कभी संगीत विद्यादर्शाती कभी ध्रुपद तिल्लाना गाती उस समय कीतान सुनतानसैनकी छातीपर सांप लोटताथा अरु बैजू बावला बावलाहो हाथ मलताथा ऐसासमा बंध रहाथा कि इंद्रकी सभा चित्रसम चुपचाप बैठीथी.

दोहा

लख्यो न कबहूँ इंद्र अस कियो न कबहूं नारि
सोसब रसमैंने लख्यो पटपदकी उनिहारि ॥१॥

रातभर यह आनंद रहा जब पहर रात रही तबमें अरु

जयंती अपने घरको चला आया इसी भांति कलोल करते करते दोवर्ष व्यतीत होगये तवतो मेरे मनमें अत्यंत अभिमान वढा अरु इंद्रका कुछ भय नरहा इतनेमें भोर होनेके लक्षण दिखाई दिये.

कवित

गगनमें ललाई छई मंद भई चंदजोति कंजक
ली बिकसी देखप्यारे नेक ध्यानदे कुमुदिनि
कुंभला नलगी शर्द भई मुक्तमालको किलकी
नीकीधुनि प्यारे सुनिकानदे तमचुर पुकारे हैं
तक कहे पियापिया चकवी कहे चकवासों मो-
कोरति दानदे रबिहू अब उदय भयो चाहत हैं
लिग्राम ऐसे निरदई मोहिं अवतो घरजानदे १

सोरठा

धिनय करूं कर जोरि वारवार पांयन परों
प्राणनाथ हठ छोरि जानदेहु मोहिं इंद्रपुर

जो मैं आज नगई तो कलको सुरेश अपने मनमें संदेह करैगा कि रात्रिके समय यह कहां जाती है जो इंद्रके कानमें किसीने यहवात फूंकदी कि यह मृत्युलोकमें जाती है तो ऐसाहु दमचैगा प्राणवचाने भारी पडेंगे फिर मैं कहां अरु तुम कहां अवभी समझो थोडीसी वातका वतंगरा करना अच्छा नहीं वहकाम करो जिसमें मेरी तुम्हारी रीतिप्रीति वनी रहै और कोई न सुनै.

जव उस मनमोहनीने अनेक अनेक भांतिके दृष्टांत मुझे सुनाये अरु पहर भर दिन चढगया तवतो मैंने कहा जा.

वह सुंदरी प्रणामकर सुरपुरको चली गई मैं अपने गुरुकी चटशालामें पढनेको चला गया दिनतो पठनपाठनमें व्यतीत हुआ जब संध्यासमयहुई तबउस रूपनिधानका ध्यान आया वह प्रेमरंगराती अब आती होगी इसी सोच संकोचमें आधीरातहोगई.

चौपाई

निशारखसी उरबसीन आई। तबसुखसकल भयो दुखदाई तलफैतनज्यों जल बिनमकरी। क्षणमें सूख भयो तनलकरी ॥

एक एक पल कटना भारीहो गया.

जब वह चित्त चोर न आई तबतो नेत्रोंमें प्राण आनेलगा फिरतो मैंलगाउन्मनकीनांई बकने अरु इधर उधर तकने हे प्रिय तू मुझे अकेली छोड कहां चली गई वेग सुधिले नहीं तो अपना प्राण घात करताहूं हे सुंदरी मैंने ऐसा तेरा क्या अपराध किया जिसके बदले में तैंने मुझको ऐसा कठिन दुख दिया क्या तुझको इंद्रने रोकलिया हाय प्रिया हायप्रिया ऐसे पुकार पुकार डाढै मारमाररो रहा था.

मेरे रोनेका शब्द सुन शिव पार्वती भ्रमण करते करते कहींसे आगये मुझसे कहा हे पुत्र क्यों रोताहै मैंनेलाज छोडकर जोड शंभुसे सकल वृत्तांत आद्योपांतकह सुनाया तब शंकरने कहा वह अप्सरा भूमंडलमें जन्मलेगी अरु षोडसवर्षोपरांत तुझे मिलैगी जैसे हो सकै वैसे सोलह वर्ष व्यतीतकर यह कह अरु एक त्रिशूल मुझको दे त्रिशूलपाणि अंतर्द्धान हुए.

मैंने महादेवका वाक्य निश्चय जान मनको धीर्य दिया अरु वह दिन व्यतीत किया फिर सोचा जो मैं प्राणघात करताहूं तो संसार मुझको मूर्ख कहैगा कि विरहकी आग झेल नसका अरु जो मरगया तो उस चंद्रकिरण का दर्शन कैसे होगा जो तनमें प्राण है तो एक न एक दिन वह बाला अवश्य मिलेगी यह मनमें ठान उद्यानमें बैठा मैं एक दिन यह गीत गारहाथा.

राग धनाश्री

मिटावै कौन विरहकी पीर
इतउत फिरत गिरत धरणीपर व्याकुल होत शरीर १
निकसत शीतल स्वास रैन दिन मनको होत न धीर
दोउ नयनन सौं गंगयमुन सम बहत रहत नित नीर २
विरही जान काम अन्याई मारत तक तक तीर
जो जो धिपानि परत है मोपर मेरोही सहत शरीर ३
कासों कहौं किसे दिखराऊं अपना कलेजा चीर
कबलों मोहि परैगी सहनी ऐसी भारी भीर ४
तेरोही नाम जपत निशिबासर ज्यों पिंजरा में कीर
शालिग्राम शीघ्र दर्शन दो माफ करो तकसीर ५

मेरे गानेका शब्द सुन नारदमुनि भी भ्रमते भ्रमते कहींसे आगये मेरी दीनदशा देख एक मन मोहन नामबीणा मुझे मन बहलानेके लिये दे गये अरु यह वर दिया कि यही तेरा सब मनोरथ पूर्ण करैगा यह कह नारदमुनि तो कहीं को सिधारदिये अरु मैं विरह वियोगके समुद्र में डूबा पडा रहाता अरु कभी कुछ न कहता अरु कहता तो यह कहता हाय प्यारी हाय प्यारी कभी वनमें जाय

लता ओंसे वूझता.

चौपाई

हेकदंबजामनकचनारी, तुमकुहुंदेखीप्राण पियारी. हे पाकरपीपरवरछोंकर कहांगईचि तचोरमनोहर. हे अनारकचनाररसाला, गई इतैकोउचंचलवाला. हेजाती जूही मोतिया तुमकहुं जातलखीमोतिया. हे अशोकसवशो कनशावन, मनलैइतैगईकोउभावन. शाल तमालवेलसुखसागर, आई यहांको उनवना गर. हे शिंशपदाडिमतरुअरणी, गईकोउतिय चंपकवरणी. हेसेमलपलाश सुखरासी, इत ह्वैगईको उतियचपलासी. हेतुलसीहरिकी सुखदैनी, तुमकहुंलखीप्रियामृगनैनी. हे मृग गणहेसघनसरोवर, तुमहिवता वहुरवोजप्रि याकर. मौनकौनकारण तुमसाधी, कैतवजी भविरहदौदाधी॥

दोहा

अहोश्रीफलसदाफल सवफलकेदातार
गजगामिनिकामिनिकोऊ आईविपिनमंझार

तुमने कहीं हमारी प्यारी तो नहीं देखी वहदई मारे पहि- लेही अपने प्रीतमके विरह में मौनसाधे खडेथे जव वहभी न वोले तव उनपैजो भौंरा झुंडके झुंड गुंजार रहे थे मैंनेउन से कहा.

कवित्त

एरे भौंरश्यामरूपश्यामके संघाती तुमघूमतदिन

रात तुमल तानकी वितानमें मेरीयह बात प्रा
णप्यारीसे कहियेः आयहायहायकरै तेरो प्या
रो उद्यानमें। खान पान छुटो प्राण जान प्राण
प्यारीविन तेरे बचाये बचैं प्राणहर आनमें। प्राण
नको दान दियो चाहोतौ आओ वेग गुंज गुंज
कहियो प्राणप्यारीके कानमें १

जबउन निर्दई भौंरोंने मेरी बातका ध्यान नकिया तौ फि
र वनके पक्षियोंसे बूझने लगा इतने में एक ओरसे पिया
पिया शब्द सुनाई दिया मैंने जानाकि मेरी प्राणप्यारी मु
झको पुकार रही है मैं शीघ्र उस सघन वनकी लताओं
की ओर भागा पास जाकर देखा तौ एक पक्षी पिया पि
या पुकार रहा है मैं अभागा ठंढी सांस भरकर वहीं बैठगया
अरु पवनसे कहने लगा.

कवित्त

अहो पौन भौन रूप भौन भौन गौन तेरो कौन
नहीं जानै तेरे पूरण प्रतापको। हनुमतसे पूत
तेरे दूत रामलछमनके भूत प्रेत गंजन औ भं
जन महा पापको। पशु पक्षी वृक्ष लता सबको
प्रफुल्लित करो शालिग्राम कौन मेंट सकै तेरी
छापको। लादे मोहिं धूरि वेग प्यारीके चरणन
की हृदयसे लगाय हरौं तन मनकी तापको १

दोहा

मैं क कहूं तेलायदे प्रिय चरणकी धूरि
आंखिनकौ अंजनकरौं समझ सजीवनमूरि १

पवनसे यह संदेशा कह आगेको चलातौ क्या देखताहूं

श्रीगंगा भागीरथीकी धार धूम धामसे झकोले लेती च ली जाती है मैंने अपने मनमें समझा इस जलसे कु छ संदेशा प्यारीके लिये कहूं परमेश्वर चाहै तो सब काम पूर्ण हो जायगा क्योंकि यह अत्यंत वेगसे जा तीहै यहबात बिचार वारंवार गंगाकी धारसे कहने लगा

कवित्त

अहो नीरपीर हरणधीर धरणाविरहिनके
पूरणप्रतापी जान आनके शरणलई। पशु
पक्षी जीवजंतु वृक्षलता पुष्पादिक तुह्मारे
प्रतापसे रंगबदलतकई कई। भवनहू छुटा
यो बैरागी बनायदियो दुखपै दुख दिखावै है
नितभांति निर्दई दई। प्यारी हमारीसे कहियो
यह सारी बिथा प्यारे पैतेरे बिपति परत नित
नईनई १

हे मन मूरख तेरी मति ठिकाने नहीं यह नीरतो पूर्वगामी है यह तेरी प्यारीकी शुधि कैसे ला सक्ता है अरु जो इस को कहीं दैव योगसे मिल भी गईतौ लौटकर नहीं आस क्ता इसलिये इस्से कहना भी वृथाहै जलधरसे कहु जो घर घरका घूमनेवालाहै वह निस्संदेह तेरा संदेशा पहुं चा येगा.

कवित्त

अहोजलद प्यारीके देशमाहिं बर्षो जायक स
लमनीर मानो अग्निमें औटायोहै। प्यारी कहै
शीतल जलु आंगनमें बर्षत निंत आज कहा

गर्मनीर नीरदवरसायोहै। कहियोतेरेविरह की विरहानल जरायोहमैं ताही कील्पटसे चपलाकोंवनायोहै। शीतल कियोचाहै जोह मारो अरुपीको उर जलदीचलनाहींपियाप्या रेने बुलायोहै १

हे मेघ मेरे ऊपर कृपातो आपने करीहीहै परंतु इतनी वात और कहदेना.

कवित्त

खान पानकेसे ताहिंभावैहै प्राणप्यारी हमारी गतितो पैकैसे लखीजानहै। तेरे बियोगकेरोग में यहहाल भयो लाललाल नेत्र औरपीरोपस्यो गातहै कोई कहै पांडुरोग कोई कहै वातपित्त कोई कहै कफहै कोई कहै सन्निपातहै हेजल धर कृपाकर प्यारीसे कहियो जाय एकएकछि नतेरे विनकल्पसम विहातहै १

जव घूमते घूमते बहुतदिन होगये फिरमैं पुष्पावती न गरीमें आया जहां मेरी जन्मभूमिथी उस नगरमें गोविं- दचंद्र नाम नरेश महा प्रतापी पुण्यवान चौदह विद्यानि धान इंद्रकी समान राजकरै जिसके राज्यमें ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र सव अपने अपने धर्म्ममें तत्परथे.

काम०- जिस राजाको तुम ऐसा साहसी अरु पराक्रमी वत लातेहो उसने कुछ तुम्हारी सहाय नकरी.

माधो०- हे पंकज लोचनी मैं एक दिन भूला भटका मतवाले कीनांई करमें त्रिशूल कांधेपर वीणा कांखमें पुस्तक द- वाये वियोगीकावेष वनाये राजसभामें जानिकला रा-

जाके निकट जाय आशीर्वाद दिया. पृथ्वीराज आपका अखंड राजहो.

श्लोक

आयुर्द्रोणसुते श्रियं दशरथे शत्रुक्षयं राघवे
ऐश्वर्य्यं नहुषे गतिश्च भवने मानं च दर्य्योधने
शौर्य्यं शान्तनवे बलं हलधरे सत्यं च कुंतीसुते
विज्ञानं विदुरे भवंतु भवतः कीर्त्तिश्च नारायणे १

दोहा

उठ तत्काल नरेश पग बंदन मेरो कियो ॥
जनु गुरु पाय संदेश आदर मानि आदर दियो

अनेक अनेक आदर भावकर पांव धोय चरणामृत ले मुझे बैठनेको आसन दिया तब मैंने वीणा बजाना आरंभ किया और भांति भांतिकी रागरागिनी राजाको सुनाय सब सभाको चित्रपटीकी समान बना दिया राजा हाथ जोडकर बोला हे कृपासिंधु आप गंधर्व हो या नारद हो या कामदेव हो मेरा मन मोहनेकेलिये मनुज तन धर लियाहै.

मैंने उत्तर दिया कि मै शंकरदास पुरोहितका पुत्र हूं नाथ चनल मेरा नामहै यहवचन मेरे मुखसे सुन

दोहा

अति प्रसन्न राजा भयो बहुविधि आदर कीन
नित्य यहां पग धारिये विप्र महा प्रवीन १॥

राजाके प्रेमप्रीतिसने वचन सुनिमैं

सोरठा

कर मंजन उठि प्रात चंदन तिलक लगायकै
राजद्वार नित जात मन उदास प्यारी बिना

इसी भांति पुष्प तुलसीदल ले नित्य प्रति राज मंदिर में जा-
य देव पूजन कराय आसन बिछाय राजाके ढिग बैठा रह
ता जो कुछ कथा वार्ता राजा बुझता सो मैं कहता परंतु ध्या-
न प्राणप्यारीका था.

कभी वेद पुराण सुनाता कभी पिंगलके छंदोका आनंद दर
शाता कभी संगीत शास्त्रके गीत मीठे मीठे स्वरोसे गाता क
भी धर्मशास्त्रके वचनोंसे राजाका मन बहलाता कभी
न्याय वेदांतकी मरोडी गुप्तगुप्त बताता जो स्त्री पुरुष मुझे दे
खता मोहितहो कहता धन्यहै ब्रह्मा जिसने हमारे नेत्रोंके
सुख देनेको यह मनमोहनी मूर्ति राजसभामें भेजदी.

सोरठा

वाचैं वेद पुराण नव व्याकरण बखानहीं
जोतिष आगमज्ञान सामुद्रिक संगीत सब

सब नगरके मनुष्य ऐसे कहतेथे अरु जो स्त्री मेरे रूपको
देखती अरु मेरा वीणा सुनती उसी समय उसका वीर्य प-
तित हो जाता गृहका कार्य बिसार मतवाली बनजाती जो
जीमें आतासो गाती परंतु मुझको किसीसे कुछ प्रयोज
न नहींथा मेरे मनमें तो वही उरवसी वसीथी.

दोहा

ताके बिरह वियोगमें निशिदिन रहत उदास
हृदय नयन मुख वचनमें करत उरवसी वास।

एक दिन मैं प्रातकाल उठि गंगा भागीरथीके तीर जाय
स्नान ध्यानकर चंदनका तिलक लगाय वीणाका नाद
मधुर मधुर ध्वनिसे उच्चारण करने लगा वीणाका शब्द सु
नि अरु मेरा मनमोहन वेष देख सारी पनिहारी मतवारीहो

लगीं शिरकी गागरैं गिराय गिराय इधर उधर घूमनें

दोहा

तन घूंघटकी सुधि नहीं मटकीकी सुधि नाहिं
नाद मंत्र मोहीं सकल मत्त भई पलमाहिं ॥

कवित्त

बाजी अकुलाय घबराय गिरिघर नमाहिं बा
जीवन विरहन विरह अग्निमाहिं जरीहै। बा
जी मुरझायी बौराई अकुलाई फिरै माधोकि
नगयो जाके बीण कंध धरीहै। बाजी वे सुरति
परि शर्द शर्द स्वासलेत तन मनकी सुरति ना
हिं मानो परी मरीहै। बाजी बाजी कहन लगी
बाजी फिर बाजी आज माधोकी बीणा जुल्म
जादूकी भरीहै १

आगे जाकर देखूं तो.

कोउ पछिता नवाढीको उपरी धरणमाहिं को
उ करै हाय हाय तनको ना ज्ञानहै। कोउ मद मा
तीरंगराती फिरै लाज त्याज काहूको चित मैंब
सी बीणाकी तानहै कोउ शुधि बुधि बिसार बारबा
र कहतफिरै आजतो हमारी फसी आफत्तमें
जानहै। कोउ कहै औना कहा माधोकी बीणा
सुन जादू औ टौना यंत्र मंत्रनकी खानहै २

कोई कोई स्त्री परस्पर यह बात कह रही थीं.

कैसी करैं कहां जाय सूझत न कछु आली माधो
की ममताको फंद गरे पर्यो है। बनबन फिरावै
है गावै जब मीठी तान मोहनी सी डारिकै हमा

रोमनहर्‌योहै। ऐनमैनमैनरूपचैनलैनदेत
नाहिंमाधोकोवीणासखीजादूको भर्‌योहै।
एरीवीरधीरकैसे चित्तको हमारे होयरोयरोय
आंखिनको लाललालकर्‌योहै॥

एक ओरसे किसी सुंदरीके मुखसे यह शब्द सुनाई दिया-

दोहा

वीनानेछीनासकल खानपानरसभोग
आलीबालीवैशमें लग्योविरहकोरोग

जबउन पनिहारियोंकी यहगति और नारियोंनेदेखीवह भी लगी कुलाहलमचाने

दोहा

विभ्रमगतिभई नारिसब गयोमदनशरमारि
जरेजराये अंगको विरहानलरह्योजारि १॥

फिरलगीं विरह भरे पद गाने.

राग बसंत

मैन तुमदियोहमें दुखभारी
शर्दचांदनीखिली चंदकीमोकोलगतदवारी
तारागणमोहिंजानपरतहैमानोखिलीअंगारी
सुनिसुनिशोरमोरकोकिलकोपीरउठतमनभारी
हे मन्मथहेकामपंचशरतोसोंकहौंपुकारी
मैं अनाथकोई नाथनमेरोचितनितरहतदुखारी
वर्षाकाल मेघनभछाये लागीवहनबयारी
परतबूंदजबमेरेतनपैमानोलगतकटारी
दयाकीजियेसोपैरतिपतिहैयहविनयहमारी

जब मैंने वीणाके शब्दका निर्वारण किया तबसब भामिनि

अपने अपने भवनमें जाय सुंदर सुंदर भोजन वनाने ल गीं उस समयमैंने वीणा फिर फूंकी वीणाका शब्द सुनि उनकी सुधिबुधि जाती रही.

एक स्त्री अपने पतिको भोजन परोसतीथी सो भोजन का थार छोड़ पृथ्वीमें भोजन परोस दिया यह आश्चर्य देख उसका पति बूझने लगा हे प्रिये सत्यसत्य कहो यह तुम्हारी क्यागति हुई अरु क्यों ऐसी व्याकुल हो अ रु किसलिये भोजन भूमिमें डार दिया. तुम्हारी सुधि बुधि कहा विसराय गई या किसी भूत प्रेत पिसाचने यह नाच नचायाहै.

दोहा

सांच वचन कहु कामिनी मैं पूंछत हौं तोहिं
तेरो चित कहु कित गयो अन्न परोसत मोहि

जब पतिने अत्यंत हठकी तब तो उस चंद्रसुखीने अ ति दुःखी हो सब वृत्तांत कह सुनाया.

दोहा

खान पान सन्मान सुख देव सेवत जिदीन
नाह नाहिं जानो सुद्विज कहा ठगौरी कीन

सोरठा

यह वृतांत सुन कान अग्निवाणसे तन लगे
सोसठ महा अजान रिसरंजित अंखिया भरीं

इस बातको सुनकर शरीरमें आगसी लग गई अरु लाल लाल नेत्र होगये सब प्रजागणको बुलाय हाय हाय कर बोला देखो भाइयो इस दुष्ट ब्राह्मणने कैसा द्वंद मचायरक्खाहै वीणा बजाय बजाय सब स्त्रियोंके

मन मोह लेताहै वीणाका शब्द सुनतेही वीर्य्य पतित होजा ताहै अरु चित्त ठिकाने नहीं रहता.

उसके पतिकी यहबात सुनसब नगरके मुखिया मनुष्य मिल राजाके सन्मुख जाय निवेदन किया.

हे महाराज शंकरदास पुरोहितके पुत्र माधवनल ने बड़ा उपद्रव मचारक्खाहै कुछ निवेदन करनेके योग्य नहीं परंतु कहे बिन भी नहीं रह सक्ता क्योंकि नगरके सब स्त्री पुरुष महादुखी हो रहेहैं जब नगरकी स्त्री गंगा किनारे स्नान करने जातीहैं तब माधवनल वीणामें कुछ ऐसी मोहनी डालताहै सब अवलातन मनकी सुधि भुलाय उसके पीछे बौरीसी दौरी फिरैहैं अरु वीर्य पतित हो जाता है.

हे पृथ्वीनाथ जो माधवनल यहां रहैगा तो इसनगरमें हम किसी भांति नरहैंगे

श्लोक

यस्मिन् देशेन सन्मानोन वृत्तिर्नचबांधवः
नचविद्यागमः कश्चित्तंदेशंपरिवर्जयेत् १॥

प्रजाके लोगोंकी यहबात सुनराजाको अत्यंत चिंताहुई प्रजाबिन मेरा कार्य कैसे सरैगा यह विचार चारप्रतिहार भेजकर मुझको बुलालिया मैं अपने मनमें अतिउदास हो राजाके पास गया देखतेही राजाने मुझसे क्रोध कर कहा हे द्विजवर वह कौनसी विद्याहै जिस्से पराई स्त्रियोंको वश करताहै.

मैंने कहा हे नरेंद्र यहजो मेरी अद्भुत वीणाहै जिस समय इसको बजाताहूं इसका शब्द सुन सब युवती व्या-

कुल हो जातीहैं परंतु मुझे किसीसे कुछ प्रयोजन नहींमैं तौ पद्मपत्रके समान सबसे अलगहूं इंद्राणीभी मेरे सन्मुख आवै तौ माताकी सदृशहै मेरे मनमें तौ एक उरवसी वसीहै उसीके वियोगमें यह गतिहै.

राजा अपने मनमें सोच विचार करने लगा- अब क्याउपाय करना चाहिये जो इस लड्केकी ओर देखताहूं तौ प्रजा हाथसे जातीहै अरु जो प्रजाकी सुनताहूं तौ लडका हाथसे चला.

धर्मसनेह उभयमनिघेरी, भईगति सांपछछूंदरकेरी, निगलै कुष्ट होत तनमाहीं, छांडैरहत धर्म थिर नाहीं.

निदान राजाने अत्यंत सोचविचार कर बीसचेरी बुलाईं उनको सुंदर सुंदर वस्त्राभूषण पहराय एक एक कमलपत्र सबके नीचे बिछाय मंडलाकार बैठायदीं अरु माधवनलको आज्ञा दीकि अपनी वीणा वजा औ वीणाका शब्द सुन तेही सबका मदन छूटा लगीं रदनसे ओष्ठ काटने उनकी यहदशा देख.

दोहा

तबराजा आयसुदियो चेरिन देहुउठाय
सबहिनके पीछे रह्योकमल पत्रलपटाय।
माधो मुख निरखन लगीं चेरीसकल निशंक
मन सकुचत अंखियांमिलीं धरत मदनतनवंक.

यह आश्चर्य देख राजा अपने मनमें सोचविचार करने लगाकि प्रजाकी बात सब सत्यहै.

हे ब्राह्मणके पुत्र यह तेरा वीणा बडो विघ्नकारीहै ह-

मारी नगरीमें तुम्हारी रहायसनही यहांसे चलेजाओ
औरकहीं ठिकाना देखो ऐसे मनमोहन वेषवालेको
हम अपने देशमेंनहीं रखसक्के मैंने तुमको विद्यावान
जान तुम्हारा आदर सन्मान कियाथा परंतु तुमनिरेअ
वगुणकी खान निकले.

दोहा

निकरजाहममनगरते अबसोचतहोकाहि
तेरे गुण तोको दहैं हमरो दोषन आहि ॥

राजाके कठोर वचन सुन मैं उसके मुखकी ओरदेख
नेत्रोमें जल भर लाया हे परमेश्वर आज मैं इसयोग्य
हो गया भामिनितो छुटीहीथी भवनभी छुटा परंतु कु
छ सन्देह नहीं भगवतेच्छा जो कर्म गति.

श्लोक

यस्माच्चयेनचयथाचयदाचयच्च
यावच्चयत्रचशुभाशुभमात्मकर्म
तस्माच्चतेनचतथाचतदाचतच्च
तावच्चतत्रचविधात्रवशादुपैति १
रोगशोकपरीतापबन्धनव्यसनानिच
आत्मापराधवृक्षस्फलान्येतानिदेहिनाम् २
स्वकर्मसंतानविचेष्टितानिकालान्तरा
वर्तिशुभाशुभानि इहैवदृष्टानिमयैवता
निजन्मान्तराणीवदशान्तराणि ३

ऐसे सोच समझ मातापितासे विनकहे वीणा त्रिशूल
करगहे पुष्पावतीसे चलदिया चलते चलते दशवें दि
न कामावती नगरीमें पहुंचा.

काम०- हे प्राणप्यारे जबही तुह्मारे पांवमें बडे बडे छाले पड रहेहैं तुमको आये कितने दिन हुए.

माधो०- हे प्राणप्यारी आजही तुम्हारी कामावती नगरीमें आयाहूं यहांकी शोभा देख मैंने चाहाकि प्रथम राज भवनको चलकर देखिये यहांका राजा कैसाहै क्योंकि मूर्ख राजाके राज्यमें रहना उचित नहीं यह विचार राज द्वारपरजो जाकर खडा हुवा तो वहां नाटक होरहाहै नि दान जो कुछ हुवासो सब वृत्तांत तुम जानतीही हो परंतु यह निश्चै नहीं होनाकि कबउस मृगनैनी पिकबैनीकाद र्शन होगा हे विधु वदनी अबयह कठिन कठोर कष्ट मुझ से सहा नहीं जाता हे परमेश्वर यातोउस्से मिला नहीं मृ त्युदे एक वर्ष शिवकी कहनमें और रहाहै अंतको यह प्राणप्यारीकी भेंटहै.

चौपदी

क्षणयक चैन परत मोहिं नाहीं, ताकोनेह बसत जियमाहीं. तातेकहत नेह नहिंनीका, रंचकसु खपुनि गाहक जीका. पर यक भ्रमउपजत मोहिं भारी, पूंछों तोहिं सांच कहु प्यारी.

दोहा

ताहीके गुणरूपसब दृगदर्शतहैं मोहिं
विधनाके संयोगसे तियदेखतहों तोहिं १

(प्रीतम प्यारेके प्रेमरससने मधुरवचन सुन कामकंदला ऐसी मग्नहुई फूली अंगन समाई और दौरकर चरणोंमें जाय परी)

काम०- सो० हे पूरणप्रताप मैंहीहूं वह अप्सरा

दियाइंद्रनेशाप मृत्युलोक जन्मत भई
मातजातलीरोक अतिहठकीनीप्रीतिवस
भयोइंद्रमनशोक दियोशापगणिकाभई

माधो०-माधवनल प्यारीकी प्रेम प्रीति भरी मीठी वाणी सुन ऐसा मग्नहुवा तनमनकी शुधि भूलगया फिरकुछ काल व्यतीत होने पर सँभलकर बोला हे प्यारी तुमने मेरे पीछे कैसी कैसी भारी विपति सही सोसव आद्योपान्त वृत्तान्त सुनाइये जिस्सेमेरे मनको धीर्य वधै अरु संदेह दूर हो.

काम०- हे प्रीतम जब तुमसे विछोहाकर इंद्रपुरीमें गई जो जो दुःख मैंने सहा मेरा मनही जानताहै अधिक क्याकहूं तनतो सुरपुरमेंथा परंतु मन आपहीके चरणोंमें लग रहाथा.

वहां इंद्रसे किसीने मेरी निंदाकी कि जयंती नित्यप्रति रात्रिके समय मृत्युलोकमें माधवनल ब्राह्मणके पास जातीहै अरु यहां नाटकमें कभी नहीं आती सबकी पूजा छोड दिनरात माधव माधवरटतीहै सुरपुरका सब रंग भंग करदिया अभी वह मृत्यु लोकसे आईहै अरु अपने भवनको अभी गईहै उसको बुलाकर देखलो मेराझूंठ सच्च सब निश्चैहो जायगा.

दोहा

अति अनीति अप्सर करी बुद्धिवान तुमनाथ
सकल निवेदनहमकियो दंडदेन तवहाथ ॥

यह बात सुन सुनासीरको वडा क्रोधहुवा प्रतिहारीको आज्ञादी कि उसको अभी पकडकर लाओ प्रतिहारीने मुझे इंद्रके सन्मुखला उपस्थित किया.

चौपाई

श्रमतनैनपलकैझपजाहीं,शिथलअंगशो
धीकछुनाहीं पगनपरत मगगतितजिदीनी
विथुररहीं अलकैंरस भीनी. सिगरेभूषण
उलटे अंगा, वसनसुवास वासपियसंगा.
दृगनिदीपदुतिझीन विराजै कहुंकहुंपान
पीकछविछाजै. अधरदंतदंपति असला
ई,अतिअद्भुतउपमानिनपाई.

दोहा

अधरसुधारस पानकिय तृषामिटाईआप
रह्योजुकछुइकमानहू मसिकलगाई छाप

सोरठा

लखीनयनयहरीति रोषसगुरयुतविद्युपति
मनमें पूरणभीति राजदंडखंडनवनै ॥

हे उरवसी तुझे अपनी हंसीका कुछ भी सोचनहीं तूनि
त्यप्रति मृत्यु लोकमें माधवनलके पास जातीहै अरुउ
सीका ध्यान तेरे चित्तमें वसारहताहै अव यह हमारी
आज्ञाहै जो तुझको माधोनल प्याराहै तो अपना सीस
उसके अर्पणकर अरु जो तुझको अपना तनप्याराहै
तो माधोनलका शिरकाटकर मुझेलादे यह मेरी सत्यप्र
तिज्ञाहै जवतक दोनोंमेंसे एकका विनाशनहोगा तव
लों मेरा क्रोध शांति नहोगा.

जव इंद्रने ऐसे दुर्वचन कहेतौ मैंने उत्तर दियाकि प्री
तमके ऊपर अपना शीशनौछावर करत्ते मुझे किसी भां
ति आग्रह नहीं उसके आगे देवता क्या वस्तुहै जिसके

एक एक रोमपर कोटिकोटि देवता वारिकर छोडदूं काम देव माधवनलका तन देख लज्जाका मारा अतनु बनगया जिस इंद्रासनको आपने अधिक ऊंचा समझ रक्खाहै उसे माधवनल तृणके समान जानताहै.

चौपदी

तीन लोक माधो सम नाहीं। तुम कत गर्व करो मन माहीं। यह मम मतन माधोके काजा। कियो चहै सो कर सुरराजा।

दोहा

अप्सर सब अरु सुर सकल तुम समेत नरनाह
सर्व भोग अमरावती माधव बिन जरि जाह ॥

सोरठा

क्रुद्ध भयो असुरारि कठिन कुलिशसे वचन सुन, गह्यो वज्र शक्रारि नयो जयंती शीश तह. जो मम सांची प्रीति प्रीतम न छुटै अनीति ते, मोहिं सत्य प्रतीति जन्म जन्म माधो मिलै

सुरेशने जानाकि जयंतीकी माधवनलसे सच्ची प्रीति है जिसने अपने प्राणका रंचक भी मोह न किया ऐसा विचार विचार इंद्रने कहा हे जयंती जो तुझे अपना प्राणप्यारा प्याराहै तो तू अपने प्राण प्राणप्यारेकी नौछावरकर जो तुझे मनुष्यसे अधिक प्रीतिहै तो जा मृत्युलोकमें वेश्या बन जो पुरुष तेरे मन भावै उस्से भोगकर अरु जिस माधोको तैंने अपना प्रीत समझाहै वह वनउपवन नगर नगर भटकता फिरैगा अरु उसके विरहमें तू ऐसी बेचैन रहैगी सुखसे माधो माधो शब्द क्षण भरको न छूटेगा

यह शापदे वज्रायुधने मेरे वज्र मारा उसी समय देह छो
ड कामावती नगरीमें आनकामकौमुदीके उदरसे औतार
लिया जब मेरी बारह वर्षकी अवस्था हुई

दोहा

तेरह वर्ष प्रवेश जब मन्मथ बढ्यो शरीर
नरनारी निरखत नयन रंचक धरत न धीर

सोरठा

निशिदिन पियको ध्यान खानपान भावत नहीं
कब मिलिहै पिय आन गुणिपन सेबूझत रहत

वडे वडे राजा महाराजा गुणी धनाढ्य पंडित प्रवीन मेरे
घर आते परंतु मेरे मन न भाते माता अरु सहेली वहु तेरी
पहेली पढातीं अरु मुझे समझातीं परंतु मेरे चित्तमें ए
क न आती क्योंकि मेरा मन तो प्रीतमके फंदेमें फस
रहा था इन वातोंको कौन सुनै अरु जो मैं वहुत हवो
डे हवाडेसे आंख खोलती भी तौ यह उत्तर देती मेरा प
ति तौ माधवनल है मैं और पुरुषको क्या जानू

आज राजा कामसेनने मेरा नाटक देखनेके लिये मुझ
को बुलाया उस समय मुझे इंद्रका वचन स्मरण हुवा
मैंने जाना कि अव प्यारेके मिलनेका समय आ पहुंचा
क्योंकि मुझसे इंद्रने कहा था तेरा प्रीतम तुझको का
मसैनकी सभामें मिलैगा इस आसपर प्राण तनमें वा
स कर रहे हैं हे द्विजराज इस प्रकार मेरा वृत्तांत है सो
सम्पूर्ण आपको सुना दिया अव जो मेरा अपराध
क्षमा हो तौ कुछ निवेदन करूं.

माधो०- हे मनोरमा अपराध कैसा यह कहो कृपा करती हूं

मेरे ऐसे भाग्य कहां हैं जो तुम मुझसे बात करो आपकी मधुर वाणी सुनेको तो इस चितचकोरको परमोत्साह है कि कव यह चंद्र वदनी अपने चंद्रवदनसे कुछ वचन उच्चारण करै क्योंकि तुम्हारी वात वात में फूलसे झडतेहैं उन्हीं पुष्पोंसे अपने हृदयको शीतल करना चाहताहूं जो तुम्हारी इच्छा होसो वर्णन कीजे

काम०- तुह्मारे वचनामृत तो अचेतनोको जीवन मूल हैं भलामैं इस योग्य कबहूं जैसी तुम निज मुखार्विंदसे वर्णन करते हो कोई वात तुम्हारे सन्मुख कहते भी सकुचलगतीहै तथापि जैसे पूर्ण कलानिधिको देख पयोनिधि बढताहै तैसेही तुम्हारे दर्शनसे चित्त उमडताहै इसकारण कहे विन रहा नहीं जाता गुप्त रखनेसे चित्त व्याकुल होताहै इसकारण विनय करतीहूं कि मुझे तुम्हारे सारे लक्षण अपने प्यारेके सदृश दृष्टि आतेहैं अव तुम किस लिये अपना भेद छिपातेहो मैंने सव तरह आपकी परीक्षा करली कि आप माधवनलहैं अव कृपाकरके मेरे स्थानको प्रस्थानकर पवित्र कीजे.

दोहा

सुनिसुंदरिइतिहाससव ताहिअप्सराजानि
भरीअंकसवशंक तजिउर आनँदकीखानि

(अत्यंत मग्नहो माधवनलकामकंदलाके संग जाता है अरु यवनिका धीरे धीरे पतित होतीहै.)

इतिश्री माधवनल कामकंदला नाटक शालिग्रामवैश्य कृत प्रथमोंऽक समाप्तम्

दूसरा अंक

पहिला गर्भांक

स्थान कामकंदलाका मंदिर

(कामकंदला शृंगार करतीहै सखीसेवामेंखडीहैं)



काम०- कहो सखी आज मेरा शृंगार कैसा है.

मनो०- प्यारी आज तुम्हारी अनोखी ज्योति अरु वांकीछ विका कौन वर्णन करसकै.

दोहा

अंग अंग भूषण सजे पहर कुसुम्भी चीर।
तेरी सुंदर छबिनिरखि छबिमन धरत नधीर
भूषण भार संभारही क्योंयह तन सुकुमार

सूधेपाँयनधरिपरत महिशोभाकेभार २
कहाकुसुमकहाकोमुदी कितकआरसीजोत
तेरीउजराई लखत आंखऊजरीहोत १।३
अंगअंगप्रतिबिंबपरि दर्पणसे सब गात
दुहरे तिहरे चौहरे भूषणजाने जात २।४
केशरक्योंसरकरिसके चंपककितकअनूप
गातरूपलखिजातदुरि जातरूपकोरूप ५॥

काम०-हे सखी प्रेमकथाकी रीति तो मैं कुछ नहीं जानती पुरुष संग सेज सुख अबतक नहीं देखा वह माधोसुजान कोककीरीतिसे मदनकी कला अरु उसके स्थान सबके जान्नेमें परम प्रवीणहै पढीतो मैंभी हूं परंतुगुणी नहीं इस कारण जो कुछ विशेष भावहो सो और भी कहो.

मनो०-भला सखी वह कोनसीकोक कलाहै जोतुमनहीं जानती जहां मन्मथका वासहै तहांचुम्बन कियेसे नहींरहता मैं क्या कहूंगी तू तो रतिसे इस समय कुछ न्यूननहीं जोमैं तुझे सिखाऊं

काम०-सखी इसबातमें कुछ बडाई छुटाई नहींहै तोभी तू मुझसे चतुरहै.

मनो०-(कुछ गुप्त गुप्त बातें बताईं अरु कहा) अब तू प्रीतम प्यारेके पास चल.

काम०-भला प्यारी वहमेरा मनहरन चितचोर कहांहै

मनो०-सखी चलिये इस आनंद भवनमें सेजबिछरही है दीप प्रज्वलित होरहेहैं सब भवन जगमग कर रहाहै अरुण पीतश्याम श्वेत पुष्पोंके हार चंगेरामें धरे महक

रहेहैं गेंदुये तकिये लगरहेहैं इलायची पान जावित्री केशर कर्पूर चोया चंदन कस्तूरी अरगजा सुंदर सुंदर सुवर्णके पात्रोंमें भरे धरेहैं जैसी तुम्हारे प्यारेके मन को रुचे वैसी सेज चांदनीचवेलीके फूलोंसे सजाई जाय.

वह देखो तुम्हारे प्राणवल्लभसेजकेउपर

दोहा

रत्नजटितकुंडलदिपे मृगमदतिलकलिलार
करवीणातनमनहरण उरमोतिनकेहार १

देखो कैसी कामदेव कीसी सूरतबनाये बैठेहैं चलो अपना मनोर्थ सुफल करो (कामकंदला जातीहै अरु सेजपर बैठतीहै)

मदन०-देखो सखी इस समय हमारी प्राणप्यारीको धीर्य नहीं रहा शरीर कांपताहै लज्जाकी मारीनीचीगर्दन किये अपने प्यारेके ढिग कैसी बैठीहै अरु ऐसे प्रेम प्रीतिसे मिली

दोहा

चक्रवाकचकई मिली मिले चकोरहिचंद
रोमरोम सुखसंचरो मिट्यो विरह दुखदंद १

मनो०-अरी इनकी चतुराईके वचन तो सुनो यह दोनोंयो वनमें भरपूर हैं अबलज्जा भी इनसे छूटी जातीहै इस्से चलोकहीं एकांत बैठकर रैन व्यतीत करें (मदन मोहनी अरुमनोजमंजरी जातीहैं अरु यह कहती जातीहैं).

म०म०-हे महाराज परंतु यह विनय हम आपसे और करतीहैं देखो महाराज हमारी प्यारी कामकंदला अभी अत्यंत

बाली भोली है कामकेल कुछ नहीं जानती प्रथमही की रीति प्रीतिमें आपकी प्रतीतकर अपना तनमन आप की भेट करदिया परंतु आप पंडित अरु चतुर हैं आप से कोई बात कहनेके योग्य नहीं हमारी आपसे बारं बार यही प्रार्थना है परमेश्वर आपकी जोडीको सर्व दा आनंद रक्खै (ऐसे कह कामकंदलाका हाथ पक ड शय्यापर बैठाय दिया) आज्ञा होयतौ हम अबजा य तुमको अपने मनगुनकी बातें करनेको देर होती होगी एकबात हम भूल गई गंधर्व विवाह करना तुम को अवश्य उचितहै सो तुम करलेना औरतो कुछ इस समय बनन पडैगा परंतु मुंदरीकी अदल बदल करलीजो.

काम०-(हँसकर) लजायके नीची नारिकर बैठगई परंतु चित्तमें अत्यंत चाव (दोनोंगई) माधवनल अरु का मकंदला प्रयंक पर कलोलैंकर रहेहैं मानो मार्तंड अ रु मयंक एक प्रयंकपर निशंक बैठेहैं कभी वह उस की अंक भरताहै कभी वह इसकी अंक भरतीहै ऐसे सबरात प्रेमप्रीतिकी बातचीतमें व्यतीत हुई.)

(प्रभात होताहै अरु मदन मोहनी और मनोज मं जरी आती हैं अरु कामकंदला सेज छोडकर पलँ गकी एक पटीसे लग अलगजा बैठती है.)

म०म०- वधाई वधाई आजकीरात धन्य है जैसा तुम्हारा मनोर्थ पूर्ण हुवा ईश्वर ऐसा सब किसीका करै.

का०म०-आज क्या पाया है जो हँसती आती हो.

म०म०-आज हमने ऐसा कुछ पाया जो जन्म भर नहीं पा

याथा प्यारीको तौपतिमिला हमारी विपतिटली सब की पतिरही इस्से और अधिक सम्पति कौनसी है.

काम०-हे मदन मोहनी तेरी बात बातमें ठगोली है

मनो०-अरी मदन मोहनी देखा तमाशा कामकंदलासेजछोड कैसी अलग जावैठीहै मानो कुछ जानतीही नहीं

मद०-मुझको येही सन्देह है कि आज कामकंदलाकोहोक्या गया शरीर विव्हलदृष्टि आताहै नवह तेजहै नवहरंग है नेत्रोंमें नींद भररहीहै पलकें झपी जातीहैं जंभाई चली आतीहैं अंगडाईलेरहीहै मुखसे पूरीबात नहीं निकलती.

मनोज०-सखी यह बात तो तेरी सब सत्यहै अंगभी शिथिल हो रहाहै कंचुकीभीदरकीसी दृष्टि आतीहै करकी चुरियांभी करकी दिखाई देतीहैं मांग विथुरिरहीहै लटें मस्तकपर विखर रहीहैं कपोलोंपर अरु अधरों पर दाँतोंके अरु कुचोंपर नखोंके चिन्हभी चमकरहे हैं मुखभी शशिके समान सेतहो रहाहै.

मद०-अरीयह तो बता आज चंद्राननकी शोभाक्योंमली नहो रहीहै.

मनो०-आली तू तो सदा भोली भालीहीरही अरीमाधवने कामकंदलाके चंद्राननको वेध अधरामृत जो पियाहै इसकारण पियाप्यारीके मुखकी कांति मलीन होगई है जब भंवरने कमलमें प्रवेश कियातो केशर झार स वरस लिया

मद०-सच्चहै सखी इसीसे पियाप्यारीके मुखकारंग पीला पडगयाहै.

काम०- आज क्या सैनावैनी कररहीहो ऐसी हँसी मुझे अच्छी नहीं लगती.

मनो०- प्यारी तेरे मुखचंदके सन्मुख चंद भी मंद दिखाई देताहै.

मद०- अरी विधातासे एहीवर मांगकि प्यारीका सदासोभाग्य वना रहे अरु ऐसीही आनंदकी रात रहै.

काम०-(मुसुकराकर चुपहोरही).

मनो०- चलो वहुत लाज हो चुकी अव उठो मुख धो ओ पान खाओ चंदन कुम्कुम अंगसे लगाओ या प्यारेके संगसे अभी पेट नहीं भरा.

काम०- सखी तू सवका स्वभाव अपनेसा जानतीहै.

मद०- प्यारेके पलंगकी पटीसे लगी वैठीहो हृदय ठंढा है जो चाहैसो कहो.

काम०- मैंने कोई वात अनुचित तो नहीं कही मेराहृदयठंढा भी तुम्हारीही कृपासेहै जो तुमकहो सो करूं.

मनोज०- वरसोंसे सुमरते सुमरते आज यह आनंदका दिन देखाहै ऐसा उत्तम दिन कवपाओगी गाती वजाती सव सखियों समेत सरोवर स्नान करने चलो अरु देवकी पूजा करो जिसकी कृपासे आपका मनोर्थ पूर्ण हुवाहै.

काम०- चलूं तो सही परंतु.

मदन०-(जाना जाना तुम यह कहोगी कि प्राणनाथ अकेले कैसे रहैंगे सो तुम्हारे प्राण प्यारेसे चार घड़ीके लिये आज्ञा लिये लेतीहैं.

हे महाराज आज्ञा होतो सरोवर स्नान कर आवैं

माधो०- जाओ प्यारी स्नानकरना तो अवश्य उचितहै.

(सब सखीमिल सरोवर को जातीहैं
अरु यवनिकागिरतीहै)

इतिश्री माधवनल कामकंदला नाटक प्रथमो
गर्भांक समाप्तम्

दूसरा गर्भांक

स्थान सरोवर

सब सखी सरोवर के किनारे खडी हैं



दोहा

कामकंदला विधुवदन सखिता रागणसंग
कमल देखसंपुटगह्यो चकवीमन भयो भंग १

मदन०-हे विधुवदनी देख कैसा निर्मल जलझकोल रहाहै
वडे कलोल का स्थानहै मुनीश्वरलोगतपस्या कररह

हेहैं अपने अपने रहनेको कैसे कैसे खोल खोद रक्खे हैं इनके मीठे मीठे बोल मनमोल लियेलेतेहै यह ताल ईश्वरने ऐसा गोल बनाया है इसमें चोलतकनीर है किनार दृष्टि नहीं आती ऐसे गंभीर सरोवरमें टटोल टटोल पग धरना.

काम०- सखी इसमें अनेक अनेक रंगके कमल जो खिल रहेहैं इनपर भंवरोंके झुंडके झुंड जो गुंजार रहे हैं यह सारंगी कैसा शब्द मेरे मनको छीनेलेहै.

मनोज०- अच्छा देर मति करो शीघ्र वस्त्र उतारो धोती पहरो तेल सुगंध मलो

काम०- वहुत अच्छाहि तू

मदन०- तेल फुलेल तो मलचुकीं चलो अब झटपट स्नान करलो.

काम०- आली यहां जल गहरा तो नहींहै वहुत नीरसे मेरा जी कांपता है तू आगे चल..

मद०- किनारे पर पानी वहुत गहरा नहींहै डरो मति मैं खडीहूं.

काम०- मेरा हाथ थाभेरहु छोडिये मति मैं डुवकी मारती हूं (डुवकी मार हरिहर हरिहर कहने लगी)

मनोज०- वहुत देर हो गई अब जलसे वाहर निकल आओ एक तो तुम्हारी सुकुमार अवस्था दूसरे कोमल तन मुझे यह संदेह है कहीं शर्दी न हो जाय फिर और पापड वेलने पड़ें.

काम०- अरी वहन मुझे शर्दी कहां मेरा तन तो वैसे ही विरहानलसे तप्त होरहाहै.

मदन०- तू रातभर प्यारेके पास रही तो भी तेरे तनकी तपन वुझी.

काम०-(हँसिकर) वैसे तो तू बडी भोलीसी दिखाई देहै परंतु तेरी ठठोली न गई मेरा जलसे निकलनेको जी नहीं चाहता यह मनोहर मनोहर कमल देख मेरा मन मकरंद वन यहीं रमा जाताहै.

मदन०-सखी तेरे मनकी विलक्षण रीतिहै जो सबसे प्रीति करलेतीहो.

काम०-अच्छा अब मेरे वस्त्र लाओ मैं जलसे बाहर निकलतीहूं.

मनोज०-देखो सखी इस समय कामकंदलाका तन केसा चंपेके पुष्पकी सदृश चमक रहाहै कहीं कहीं जलकी बूंदें जो शरीरपर रहगई हैं मानो चंपेकी कलियोंपर वोसके कण दमकरहेहैं सजल श्याम अलकें जो मुखपर उलटकर डालीहैं उनमें सेजो जलकी बुंद टपकतीहैं मानो भुजंग मुखसे मोती उगलतेहैं.

सोरठा

चिहुर अयते तोय चदि आवत तिय शीशते
मनो रेशम गुन पोय मुक्ताफल द्वारत मदन १

ओर देखो काली काली अलकें केसी कपोलोंपर पडीहैं जैसे चंद्रमाको अमृतके लोभसे नागनी लिपटी रहतीहैं देखो केसी सरल कुटिल छवि बनाईहै यह रसिक जननोंके फांसनेको फांसीहै आली इस समय वह छवि वर्त रहीहै.

दोहा

अबला ठाढी तीरपर नीर चुवत वरबीर
मनो अँसुवन रोवत वसन तनबिछुरनकी पीर

मदन०- हे कामकंदला तुझे कुछ भी सोच नहीं वहां तेरा मीत म अकेला पडा क्या कहता होगा उसकी भूख प्यासकी रंचक भी चिंता नहीं.

काम०- मेरा मन अवधीर नहीं धरता शीघ्र चलो वह मनमोहन प्यारा कभी अपने मनमें दुःखित न हो.

मद०- चलोरी चलो शीघ्र चलो हमारी प्राणप्यारी उतावली कर रही हैं जिसमें उनके अरु उनके चितचोरके चित्तमें खेद न हो.

काम०- प्यारी मेरे मनका खेद खोना चाहो तौ ऐसा कोई उपाय करो जो आज हमारा प्यारा न्यारा न हो यह नदीनावसंयोग है जो अब हाथसे निकलगया तौ फिर मिलना महा कठिन है.

मदन०- सखी हम उसी बातमें आनंद हैं जिसमें तुमको सुख प्राप्ति हो अरु हमको यह लाभ होय कि माधोनलको देख अपना हृदय शीतल करें.

सोरठा

जो मन बांछित बात सोई सखि मुख उच्चरैं
आनँद उमगो गात तब चातुर आतुर चली

(सब सहेलियों समेत कामकंदला अपने घर आती है अरु यवनिका पतित होती है.)

इति श्रीमाधवनल कामकंदला नाटक द्वितीय गर्भांक समाप्तम्

तीसरा गर्भांक
स्थान कामकंदला का मंदिर

(कामकंदला माधवनलकेपास आती है)



काम०-हे प्यारे तुम्हारे दर्शनबिन मेरामन अति उदास हुवा अ व मेरा चित्त चाहताहै तुम्हारे धोरेसे कहीं न जाऊं अब तुमको अकेला छोड सरोवर न्हाने कभी नहीं जानेकी.

दोहा

कमल देखि संपुट गह्यो चकई संग बिछोह
मम मुख पूरण चंद्रसम निरखत अति दुख होह

माधो०-हे मनोरमा कहांतेरा मुख मनोहर कहां बपुरा चंद क लंकी क्षयीरोगी स्त्रीका वियोगी वह तेरे सुंदर मुखार्बिंद की समता कब कर सक्ताहै प्यारीतेरे मुखके सन्मुख मार्तंड का घमंड भी ढीला दृष्टि आताहै.

काम०-(यह बात सुन मुसकराकर प्यारेको कंठ लगाय बोली) हे मनहरन तुमसे बिछडनेको मन पलभरको भी नहीं चाहता मैं सरोवर तो गई परंतु मन आपहीके चरणोंमें लगा रहा.

माधो०-प्यारी मनतो मेराभी यही चाहताहै कि एक क्षणको भी तुमको न त्यागूं परंतु क्याकीजे जो राजाकी आज्ञा.

काम०-(मन मलीन करके)

दोहा

मूरखलेसम्बंधुधिन इहि जग मिलै न कोय ।
तुम जानि बिछुरी प्राणपति बिधि भावैसोहोय ॥
मधुकर लुब्धो कमलसों कियो पान मधु प्रेम ।
नयनबाणतनमें बिंधे तबहुँ मिलनको नेम ॥
भँवरोंकी तो यह गति है अरु मनुष्योंकी यह रीति.

माधो०-प्यारी बिधिकी गति अपरम्पार है उस्से किसीकी पार नहीं बसाती क्या राजा मूर्ख मुझको देशसे निकाले अरु पाखंडियोंको पाले यह कर्मका फल है इसमें किसीका क्या दोष है अरु तू मुझे जानेदे हम तुम जो जीते रहेंगे तो सौबेर मिलेंगे.

काम०-(नेत्रोंमें नीर भरकर) हे प्यारे तुम्हारे पैयाँ पडूं ऐसे कठोर वचन मुखसे न निकालो ऐसे निठुर वचनोंको सुनसुनकर मेरा हृदय बिदीर्ण होताहै.

काम०-हे मदनमोहनी अब कैसे होगी.

दोहा

चलन वचन मीतम कहत सहत न तन दुख एह ।
प्राण चलैं पिय संगही सहै संताप न देह ॥

सोरठा-चलन कहतहै मित्त आण संगही चलैंगे
अतिव्याकुलहै चित्त नयनसजल भरभर दरैं ॥
दो० आजसखीहमयह सुनो पहु कातलपियगोन
पहु अरुहियरे होडहै पहिलै फाटै कौन ॥

मद०-कुछ संदेह मतिकरो चलो तुम्हारे मनमोहनको मनावें परंतु राजाका जो भयलग रहाहै उसको क्या करोगी.

म० का०-तुमतो सुजान अरु ज्ञानवान हो राजाके कहे काधिलपुनहीं मान्नाचाहिये धनयौवनके मदमें सबही मतवाले हो जाते हैं.

दोहा

मूरखको सुख ओढ़ई निकसतबचन भुवंग
ताको सुरान लाभिये विषव्यापै नहिं अंग १॥

माधो०-हे प्रिये राजा किसीके मित्र नहीं होते.

दोहा

बिषधारे १ कपि २ अग्नि ३ जल ४ राजा ५
सुआ ६ सुनार ७ ॥ यह दशहोयन आपने
पासा ८ फांस ९ कलार १०

दूसरे यह बातहै जहां अच्छे बुरे की बूझनहो वहां कारहनाभी अनुचितहै-

दोहा

मनमाणिक जो उछटै फिर नजु मैंति हिं ठाव
चाहै बसुधा कनककी हारिल धरै न पांव १

सचतो यहहै यहां रहना मुझको किसी भांति स्वीकार नहीं दशबीस दिन कहीं और ठौर रहकर अपने चित्तको शांति करलूं फिर आजाऊंगा.

चौपाई

कर्मरेखसों कछु नबसाई. विधनाकीगति लखीनजाई. मिलनविछोहविधाताकीना हमें तुम्हें दारुणदुखदीना. मिलविछुरन दुखजाने सोई, जासों मीतविछोहाहोई.

काम०-(लंबीसांसभरकर हे मनरंजन बहुत दिन नरहोतो एक दिन और विश्रामकीजे आजकीरात और अपनी छातीको ठंढी करलूं अरु अपने हृदयकी तप बुझालूं (षटरस भोजन मँगाय) हे प्यारे भोजन तो करलो जो मेरे मनको संतोष होय.

माधो०- इस नगरमें भोजन करतातो नहीं परंतु तुम्हारा कहना भी मुझको अत्यंत भारीहै.

मद०- सखी आजकी राततो बडी शोभायमानहै कैसी निर्मल चंद्रमाकी चांदनीखिलरहीहै तारे छिटकरहेहैं. चांदनी चंबेलीके पुष्पोंसे सुंदर सेज सजाओ.

काम०- मेरे गहनेकी पिटारीलाकर मेरा ऐसा सुंदरश्रृंगार वनाओ जो आजतक किसीने सुनाहो न देखाहो.

मद०- प्यारी जो आजही तेरा श्रृंगार नवनावेंगी तोकिसदिन वनावेंगी क्योंकि तुम्हारे मनमोहन प्यारे कवकव आवेंगे.

मनो०- प्रथमतो चंदन कुम्कुम लगाय सुंदर सुंदर चोटीपट्टी मांग वनाय बत्तीस आभूषण पहराय अतलसकालहँगा जरीकी ओढनी उढाय । केशरका तिलक लगाय पान चबाय आज तो उरबसीवनादे जो नित्यप्रतिप्यारेके उरबसीरहै.

मद०- दोहा

तन भूषण अंजन दृगन पगन महावर रंग
नहिं शोभाको साजियत कहिवेईके अंग १
मानो विधि तन अच्छ छवि स्वच्छ राखिवेकाज
दृग पग पोछनको किये भूषण पायन्दाज २

मनो०- हे कामकंदला तेरे मुखकी शोभाका वर्णन कौन कर सके.

दोहा

अंग अंग तन जगमगत दीपशिखासी देह
दिया बढायेहू रहत बडो उजेरो गेह ॥ ॥

मद०- मैंने सुनाहै आज तेरे रूपको देख रतिभी लज्जित हो अनसन पाटी लिये पडीहै.

काम०- आली माधो क्या रतिपतिसे कमहै.

मद०- चलो प्यारी प्राण प्यारेको यह शृंगार दिखाओ.

मनो०- महाराज तुम्हारी प्राणप्यारी आई इसके शृंगारको तो देखो कैसा बनाहै.

काम०- अरी मेरा मुख इस योग्य नहीं जो प्राणनाथ छवि वर्णन करें.

माधो०- आइये प्राणप्यारी शैयापर विराजिये हमारे नेत्र चकोरोंके हृदयको सुखदीजिये इस मन मधुकरको रस पान करनेदीजिये क्योंकि आजकी रात और हमारा तुम्हारा संयोगहै. फिर न जानिये कबतक वियोग रहै.

काम०- (वियोगका नाम सुनि अकुलाकर)

दोहा

चतुर मनुज नहिं करतहैं लोगदिखाऊ प्रीति

प्रथम मिलन पाछे दगा कौन गांवकी रीति
जो मैं ऐसा जानती यह न निवैहै साथ।
कबहुँ न देती भूलकर चित्त पराये हाथ॥
प्रीतमत्त नर तुच्छमति जे मन परहथ देहिं।
सुख संपति लज्जा तजहिं दुःख बिरहको लेहिं

माधो०- प्यारी यह बातें तुम्हारी सब सच हैं परंतु जो मेरे मनमें बीततीहै मनही जानताहै कहनेसे क्या होताहै जोरा जाने मेरे पीछे तुझको दुःख दिया तो वह दुःख मुझसे देखा न जायगा.

काम०- तुमसे अधिक इस समय मेरा कौन है तुम एक दुःख को क्या रोतेहो विछुरनसे अनेक प्रकार के दुःख देखने पड़ेंगे सो दुःख मुझ दुखियासे कैसे सहे जायंगे अरु जो मन को मनाही लिया परंतु नयन तो नहीं मानेंगे.

कवित्त

जब ते सुन्योहै प्यारो न्यारो भयो चाहतहै तब हीं ते मलयके सो पानी बरसावैंहें जहां कहीं बूंद नाहिं परी तिनकि सानन लै कहियो थबरा यनाहिं हमहूं अब आवैहैं। जारे बिरह बिधि से कहुंवे गिरो कप्रीतमको नातो एक पलमैं ते री श्रृष्टिको बहावैंहैं। जरे को जरावैं औ दुखी को दुखावैं जे कभू नाहिं ऐसे नर जगमें सुख पावैं हैं १

माधो०- प्यारी क्यों मुझको लजाती हो (यह कहनीची गर्दन कर चुपहो रहा).

काम०- (आपही आप) ऊपरको देखकर) देखो यह चंद्रमं

द्मति किस आनंदसे निर्द्दद चला जाताहै इसके मनमें किंचितमात्रभी दया नहीं हमजलियोंके जलानेको यह भीनिगोडारथ भगाने लगा। अरेनिरदईनेकठहरतो सही

सोरठा

हे शशि हे निशिराज काज आज तुमते परो
लाज मेरी महाराज आज तुम्हारे हाथहै।

मेरी दोबातें सुनतेजाओ आज मेरे ऊपर बडी भारी विपत्तिहै मेरे प्रीतम प्रातःकाल आयँगे कुछ ऐसा यत्न करो जो रात्रिबढजाय जब वह न बोला तो कहने लगी हाय यह मन मलीन तन छीन चंद्रमा भी नहीं सुनता अपना रथ भगाये चला जाताहै इसदई मारे महाहत्यारे से क्या होगा यह तो सदाही काकपटीहै जिसने अपने गुरुकी पत्नीको कुदृष्टिसे देखातो और किसकाभी न होगा इस्से बातचीत करनी वृथाहै.

सोरठा

चंद्र न जाने पीर ताबिनसहै चकोरदुख॥
व्याकुल रहै शरीर निशि अँधियारी शीशधुनि

(फिरबोली) चंद्रमा विचारेका कुछ दोष नहीं इसके रथमें जो हरिण जुडेहैं उन दईमारोंका सबदोषहै (उन मृगोंको सुनाकर कहती है)

सोरठा

रे रे मृग मृगतोहिं रथनिशंकलये जातकित
पियबिछुरन दुख मोहि चंद्र छिपत पिय आयते
जो तुमको कुछ लाज मोहिं विरहनको दुख हरो

जाहु नकहुं तुम आज वसहु मास षट मम भवन

जो मेरा दुःख मिटाया चाहो तो कुछ ऐसा उपाय करो जो सदैव रात्रिही बनी रहै कभी भोर न होय जो मेरा मनकु सुदिनि खिन्नाही रहे (जब मृग भी न थंभे तो कहा) जिसका स्वामीही कुमार्ग गामी हो उसके दासका क्या विश्वास.

हे विधि जो तू सच्चा विधि मिलाने वाला है तो मेरी भी विधि पूर्ण लगा आज छै मासकी रात करदे क्योंकि प्रीतम प्रातःकाल जाने कहै हैं.

काम०-(जब किसीने उत्तर न दिया तो बोली) हे स्वामी तुम्हीं कुछ यत्न करो जो दिन न निकलै.

माधो०-हे प्रिया कहीं ऐसा भी हो सक्ता है यह बात बहुत कठिन है परंतु बीणा बजाता हूं चंद्रमाके रथके मृगोंपर मोहनी डालता हूं देखियै चाहे रुक भी जाँय बीणाके बजातेही चंद्रमाके रथके कुरंग थकित हो जहांके तहां खडे रह गये अरु रैन बढी चकवी चकवे अकुलाने लगे कमल कुंभलाने लगे.

काम०-हे राहु मैं जन्मभर तेरा गुण नहीं भूलनेकी इस समय तुम जाय सूर्य्यका ग्रहण करो जो नित्यही आधीरात बनी रहै प्रात न होय प्रात होतेही पिया चले जायंगे. (जबहीं बीणा थमा चंद्रमा छिपगया सूर्य्यका प्रकाश हुवा)

माधो०-(आंखोंमें आंसू भरकर) हे प्यारी अब आज्ञा दीजे हम जाते हैं परमेश्वर मिलावैगा तो फिर मिलैंगे मेरा मन मधुकर तुम्हारे पंकजनेत्रोंको नहीं छोड सक्ता प-

रंतु राजाके कोपका भयहै अव तुम कहदोकि जाओ जैसे जीव देहको महा कठिनाईसे छोडताहै ऐसेहीमैं तुम्हारे मेहको छोडताहू-

काम०-(नयनोंमें नीर भरकर) हाय भलामैं अपने मुख से कैसे कहूं कि तुम जाओ कोई अपने शरीर मेंसे प्राण का निकलना कब चाहताहै.

दोहा

रसना विषपरसन करै कहै गवन कर कंत
तिन अँखियन मेरज परै लखै चलत भावंत

(बाँह पकडे खडीहै) हे द्विजराज आज तुम्हें किसी भांतिनहीं जानेदूंगी जो तुम ऐसेही निर्दई बनोहो तो एक कटारी और मारते जावो-

दोहा

मारिजारिकरि भस्मपिय राखहु हृदयमझार
जबजीचाहै तबमलो अंगप्रेमरसडार ॥
सो० करतमुईकोजाप जियतकठिनदुखदेतहो।
अबपियकोनसरायतजसमीपबिछुरनकरत २

चोपाई

तजसमीपमतिकरहु वियोगन,तुमबिछुर तपियहुइ होयोगन. कंथापहरि जटाकरिकेशा वनवनफिरौं तपस्विनवेशा- मुद्राकानभ स्मतनलाऊं,करकिंगरिदिनरैन बजाऊं.यो गनहोय चित्त भरमाऊं,सिद्धहोयतौमाधो पाऊं, घरघरवनवनढूढौंतोहीं, सोकछुक रौंमिलौजोमोहीं-

दोहा

खंडखंडतीरथकरों काशीकरवटदेहुं ॥
सनइच्छाकरिमरिजियों ढूंढकंततोहिलेहुं १

चौ० जानिदेजाहुविरहकेहाथा, पाँयपरोंमुहि लेचलसाथा. अहोमीतद्विजराजबटोही, मां झधारसनि छांडोमोही. नयनविछोहनदेखों नाहा, छांडोप्राणनछांडोबाहा.

मनोज०- मदनमोहनीदेखतो इस समय कंदलाकी कैसीकु गतिहोरहीहै नजीनेकी नमरनेकी

सोरठा

नयनझरैजिमिमेह देहगेहभीजेसकल
बिछुरनननयोसनेह मनव्याकुलतनथरहरत

इसी दिनकेलिये कामकंदलाको समझातीथी सोदिन आज विद्यमानहै थोडी देरका सुख जन्मभरकादुख योगी भौंरा परदेशी यह किसीकेमीत नहीं यह पराई पीरकोनहीं जानते नइनसे मिलनेका सुखनबिछडने का दुख.

दोहा

परदेशीकीप्रीतिको सबकामनललचाय
प्यारीभारीदोषयह रहैनसँगलेजाय १

मदन०- छोडदे हाथ जानेदे क्यों अपनी जानखोतीहै (यहक ह बांह छुटायदी).

काम०- दोहा

बाँहछुटायेजातहो निबलजानकरमोहिं
हृदयमेंसेजाहुगे तबजानूंगीतोहिं ॥

(इतना कह मूर्छित हो पछाड़खाय धरणिपर गिरगई)

मनो०- हे मदन मोहनी झटपट आ प्यारीको उठाय पलँगपर पौढायदे.

मद०- अरी इसकातो सब शरीर स्वेत पडगया अधरसूखगये तनकतनक स्वास चल रहाहै नारी शर्द है इसके जीने का कोई भरोसातो नहीं दिखाई देता परंतु परमेश्वरकी लंबी बाँहहै.

मनोज०- शीघ्र इसके नेत्र बंदकर पंखेसे बयारकर सेवतीके बडा गुलाबके पुष्पोंकारस इसके मुखपर छिडको गंध राज मदनबान मालतीके हार इसके हृदयपर धरो आगे ईश्वरकी इच्छा परंतु उपाय करना सारहै.

मनोज०- (व्याकुल होकर) अरी यहतो कोई घडीकी पाहुनीहै शीघ्र किसी चतुर वैद्यको बुलाओ जो इसे अच्छा करै.

मदन०- वैद्य क्या करैगा इसको कोई रोगतोहैही नहीं यहतो वियोगके रोगमें बेसुधि पडीहै.

मनोज०- फिर सखी जो कोई वियोगके रोगका उपचार जानताहो उसीको बुलावो किसी भांति कष्ट तोटलै.

मद०- सखी

दोहा

करउपचार सबैरहीं तिया बिसूरि बिसूरि
बिरह भुजंगम जोडसी ताको मंत्रन मूरि

सोरठा

बिरहहलाहलखाय रोमरोमपूरणबिंध्यो
मूरिनलगैउपाय जकीथकीरहिंसहचरी २

मनोज॰-अरीमें एक यत्न और करूंहूं तुम इसके धोरैसे अलग नेक हटजाओ (कानसे लग लगी माधो माधो पुकारने.).

काम॰-(सखी कहांहै माधो) यह कह कामकंदला उठिबैठी सब सखियां घिर आईं.

मनोज॰-हे सखी तुझे क्या हो गया क्यों दोनों नेत्रोंसे जल धारा बहारहीहै इधर उधर क्या देखरहीहै.

काम॰-(सूना भवन देख) हे मनोजमंजरी मेरा जीवन प्राण कहां है

मनो॰-कुछ सन्देह न करो बाहर बैठेहैं.

काम॰-कहां हैं मेरे सन्मुखला.

मनो॰-मनमें धीर्य्यरक्खो स्नान करने गयेहैं.

काम॰-(गया नाम सुन कालदंडसे भी कठिन करालदंड हृदयमें जाके लगा आपही आप) हे हृदय कठोर तू वज्रसे भी कठिन होगया जो प्रीतम गया अरु तू न फटा अरे निर्लज्ज तुझे कुछ भी लज्जा नहीं आती जो ऐसे कठिन कठोर दुःख सह रहाहै जलके बिछडनेसे ताल तडक जाताहै कमल कुम्हला जातेहैं मीन अपने प्राणका त्याग कर देहैं हे पापी तू नेकभी न फडका अरे हत्यारे हृदय तैंने प्यारेका विछोह अपने नेत्रोंसे देखा हे निर्दई प्राण तू प्राणनाथके साथ न गया धिक्कारहै धिक्कारहै तेरे इस जीतवको तुझको तो प्यारेके बिछुडतेही टुकडे टुकडे हो जानाथा.

दोहा

प्रीत कठिन दुख देगये लेगये सम्पति सुख

हैनिर्लज्जाधिकधिक तुझे रह्यो सहनकोदुःख

हे प्यारे मैंनहीं जानतीथी मुझे तडफती छोड तुम ऐसे चले जा ओगे मैंने तो ऐसा कोई आपका अपराधभी नहीं किया हाय यह सब मेरेही करमका दोष है किसीका कुछ दोष नहीं (यह कह फिर मूर्छित हो गई)

मदन०- दोहा

निशिचकोरशशिबिनुदुखी दुखीमीन जलछीन
त्यों कंदलनलबिनदुखी भईसकलबुधिहीन ॥

तुमचाहे कोटियत्न करो जबतक माधो न मिलैगा इसका चित्त सावधान नहोगा.

काम०- (माधोका नाम सुनि) अरी क्यों माधो माधोकर मुझे दाधोहो मुझे वैसेही चैन नहीं पडता घडी घडी काटनी भारी पडीहै.

दोहा

जोदिनहोयतोनिशिरटूं जोनिशिहोयतोप्रात
नादिनचैननरैनसुख बिरहसतावेगात १

सोरठा

लेगयेपियसबसंग सुखआनंदबटोरिकै
आलीबिरहभुजंगडारिगयेममकंठमें २

मनोज०- अरी चलकर देखोतो कंदलाकी तो कुछ औरही गतिहोगई नृत्य गीत चतुराई सब जाती रही खानापीना छोड दिया दिनभर पपीहेकीनांई पियापिया पुकारतीरहैहै क्या यत्न करें

कु०कु०- अरीतू अभीबाली भोलीहै तू इनबातोंको क्या जानै जिनके अंगमें बिरह प्रवेश करे है सबगान रंग उमंगको

क्षणमें भंगकर मनमें सैकडों तरंग उठातीहै अरुऐसा ढंग बना तीहै नवह जीनेका रहैन मरनेका.

दोहा

नेमचावसुखहर्षयश बलविद्यागुणज्ञान
जिहितनविरहा संचरै सबतजिहोय अयान
वैद्यनजानै पीरतन औषधिहोयनसाधि
दिन दिन दूनीबढतहै तनमें बिरहउपाधि

सोई गति कामकंदलाकीहै प्यारेके वियोगमें शरीर सूखकाँटाहो गया रोगनकी भांति वियोगन बनी पडी रह तीहै अंजनमंजन हसन बसन खान पान सब बिसराय दिया नींद भूंख लाज काजका नाम भी नरहा हरस्वासमें हायहाय का शब्द निकलताहै विरहानलकी नल बिना कैसी ढींग प्रज्वलित हो रहीहै कभी कभी यह पढतीहै.

दोहा

कमल नाल विषजालसम हारभार अहिभोग
मलय मलय जल अनलमोहिं बायुवायु कोरोग
हाहाप्राणन सँगगये जबबिछुरे भावंत ।
हाथमलै माथाधुनै चापअंगुरियादंत ॥

चौपाई

डरितन मोरे मनरहई, हियेपीर काहू नहिं कहई
क्षण अचेत क्षणचेतजु आवे, जनुविषलहरदेह भरमावे स्वासलेत पंजसत्नबडोलै, हायहाय सज्जन मुखबोलै.

दो० पीतपत्रसमरँगभयो रक्तन रह्योशरीर

पवनपरसनहिंसहिसके डोलैगात अधीर

काम०-विरहाग्नि शरीरमें सुलग रहीहै त्रिविधि समीर इस में सहाय कारकहै पंचशार शर मार मारकर मूर्छित कर ताहै हृदय अँगीठीसेभी अधिक तप्त होरहाहै चंदन लगातेही शुष्क हो जाताहै पुष्पोंकी सेजपर जो चरण धरतीहूं तो तापसे मुरझाजातेहैं

दोहा

पियबिछुरतबिछुरेसबै उलटगयोसंसार
चंदन चंदा चांदनी भयेजरावनहार ॥
चंद्र किरण लगबालतन उठतबिरहयों जाग
दुपहरदिनकर कर परस ज्यों दर्पणमें आग ॥

पिक मयूरोंका शब्द मदनके घावके ऊपर विषसम लगताहै गीत नाद रसकवित्त कहानी श्रवणोंको शूल सम प्रतीति होतीहै पतिविहूनी स्त्रियोंको मदनदूनीदूनी त्रास दिखाताहै अरु हृदयपर विरहानलकी धूनी लगाताहै सूनी सेजखूनी हाथी की सदृश दृष्टि आतीहै। जैसे होसके वैसे माधोको मेरे पास लाओ नहींतो मेरे प्राण नहीं हे कुसुम कुमारी तैंने झूठ बोल बोलके एक वर्षसे मुझे रक्खाहै तू बार बार सौंगदे खाखाके कहतीथी कि तेराप्राणप्यारा अब आताहै

बारहमासा

सखी बारह मासगयेबीतन आये मीतलगी कहीं प्रीतक हो क्या करना।
आतीहै जीमें विषघोलघाल पी मरना.

आषाढ़मास आलगा किसको कहूंस्गा पियादे दगा नि कलगये घरसे।
पीत प प्यारे बिन जिया हमारा तरसे
उठतीहे विरहकी हूक जातातन भूक पपिहे की कूकज भी आदरसे।
पीपी पुकार नयनों से मेघ सावरसे

दोहा

हाय पिया कैसी करी छाँडि गये परदेश
खान पान भावे नहीं भई दूबरे भेश ॥
झउ० मैं कैसी करूं पी प्यारे। नहिं जाते दुःख सहारे
जिस दिनसे आप सिधारे। चलरहे जिगर पर आरे

कवित्त

नीके हो निठुर कंत मनलैसि धारे अंतमें न स यमंतसे मैं कैसे वर पायहों। आसरो अवधि कोसु अव धी व्यतीत भई दिन दिन पीत भई रही मुरझायहों। अहो पति प्राणनाथ सांची होंकहति एकपाय केतिहारे पायफिर भीक पायहों। इकली डरीहों घन देखिके डरीहों खाय विषकी डरीहों आज प्यारे मरिजायहों
मैं इकली सेजपर डरूं कैसे दुख भरूं रात दिन जरूं पड़ा दुख भरना। आतीहे जीमें विष घोल घालपी मरना ॥१॥
सावनमें मिलके सब नार करें सिंगार तीजो त्योहार सब मनातीहैं होहोके मगन कजली मलारें गातीहैं.
पीबिन फिरूं दर दर मारी करूं मैं क्यारी सखी तुझे सा रीनों चे खातीहैं चहुँ ओर जोरसे घटा चली आतीहैं.

दोहा

नारीघरघर धूमसे गावैं राग मल्लार।
झांझनकीठोकरलगैं होतझननझनकार

झड० सबसखियां झूलाझूलैं मेरे लगैं वि-
रहकीहूलैं। हमउसदिनों दिलमेंफूलैं जवक
भीखबरहरजूलैं॥

कवित्त

दामिनीदमकसुरचापकी चमक श्यामघ
टाकीझमक अति घोरघनघोरतैं। कोकिला
कलापीकलकूजतहैं जितजितसीकरतेशी
तलसमीरकी झकोरतैं। स्वप्नमाहिआवन
कह्योहोमनभावनसुलाग्योतरसावनवि
रहज्वर जोरतैं। आयोसखीसावनमदनस
रसावनसुलाग्योवरसावनसलिलचहुँओ
रतैं॥

सब मेरा राग अरु रंगहोगया भंग गयापीसंगमांग रंग
भरना। आतीहै जीमें विषघोलघाल पी मरना॥२॥
भादोंमें मेघ अतिवरसै मेरा जी तरसै निकलगये घरसे
पिया मेरे आलीमैंडरूं देखिके घटा गगनमें काली॥
मुझेवीते वर्ष एक घडी लग रही झडी अकेली पडीघर
नहीवाली यह विपतिमुझपे इसवाली उमरमेंडाली॥

दोहा

अंगसूखलकडीभयो नेकरह्यो नहिंमांस
विनादर्शपीकेसखी निकस्यो चाहतस्वांस

झड० झुकरहीं अंधेरीरतियां। लगैं बूंदें करद

सीछतियां। लिखलिख दुखडेकी बतियां भेजूंगीसजनपे पतियां॥

कवित्त

जहाँ तहाँ उन एन एजलजु भाँदवके चारि हू दिशा नघुमरत भरे तोयकोशो भासरसा ने नवखाने जातकाहू भांति आनेहैं पहार मानो काजरके ढोयकै। घनसोंगगनछयोति मिरसघन भयोदेखिन परतमानोगयोरवि खोयके चारिमास भरिश्यामनिशाके भर मकरिमेरे जाने याहींतेरहतहरिसोयके॥

कासदजा पीके पास पूरीकर आसहोरहूं दास पडूं तोरे चरना। आतीहै जीमें विषघोल घाल पी मरना॥३॥

आगया महीना क्वार घर न भतार करूं सिंगार किसपै मैं अपना मुझे सारा ऐसो आराम होगया स्वपना॥

जबयाद पियाकी आवे जिया घबरावे सेजनहिं भावे विरहसे तपना मैंने छोडा खाना अरु पीना पीही पीजपना

दोहा

घरघरपूजें न्योरते हैंपियासबनरनार
देखदेखमें झुररही तुमबिन प्राणअधार

झड० यह खूबपायता आया। मुझे दूना औरजलाया बिनपियाजिया घबराया नयनों में मेरे जलछाया॥

कवित्त

विविधिवरणसुरचापके नदेखियतमानो मणि भूषणउतारिवेके भेशहैं। उन्नतिपयोध

खरसिरिसुगिरे रहैनीके नलगत फीके शो
भाके नितेशहैं। प्राणपति आये नेशरद ऋतु
फूलिरहे आसपास कासखेतखेत चहूं देश
हैं। यौवनहरणकुं भजो निउदये ते भई बर
षाबिरधताके सेत मानो केशहैं।

वाहवाहजी पिया निरदई खूब सुधिलई बिपति आ
छई जबसे तुम घरना आतीहै जीमें विष घोल घालपी
मरना ॥४॥ ॥४॥

कातिक में करिके अस्नान करें सबदान हमारे मानपि
यानहिं आये।मेरा देखिदेखिकर धूम जिया अकुलाये
जो होते आजके पिया पाता सुख जिया गवनकितकि
याजनेक हां छाये।जने किनसो तनने पिया मेरे बिरमाये.

दोहा

दीपमालिका कररहे घरघर अपने लोग
पियाबिना भावे नहीं छायाचित्तपैशोग

झड० मैंकिसपै करूं दिवाली। घरनहींहैमे
रावाली। मँगवाके पान अरु छाली। भरती
खिलोनों से थाली।

कवित्त

आईहै दिवाली आली धूमधाम नगरमाहिं
प्रीतमनिरमोही ने अबलों सुधिनालीहै। सू
कसूक कांटा भई तनपे जर्दई छई दई निर
दई नेनई बिपतिडालीहै। दिनोरैन पापी मैन
चैन नलैनदेत नाहिं अपनी भँडैया कंत अलक
हूं छालीहै। बाती लौन बाली घरखील न बि

लौना एक बालम विदेश मेरी काहे की दिवाली है

सखी घर नहिं मेरा सजन सूना लगै भवन जबसे किया गमन आये घर फिरना आनी है जी में विष घोल घाल पी मरना ॥५॥

जिस दिन से लगा अधैन सताना मे न चित को नहिं चैन मेरे दिन राती पडा सूना हमारा भवन दिया नहिं बाती.

आ दर्शन दीजे कुमर रही तुझे सुमर बाली तेरी उमर ध धकती छाती मैं मल बाती सी फिरूं विरह की माती.

दोहा

सीतकाल पडने लगा अति उजियाली रैन
प्रीतम प्यारे तुम बिना नैक न चित को चैन

झड० सौतनिया सौतन ने आली। कुछ ऐसो मो हनी पढ डाली। रम रहे वहीं पर बाली। मेरी ख बर आज लौं ना ली

कवित्त

बरसै तुषार बहै शीतल पवन अति कंपमान उर क्यों हूं धीर ना धरतु है राति न सिराति सर सा तिथि था विरह की मदन अराति जोर यौबन क रतु है प्राणनाथ श्याम हम धन हैं तिहारी हमें मिलो बिन मिले शीत पार न परतु है। और को कहा है सविता हू शीत ऋतु जानि शीत को स तायो धन राशि में परतु है।

अब लीजो पिया मेरी खबर न आता सबर दु:ख है ज बर नैन हुए झरना आती है जी में विष घोल घाल पी मरना ६

सखी पूस पडने लगी शरदी छई तन जरदी विरह ने

गरदी मचाई तनपे। दे दरश सजन मैं बैठी जानरवो जनपै
मैं मरूं विरहकी मारी होगई आरी जाऊं वलिहारी तेरे
बोलनपे। पडी विपतें हजारों इसवाला योवनपें

दोहा

शीतपियारेमीतविन करत अनीत अपार
जीत लिये सब अंगइन होत देहके पार॥
झड॰ मैं इकली सेजपे सोती। अंखियों से चुवे
जेसे मोती॥ दिनरात पडी हुई रोती। अँसुवों से
मुखडे को धोती

कवित्त

शिशिर तुषारके बुखारसे उखार तुहे सबी
तेहोत सुन्नहाथपाय ठिरिके। घोस की छुटा
ईकीबढाई अरनीन जाय भाणपति पाई कछु
सोचिके सुमिरिके। शीतने सहस करसहसे
चरण व्हेके ऐसो जात भाजितम आवतहे घि
रिके। जोलों कोककोकीको मिलततोलोंहोतरा
तिकोक अधवीचहीते आवतुहे फिरिके॥
प्रीतमसे लगरही लगन सूनामेरा भवन न आये सज
न मुझको दिये परना आतीहे जीमें विषघोल घालपी
मरना ॥७॥

आगया महीना माहन आये नाह उठे तनदाह विरहने
भूना मैं मारे शीतके हुई ऐंठकर जूना
विन पिया रहूंबे होश बैठी खामोश तनमें नहिं जोश हु
वा दुख दूना॥ नहिं भाता मुझे वसंत घर मेरा सूना.
दो॰ वालभालसी लगतहै दिखान मुझे वसंत

लइये मालन उसी दिन जब घर आवै कंत
झड० कटै बर्फ पडै अति पाला। हुवा सूरवसारा
तन काला। मैंने कुछ नहिं देखा भाला। यूंहीच
ला जोवनावाला ॥

कवित्त

लागे न निमेष चारि युगसौं निमेष भयो कही
न बनति कछू जेसी तुम कंतकी। मिलनकी आ
सते उसास नाहिं छुटजात के सेस हौं सासना
मदन मयमंतकी। बीतीहै अवधि हम अबला
अवधिताहि बधिकहाले हो दयाकीजे जीवजं
तकी। कहियो पथिक परदेशी सों कि धनपीछे
व्है गई शिशिर कछू शुधिहै बसंतकी ॥

पिया जल्दी दरश अब दीजे योवन मेरा छीजे आके सु
धि लीजे कीजे बेदरना। आतीहै जीमें विषघोल घाल पीम
रना ॥८॥ ॥८॥

फागुन में राग अरु रंग बजें मिरदंग रबड करहे चंग हो र
ही होली- फिरें सखियां झूमती भरें गुलाल नझोली.
कोई मारे रंगकी पिचकारी देत कोइ तारी कोई रंगे सारी
रंगे कोइ चोली। छिड कनको किसीने केशर कुम्कुम घोली.

दोहा

पिया बिना भावै नहीं मुझे राग अरु रंग
बौराई सी फिरतहूं वर्षो ने पिये भंग
झड० सखी उडै अबीर गुलाले। हो रही जमी
न रंगलाले। खेलैहै होली मतवाले। पडे कंतसो
तके पाले ॥

कवित्त

छायरह्योराशिरंगगायरहींनारीसवअवि
रऔगुलालवालभेरफिरेंझोलीमें तकत्तक
पिचकारीनारीमाररहींसाजनकेंसाजनपि
चकारीमारेंप्यारीकीचोलीमें ॥ भोनभोनइं
दुमुरवीकोकिलसीकूकरहींशालियामफू
लझरेंमीठीमीठीवोलीमें हाथमेंअकेलीप
डीमच्छीसीतलफरहीवालमविदेशआग
लगोऐसीहोलीमें १

तेरे पइयां पड़ूं हरवारी लेजा पिचकारी रंगसे मेरी प्यारी
भीजे चादरना आतीहैजीमें विषघोलघालपीमरना ॥१॥

सरवी चैतमास वन खिला पियानहीं मिला जिगरमेरा
छिला करूमें क्यारी सरवी नहीं किसीका दोष कर्मकी
रव्वारी

में कहांतलक दुरव भरूं अकेली डरूं कवतलक करूं आ
ह अरु जारी कियापीसे विछोहा इन किसमत हत्यारी

दोहा

प्रीतिनिवाहनकठिनहै कोईमतिकरियोप्रीति
मरजानोतोसहजहै कठिनप्रीतिकीरीति ॥
झड॰ जो ऐसा समझती प्यारी। प्रीतमकोरु
ठातीनारीमैंजाऊंतेरीवलिहारी। प्यारेसेमु
झे मिलारी ॥

कवित्त

लाललालपातनसे वृक्षलताछायरहीमह
करहेवनउपवनपुष्पनकीसुवासतें मंदसं

दर्गांधसनी पौन भौन वहे है चमके चहुँ ओर मुकर
सूर्यके प्रकाशते शालिग्राम ग्राम ग्राम धूमरा
मनोमीकी मेरा मन कपक पात कठिन कामन्त्रा
सते प्रीतमन आये तू पहिलेही आयगये।
अब भी चलो जाय सखी कहदो मधुमासते १
है मुझे तेरी परतीत मिलादे मीत करके तू प्रीत मेरा दु
खहरना। आती है जीमें विषघोल घोलपी मरना ॥१०॥
जिस दिनसे लगा वैशाख त्यागदी दाख घोलकर राख
रात दिन पीना बिन पिया सखी धिक्कार हमारा जीना.
अवलिया मैंने वैराग लिया घर त्याग फिरूं वन बागहा
थमें बीना ॥ पिंडा भभूतका झोलीमें धरिलीना.

दोहा

जोगन बन बन बन फिरूं पियमिलनके काज
तुलसीकी माला लई त्याग सकल कुल लाज
झड० मैं घर घर अलख जगाऊं। प्रीतमको ढूं
ढकर लाऊं दिल इसी तरह बहलाऊं। पीऊं रा
ख अन्न नाहिं खाऊं ॥

कवित्त

की धौं मोर शोर तजि गये कहूं अंत भाज दादुर
दुर गये कहां बोल तन येदई। की धौं पिक चात
क चकोर कहूं मारि डारे की धौं बकपांति कहूं
अंतरगत ह्वै गई। झींगर झिंगोरे नाहिं कोकि
ल पुकारे नाहिं पलाशनके वृक्षोंमें कौने आग
सी दई ॥ जा रिडारे मदन मरोरि डारे मोर सब
जूझि गये मघकें धौं दामिनी सती भई १

यह सच्च वात मैंने कही जान तू सही छाती मेरी दही तु
झसे अंतरना आताहै जीमें विषघोल घाल पी मरना ११
सखी ज्येष्ठ महीना आयानैनेंनोंजल छायादूनासुझे
तायापड़ै अति गरमी अब ऐसेहुए असोच तजनवे धरमी
मेरे मनको लगावे राग जाऊं कहां भाग सकल सुख
त्यागलेलीवे शरमी तन सूखकांटासाहु आगई सब न
रमी

दोहा

जरत धरन तारे गगन विकल भयो तनजाय
तन शीतल जबहोयगो दरशनदे पिय आय
झड० सब पूजैं दशाहरा नारी ओढ़ैं हैं कसुं
भीसारी मैं मरूं विरहकीमारी वालम बिर
मेकहींजारी

कवित्त

वृषको तरुण तेज सहसो किरणकरि ज्वा
लनके जालविकराल वरषतहैं नचातिब
रणजगजरतझर निसीरीछाहकोपकर
पंथीपक्षीविरमतहैं अग्निपुंजनैंकदुपहरी
ढरतहोत धमकाविषमज्योंनपातरचरक
तहैं मेरेजानपोनासीरीठोरकोपकर कौनो
घरीएक वैठकहूं धामैंवितवतहैं ॥१॥
सब करैं गंगा अस्नान दें रहीं दान लगाया ध्यानजाय
नहिंवरना । आतीहै जीमें विषघोल घाल पी मरना १२
(यह कह लंबी स्वासलेवे सुधिहो गई)
कुसु०- हे मदनमोहनी अब कुछ ऐसायत्न कर जो प्यारीकेप्रा-

णवचें जो प्यारीहीके प्राण नहींतो हमारे प्राण कहां चलो किसी ज्योतिषीसे पृष्णकरें (कुसुमकुमारी अरु मदनमोहनी दोनों जातीहें अरु सहज सहजमें यवनिका पतित होतीहे)

इतिश्री माधवनल कामकंदला नाटक शालिग्राम वैश्य कृत्त द्वितीयो अंक समाप्तम्

तीसरा अंक

स्थान बनखण्ड

(माधवनल अकेला बनमें भटकता फिरताहै अरु मुखसे बारस्वार यही शब्द निकलताहै हाय कामकंदला हाय कामकंदला) (मैंनातोता वृक्षपर वैठे वार्त्ता करतेहैं).



शुक०- मैना यह कौन रोगी वियोगीसा हमारे घोंसलेके नीचे पडा हाय हाय कर रहाहे नजानिये इसपर क्याविपतिहै.

शारि०-हे शुकराज इसकी विपत्तिका वृतांत कुछ बूझोमति इसका कोई परम प्यारा मित्र बिछुड गयाहै यह बारंवार रोरोकर ठंढे ठंढे स्वास भरताहै अरु दोनों हाथ मलमल कहताहै हाय कामकंदला हायकामकंदला जब बहुत हाय हाय करनेसे हृदयमें विरहकी आग भडक उठती है तब नेत्रोंके जलसे उस विरहकी ज्वालाको बुझाता है परंतु वह ज्वाला तो ज्वालाकी भांति दूनी दूनी प्रचंड होती चली जातीहै उसे कौन बुझासके विनाइसके मित्र हे प्राणनाथ मुझसे इसका यह कठिन दुःख देखा नहीं जाता अरु जबसे यह आयाहै न कुछ खायाहै न पियाहै न सोयाहै। रोबैही रोबैहै न कुछ अपनी कहै न औरकी सुनै इसे ऐसा विरहने सतायाहै सारातन सूख कर लकडी होगयाहै इतनेपर भी इसने अपनी प्यारीका नाम नहीं छोडा सच्ची लग्न इसीका नामहै.

अरु इसमें एक और बडा भारी गुणहै जिस समय वीणा बजाताहै सब बनके मृग इकदे हो मतवालेसे इसके चारों ओर खडेहो जातेहैं अरु सबके हृदयसे विरहकी लपटें निकलने लगतीहैं वीणाक्याहै मोहका जालहै.

जब यह वियोगी अपनी प्यारीका चित्तमें चिंतवन करताहै मानो सच्चा योगी अपने योगबलसे ध्यान कर रहाहै.

हे शुकदेव इसके रूपकी तो छटा देखो यह दूसरा कामदेवहै.

दोहा-अंगअथाहअलेखगति विरहस

मुद्र अगाध। इसका थिरह वियोग लख भूला
धर्म समाध ॥

सत्य तो यह है कि विरह का वारीश महा अगम है लाखों मनुष्य डूब डूब कर मरगये परंतु किसीने थाह न पाई बडे बडे ऋषि मुनि अनेक अनेक उपाय कर कर हारगये परंतु किसीने पार न पाया जिनको गगन अरु रसानल के जाने की गम थी

जिसपर एक बारभी विरह की दृष्टि पडगई फिर वह न जिया और जो जिया भी तो उनमत्त वन वन वन इसवटो ही की समान धूरि बटोरता फिरा जिसके चित्त को तुच्छ भी विरह की चिनगारी लगगई उसके सब शरीर को जलाकर छार करदिया.

उसी आग के प्रभाव से सिंह व्याघ्र वियोगी के पास नहीं आसक्ते वही इस वियोगी के तन में भडक रही है जिस वृक्ष के नीचे बैठता है

हे शुक नंदन जो सच्चे वियोगी हैं उनकी समता योगी भी नहीं कर सक्के क्योंकि यह सदा दुःख सुख को समान मानते हैं

सोरठा

शीत न गने अजान धाम न जाने रंच तन
जल थल एक समान वन उपवन डोलत नगर

इस समय इसकी सहाय कौन कर सक्ता है हाय जगत् में ऐसा उपकारी कोई नहीं रहा जो इसकी विपत्ति को मिटावे

शुक०— हे प्यारी ऐसा उपकारी अरु परम हितकारी विपत्ति का दूर करनेवाला राजा विक्रमादित्य से अधिक दूसरा दृष्टि नहीं

आता यह विदेशी उज्जेन जाये तो इसके सब मनोरथ पूर्ण हो जांय (इतनेमें प्रातःकाल हो गया दोनों पक्षी उडगये)

माधो०-(आपही आप) विरहकी आगतो शरीर को जलाये डालती है जोमैं इसी वनमें भ्रमता भ्रमता मरगया तो फिरका मकंदला किसी भांति न मिलेगी अब जगमें किसी परोपकारी को ढूंढना चाहिये जो मुझे प्राणप्यारीसे मिलादे परंतु ऐसे नर जगत्‌में थोडे होते हैं जो पराये हेत अपना तन देदें.

दोहा

दयाकरनसंकटहरण जे प्राणी मतिधीर
तिनकीकलिउत्तमक्रिया जे रखैं परपीर ॥

सोरठा

कोटियज्ञ अनुसार एक अंगरक्षाकरन
करैं जे पर उपकार तिनकोयशतिहुंलोकमें

(यह विचार वहांसे चलता है अरु मार्गमें यह कहता जाता है) कलियुगमें स्त्रीका वियोगी कौन नहुआ बडे बडे राजा महाराजा रामचंद्र भरथरी नलवन वन भटकते फिरे ऐसा कौनसा शरीर है जिसने कामदेवके बाण न खाये मैं किस गिन्तीमें हूं.

दुखियोंके सहायक अरु आनंद दायक श्रीरघुनायक थे सो नहीं रहे परंतु आजदिन विक्रमादित्यसे बढकर कोई जगत्‌में दृष्टि नहीं आता पराये दुखका दूर करनेहारा अरु सर्व सुख दाता.

दोहा

साहसयशपरदुखहरण कोटिकोटिकरलेय

शंकबंधीमेंजवगनो नेहदानमोहिदेय ॥१॥
उपकारीजवहींकहौं चलैंसयनलैसंग
कंदलमोहिदिवावहीं कामक्षम्नकरभंग २
(ऐसे आपही आप वक्का झक्का माधवनलउज्जैनि नगरी
को जाताहै अरु यवनिका गिरतीहै).

इतिश्री माधवनल कामकंदला नाटक शालिग्रामवैश्य
कृत तृतीयो अंक समाप्तम् ॥३॥ ॥३॥

चौथा अंक
प्रथम गर्भांक

स्थान उज्जैन नगर शिवजीका मन्दिर

(माधवनल उज्जैन नगरको देखताहै अरु मनही म-
न मग्न होताहै).



(आपही आप) अहाहाहा धन्यहैयह पुरी अत्यंत शो-

भायमान सुखनिधान जिसके चारों ओर कैसीकैसी म-
नोहर पुष्पवाटिका बन रहीहैं जिनमें सुंदर सुंदर सुमन म
नके मोहने वाले खिलरहेहैं चंपा चँबेली मोगिया मदनबा
न गंधराज मालती चंद्र किरण चांदनीकी सुगंध ननोंढ
पटें कीलपटें मंदमंद पवनके संग लहराती चली आतीहैं
तालोंमें अनेक अनेक रंगोंके कमल खिलरहेहैं जिनपर
भौंरोंके झुंडके झुंड फिररहेहैं आंबोंके वृक्षोंपर कोयलकू-
करहीहैं मोरमन भावनी सुहावनी बोलियां बोलरहेहैं प
पीहे पिया पिया कर बिरही जनोंके हृदयको छोलरहेहैं न
ढागोंमें ठंढेठंढे निर्मल नीर झकोल रहेहैं इंदारोंपर रहटए
रोहे चल रहेहैं मालीमाली मीठे स्वरोंसे मलारैं गाय गाय
प्राणीमें रस घोल रहेहैं.

ऐसी अनोखी चोखी सुभग शोभा देख मेरा मन मोहि
त होगया।

दोहा

कलशबिंबमणिमुद्रिका ध्वजपताकफहराय
रावरंक नहिं लखपरत सुखतें बोलसबखाय १
कहुं पंडित चर्चा करैं कहुं काव्य कहुं वाद
कहूं मल्लठाढे लडैं कहूं गीत कहुं नाद २
कहूं नृत्य नाटक कहूं कहूं अपसरागान
लखलख छबि उरबसि तिनकी होत मियाको ध्यान ३
(उस समय तनमनकी सुरति भुलायगई)
बिरहानल भडकन लगा दृगन चलो बहु वारि
रोयरोय लागो पढन यह दोहे दो चारि ४
निशि न नींद नहिं दिवस सुख व्याकुल होत शरीर

कौनसुनेकासोंकहों अंतरगतिकीपीर ५
दृगपुतरिनमेंपियाकी मूरतिरहीसमाय
जितदेखोंतितसोतिया पलकनइतउतजाय ६
निशिवासरआठोंप्रहर क्षणविसरैनहिंमोहिं
जहँजहँनयननपसारिहों तहँतहँदेखोंतोहिं ७

(आगेजाके देखातो एकअति सुंदर शिवजीका मंदिर है साक्षात् तहां शिव पार्वती विराजमानहैं उनको दंडवत कर यह स्तोत्र पढनेलगा.

शिवस्तोत्र

ॐनमो भवाय भव्याय भावनायोद्भवायच
अनंतवलवीर्याय भूतानां पतये नमः १
संहर्तेचपिशंगाय अव्ययायव्ययायच
गंगासलिलधाराय आधारायगुणात्मने २
त्र्यम्बकाय त्रिनेत्राय त्रिशूलवर धारिणे
कंदर्पायहुताशनाय नमोस्तुपरमात्मने ३
नमोदिग्वाससेनित्यंकृतांतायत्रिशूलिने
विकटायकरालाय करालवदनायच ४
अरूपाय स्वरूपायविश्वरूपायतेनमः
कंटकटायरुद्राय स्वाहाकाण्यवेन्नमः ५
सर्वप्रणतदेहायस्वयंच प्रणतात्मने
नित्यंनीलशिखंडाय श्रीखंडाय नमोनमः ६
नीलकंठायदेवाय चिताभस्मांगधारिणे
त्वंब्रह्मासर्वदेवानांरुद्राणांनीललोहितः ७
आत्माचसर्वभूतानां सांख्यैः पुरुष उच्यसे

पर्वतानांमहामेरुः नक्षत्राणांचचन्द्रमाः ८
ऋषीणांचवशिष्टस्त्वंदेवानावासवस्तथा
ॐकारस्सर्वदेवानांश्रेष्टंसामचसामसु ९
आरण्यांनापशूनांचसिंहस्त्वंपरमेश्वरः
ग्राम्याणांऋषभश्चासिभगवान्लोकपूजितः १०
सर्वथावर्तमानोपियोयोभावोभविष्यति
त्वमेवतत्रपश्यामिब्रह्मणाकथितंयथा ११
कामक्रोधश्चलोभश्चविषादोमदएवच
एतदिच्छामहेबोधुंप्रसीदपरमेश्वर १२
महासंहरणेप्राप्तेत्वयादेवकृतात्मना
करंललाटेसंविध्यवन्हिरुत्पादितस्त्वया १३
तेनाग्निनाततोलोका अर्चिभिस्सर्वतोवृताः
तस्मादग्निसमाह्येते बहवोविकृताग्नयः १४
कामःक्रोधश्चलोभश्चमोहोदंभउपद्रवः
यानिचान्यानिभूतानिस्थावराणिचराणिच १५
दह्यन्तेप्राणिनस्तेतुत्वत्समुत्थेनवन्हिना
अस्माकंदह्यमानानांत्राताभवसुरेश्वरः १६
त्वंचलोकहितार्थायभूतानिपरिषिंचसि
महेश्वरमहाप्राज्ञप्रभोशुभनिरीक्षक १७
आज्ञापयवयंनाथकर्तारोवचनन्तव
भूतकोटिसहस्रेषुरूपकोटिशतेषुच १८
शंकरायवृषांकायगणानांपतयेनमः
दंडहस्तायकालायपाशहस्तायवैनमः १९
वेदमंत्रप्रधानायशतजिव्हायवैनमः
भूतंभव्यंभविष्यंचस्थावरजंगमंचयत् २०

तवदेहात्समुत्पन्नंदेवसर्वमिदंजगत्
अन्तंगंतुंनशक्तास्मोदेवदेवनमोस्तुते २१

(माली आताहै)

माली०-हे द्विजराज आप कहां विराजतेहैं.

माधो०-उदासीनहूं योगी वियोगीका घर कहां जहां पडरहे वहीं स्थानहै यह तो कहो यह मनोहर पुष्पवाटिका किसकीहै.

माली०-यह बाग महाराज वीरविक्रमाजीतकाहै.

माधो०-हमको भी राजा वीरविक्रमाजीतका दर्शनहो सक्ताहै.

माली०-हां महाराज हो सक्ताहै.

माधो०-किस समय अरु किस भांति उनका दर्शन होगा.

माली०-प्रातःकाल नित्य इस मंदिरमें शिवजीका पूजन करने आतेहैं अरु सबके मनका मनोर्थ पूर्ण करते हैं

माधो०-तो मेरा मनोर्थ भी पूर्ण होगा.

माली०-निःसंदेह इसमें कुछ संशय नहीं.

(माधो मालीकी बात मान मनमें धीर्य आन यह श्लोक महादेवके मंदिरके द्वारपर लिख वनको चलदिया).

श्लोक

किंकरोमिक्कगच्छामिरामोनास्तिभूतले
नारीविरहजंदुःखमेकोजानातिराघवः ॥१॥

दोहा

कहाकरोंकितजावहौं राजारामन आहि
तियवियोगसंतापसब राघवजानततांहि १

(माधो जाताहै अरु राजा वीर विक्रमादित्य शिवालय पर

आते हैं).

राजा०- पुजारी.

पुजा०- हां अन्नदाता.

राजा०- हमारी पूजाकी सामग्री लाओ.

पुजा०- पृथ्वीनाथ चंदन अक्षत धूप दीप नैवेद्य पुष्प गंगाजल सब वस्तु उपस्थित है.

राजा०- ऊपरको देखकर पुजारी यह श्लोक मंदिरके द्वारपर किसने लिखाहै हमारी नगरीमें ऐसा कौन दुखारी है.

माली०- महाराज एक परदेशी ब्राह्मण वैरागीकावेष कियेहाथ त्रिशूल अरु वीणा लिये यहां आया तोथा परंतु यह मुझे सुधिनहींकि किस समय यह श्लोक लिखा अरु कहां चला गया.

राजा०- पुजारी शीघ्र उसे ढूंढकर लाओ मैं स्थानपर जाकर और लोगोंकोउसके ढूंढनेके लिये भेजूंगा परंतु तुम भी ढूंढनेमें अत्यंत उद्योग करो क्योंकि तुमने उसे भली भांति देखा है (यह कह राजा वीर विक्रमादित्य राजमंदिर को जाते हैं अरु यवनिका गिरतीहै).

इतिश्री माधवनल कामकन्दला नाटक शालिग्राम वैश्यकृत प्रथमो गर्भांक सम्पूर्णम्

द्वितीयगर्भांक

स्थानराजावीरविक्रमाजीतकीसभा

(सब सचिव सेनापति सभामें बैठेहैं राजावीरविक्रमादित्य आतेहैं).



राजा०- आजमें शिवालयमें शिवका पूजन करने गयाथा देखातो एक श्लोक शिवालयपर लिखाहै उसको पढ़कर मेरा चित्त अत्यंत चकित हुवा ऐसा कौन मनुष्य हमारे नगरमें है जिसपर ऐसी भारी विपत्तिहै अवतुम सव सज्जनोंको यह आज्ञा दीजातीहै शीघ्र जाओ अरु जहां कहीं वह वियोगी मिले उसका ठिकाना लगाओ जोकोई उस विरहीको ढूंढकर मेरे पासलावेगा उसको एक लाख रुपैयेका पारितोषिक दिया जावेगा जवलौंउस वियोगीको अपने नेत्रोंसे नदेखलूंगा तवलौंभोजन नहीं करूंगा यह मेरी सत्य प्रतिज्ञाहै.

मंत्री०-हे दीनदयाळ आप थोडीसी बातके लिये इतना संदेह क्योंकर तेहो मैं अभी बडे बडे चतुर वसीठों को ढूंढने के लिये भेजताहूं.

राजा०- अच्छा शीघ्र भेजो.

मंत्री०-हे वसीठोंमें आज तुम्हारा उद्योग देखूंगा तुम कैसे परिश्रमी अरु चतुरहो जो कोई उस श्लोक लिखनेवाले उदास का खोज लगावेगा एक लक्षका पारतोषिक पावेगा.

वसी०-चलो भाई प्रथम वन उपवन ढूंढें.

दूस०व०- अच्छा भाई तुम वन उपवनको जाओ हम तो पहिले नगरके घरोंमें ढूंढेंगे.

वसी०-अरे मूर्ख तू क्या जाने उदासी भी कहीं नगरमें आतेहैं उनको तो सदा वनही अच्छा जान पडताहै.

राजा०-हे भानमती ज्ञानमती तुम दोनों ढूंढने जाओ तुम्हारी बुद्धि वियोगी पर भली भांति पहुंचतीहै.

दोनों०- अच्छा महाराज आपका राजसमाज परिपूर्ण रहै हम दोनों जातीहैं अरु उस वियोगीको ढूंढकर अभी लातीहैं यह क्या विचारहै हम आकाश अरु पाताल से मनुष्यको ढूंढकर ला सक्तीहैं आप संदेह न कीजे. (दोनों गईं).

भान०- चलो सखी प्रथम शिवालयमें चलें वहीं ठीक ठीक ठिकाणा लगेगा परंतु तू मालती उद्यान ओर ढूंढती आ.

ज्ञान०- सखी यहां अधिक परिश्रमका कामहै जो वह उदासी मिलगया तो पारतोषिक भी पूराही मिलेगा.

भान०-यह बात तो तेरी सब सत्यहै परंतु मैं भी अपने करतव्य

में गई न करूंगी.

ज्ञान०-प्रथम मैं विहारकुंजमें गई फिर चंदनवन ढूंढा केश रवाटिका अरु मोतीबागका एक एक भवन देखा चं पावाडी अरु मालतीलताको भिन्न भिन्नकर खोजा जब कहीं उसका खोज नलगा तो हारकर तेरे पास आ ईहूं.

ज्ञान०-देखतो वह कोन मनुष्य अशोक वाटिकामें अशोक वृक्षके नीचे शोकवंत सा बैठा कामकंदला कामकंदला रट रहाहै वोहीतो नहोय.

भान०-सखीलक्षणोंसे तो एही विदित होताहै कि वोहीहै क्योंकि-

दोहा

तन दुर्बल आँखियां सजल गहबरलेत उसास
चित उचाट तन चटपटी रंचक रक्त न मांस ॥१॥
लोचन गोरोचन सरस आनन हरद समान
तन दुर्बल सांसानि विपुल विरहीजन सो जान २

ज्ञान०-चलो सखी उस्से कुच्छ वार्तालाप तो करें होनहोयह वोहीहो.

भान०-बहुत अच्छी बातहै मेरी इच्छाभी एही है.

ज्ञान०- सोरठा

हे विरही द्विजदेव कृपादृष्टिकरि देखिये
कहिसमझावो भेव जिहिंदुख सबजगसुखतज्यों

हे उदासी किसके वैरागमें सब सुख संपतिको त्याग वैरागी वन वन वन घूमते फिरतेहो अपने हृदयकी पीर वर्णन करो शरीर दुर्बल बना रक्खाहै नेत्रोंसे नीरकी

नदी वह रहीहै तनछीनहै मुख मलीनहै शोकके समुद्र मेंडूब रहेहो इसका क्या कारणहै.

माधो०-हे बाला तू कौनहै जो हमारी विपत्तिका वृत्तांत बूझतीहै.

ज्ञान०-दुखीका वृत्तांत कोई दुखियाही बूझेहै.

माधो०-नेत्रोंमें जलभरकर हे बाला जबसे कामकंदला प्यारी इननेत्रोंसे न्यारीहुईहै तबसे खानपाननिद्रा सुख सब जातारहा पराई पीरको वोही जानताहै जिसके मनमें पीर होतीहै.

ज्ञान०-हे भानुमती मुझसे इस वियोगीकी विथासुनी नहींजाती अरु खडाभी नहीं हुवा जाता इसकी विरह भरी वातें सुन सुन मेरा हृदय भरा आताहै अरु रोमांच खडे हुए जातेहैं.

(गदगद कंठसे बोली) हे विप्रनगरको पधारिये)

माधो०-क्यों किसकारण हमको नगरमें लिये चलतीहो

ज्ञान०-हम राजा वीरविक्रमाजीतकी दासीहैं तुमनें जो शिवालयमें श्लोक लिखाथा उसको देख राजा वडे दुखीहुए उसी समयसे राजाने राजकाज छोड दियाहै अरु यह प्रण कियाहै विना उसके देखे अन्नपानीन खाऊँगा सैंकडोंप्रतिहार तुमको खोजते फिरतेहैं अरु हमको भी तुम्हारेही ढूंढनेके लिये भेजाहै अब आप कृपाकर केशीघ्र राजाके पास चलिये परमेश्वरने चाहा तो राजा तुम्हारे मनका मनोरथ पूर्ण करेगा.

माधो०-हे वाले चलोमैं तुम्हारे संग चलताहूं.

(दोनों दूतिका माधवनलको साथले राजावीर विक्र-

माजीतकी सभामें आतीहैं अरु यवनिका गिरतीहै)

इतिश्री माधवनल कामकंदला नाटक द्वितीयो गर्भांक सम्पूर्णम्

तीसरा गर्भांक

स्थान राजा वीरविक्रमाजीतकी सभा

(राजा सभामें विराजमानहैं माधवनल हाथमें त्रिशूल कांधेपर वीणा धरे दूतिकाओंके संग राजाकी सभामें आताहै अरु उसके रूपको देख सब सभाके लोग चकित होतेहैं).



भान०-हे पृथ्वीनाथ यह वोही वियोगी ब्राह्मणहै जिसने शिव मंदिरमें श्लोक लिखाथा आपकी आज्ञानुसार सभामें विद्यमानहै.

राजा०- हे द्विजदेव प्रणाम.

माधो०- पृथ्वीनाथकी जय होय.

राजा०- आसनपर विराजिये (माधवनल बैठताहै) कोशाधीश भानमती ज्ञानमतीको एक लक्ष लेके कोष से देदो.

राजा०- हे द्विजदेव शिवके मंदिरपर श्लोक आपहीने लिखाथा.

माधो०- हां महाराज वह वियोगी मैंहीहूं.

राजा०- देखो मंत्री इस ब्राह्मणका शरीर विरहानलने कैसा दग्ध कियाहै इस विरहकी आगने लक्षों मनुष्योंके तन जार जार छार कर दिये (अहो वियोग तुझको बारंबार नमस्कारहै.)

मंत्री०- हां पृथ्वीनाथ सत्यहै यह वियोग बुरी वस्तुहै.

राजा०- हे विप्र मेरेलिये जो आज्ञाहो सो कार्य करूं धन्यहै. मेरा भाग्य जो तुमने मुझको दर्शन दिया प्रथम तो आप अपना नाम ग्राम वर्णन कीजे फिर वह इतिहास कहिये जिसके नेहमें देह गेहका सब सुख संपत्ति त्याग वैराग लिया ईश्वर आपकी आशा पूर्ण करेगा.

माधो०- हे राजन् माधवनल मेरा नामहै गंगातट पुष्पावती नगरीका निवासीहूं चारवेद षट शास्त्र अष्टादश पुराण सांगीत सामुद्रिक ज्योतिष कोक काव्य पिंगल धर्मशास्त्रका वक्ताहूं चौदह विद्या चौंसठ कलाका जाननेवालाहूं.

सोरठा

सबगुण अवगुण होय करताजब निफलकरै

चलै न चतुर इकोय होय वही जो विधि रचा

पुष्पावती नाम एक नगर है गोविंदचंद्र वहांके राजा का नाम है वडा ज्ञानी अरु विवेकी है विधिकी गतिसे विवेकी वन मुझे अपने नगरसे निकाल दिया तवमें अति उदास हो कामावती नगरीमें पहुंचा तहां काम सेन नाम राजा पूर्ण प्रतापी चौदह विद्या निधान सकल गुण खान परम पुण्यात्मा और वडा धर्मात्मा है उस नगरमें एक कामकन्दला नाम वेश्या रूप गुणसम्पन्न चौसठ कलामें प्रवीन है उसके रूपका चमत्कार देख सव गुण वुधवल चतुराई को विसार यह खंजन रूपी नेत्र उसके रूपके जालमें फंस गये सो चातुरपातुर एक क्षणको चित्तसे नहीं विसरती आठ प्रहर उसीका ध्यान रहता है ऐसा सुंदर रूप विधाताने उसे दिया है कौन वर्णन करसके वह मृगनैनी नेत्रोंमें पैठकर मेरा मन निकालकर ले गई अरु मेरे नेत्रोंने उस मनोहर मूर्तिको हृदयमें वसालिया है इसी आसरेसे यह प्राण देहसे नहीं निकलते कि प्यारीकी मनमोहनी मूर्ति हमारे निकट विद्यमान है अव वारंवार आपसे यही प्रार्थना है जो तुमसे हो सके तो कामकंदलाको मंगादो अरु जो यह काम आपसे नहो तो निषेद करोमें और ठौर याचना करूं.

(ब्राह्मणकी वात सुन राजाका चित्त वहुत चक्रित हुवा अरु अचंभेमें आगया है परमेश्वर ऐसे ऐसे मनुष्य भी जगत्में विद्यमान हैं).

राजा०- अहो विप्र जगत्के पूज्य सर्वगुण सम्पन्न रूपरा

शि त्रिभुवनके मोहन वशीकरण तुमहो तुमको कौन वशकर सक्ताहै यह मन माणिक सर्व शक्तिमान परमात्माके ध्यान करनेके योग्य था सो तुमने परायेहाथ डालदिया उसके वियोगके वशमें पड सुखको त्याग दुःख ग्रहणकिया इसमनका हृदयमें वासहै नेत्र मुख श्रवण इनकारोंकना अवश्य उचितहै.

माधो०– हे राजन् यहमन जो अपने वशमें होतो कुछकिया जाय यहतो दुष्ट बडा बलिष्टहै नेत्रढीठ इसके बसीठहैं मनको दूसरेके जालमें डाल आपही व्याकुल हो जलकी धार वहातेहैं जबसे कामकंदलाको देखाहै तनमनकी सुधिनहीं मित्रके वियोगका महा कठिन शोकहोताहै जिसको मित्र वियोगका दुख व्यापा होगा सोई जानताहै.

राजा०– हे ब्राह्मण तुम ऐसे पावन पवित्र हो वेश्या कासंग करतेहो तुम्हारी पूजा तो जगत् करताहै तुम गणिकाकी पूजा करते हो वडे आश्चर्यकी बातहै जबतक गांठमें द्रव्यहै तबहीतौ वेश्याकी प्रीतिहै औन को यह वैरीसे अधिक वैरी किसीकी मीतनहीं यह कनेरके पुष्पके समतुल्यहै रूपरंग सब सुंदर परंतु सुगंधका नामभी नहीं अरु इनके मिलनेसे अत्यंत हानिहै.

कवित्त

कायासों कामजात गांठहूंसोंदाम जातहु
यशको नामजात रूपजात अंगते,उत्तमस
व कर्मजात कुलकेनिजधर्मजात गुरुज

नकी शर्म जात अपने चित भंगते। रागरं
गरीतिजात ईश्वर सों प्रीति जात सज्जन
सों प्रतीति जात मदन की उमंगते। सुरपुर
को वास जात भक्ति को निवास जात पुण्य
को प्रकाश जात गणिका के संगते ॥१॥

विदू०-यह बात तो हमने भी बडे बडे ध्वजाधारी पंडितोंसे
सुनीहै वेश्याका विश्वास करना चतुरोंका कामहै
यह तो मूर्खोंहीको लूटखातीहै जैसे यह मूर्खानंद ए
कही दृष्टिके मारे सारे घर बारको त्यागवैरागले लि
या हमसे नहीं बूझते हजारों वेश्याओंके घर बरसों-
लोंरहे अरु तबला बजाया परंतु हमपर कोई छिना
लनरीझी हमनेभी किसी रांडको मुँह न लगाया लु
डिया डोरालिये पीछे ही फिरती रही हमतो इनके चाल
चलनको पहलेसे जानेथे जब हमारे पिताके घर
में पांचसौ छः सो वेश्या रहती थीं.

कवित्त

भेटतही चाहैं भेंट फेरताकी टोहैं फेंटलेटल
ट जात साथहाथन बगादेहैं, काहूसेझगादे
कहैं अँगिया रंगादेकहैं भूषण मँगादेकहैं
बसतर मँगादेहैं। कामीजन अंधजनि फंसो
गणिकाके फंदऐसी बिभिचारिनजो प्रीत
मको दगादेहैं कामको जगादे तन व्याधिको
लगादेलै मंगादेलै मंगादेकरैं रातदिन तगा
देहैं ॥१॥ ॥१॥

माधो०-हे राजन् प्रीतिकी रीति अति विचित्रहै देखो

पुष्पलता नहीं विचारती कि कीकरका वृक्षहै वा चंदनका वृक्षहै नारी नहीं जानती यहलीनहै वा कुलीनहै हाथी श्राकको खाताहै चंदनको नहीं खाता पपीहा सात समुद्र अरु सोनभद्रसेनदको छोड स्वातकी बुंदको रटताहै चकोरकी प्रीति चंद्रमासेहै सूर्यसे कुछ प्रयोजन नहीं हे नृपराज जो जिसके मनमें रमाहै वह उसीमें आनंदहै मीन नीरहीमें सुखीहै क्षीरसे उसका चित्त संतुष्ट नहीं होता

दोहा

जिहिं कर मन रम जाहि सन बोही वाको राम
जैसे किरवा आकको कहा करै वसि आम

राजा०-हे द्विजदेव अमूल्यसे अमूल्य जो वस्तु चाहो सो हमसे लेलो उत्तमसे उत्तम ब्राह्मणकी कन्यासे विवाह करलो परंतु गणिकाकी प्रीत मनसे त्याग नकरो क्योंकि वेश्याकी प्रीतिका विश्वमें कोई विश्वास नहीं करता.

माधो०-हे नृपेंद्र मैं तो उसकी प्रीतिसे भलेही हाथ धोवैहूं परंतु यह मन तो मेरे वशमें नहीं उसे तो कंदलाने प्रथमही फांस लिया रुधिर मांस वियोगने सोख लिया एक तनमें स्वास शेषहैं सोभी जबलोंहैं तबलों मन आशा नहीं छोडताहै.

दोहा

जबलों मुक्ति न जीवकी स्वर्ग नहीं विश्राम
तबलों रटौं विहंग ज्यों कामकंदला नाम १
प्रीति इक अंगी नहिं तजत मीन पतंग चकोर
सत्य प्रीति दुहुँ तन तजे असको दुसह कठोर २

कोटि जन्म किन तप करै नेह न व्यापै देह
परै वज्र तेहि हियेपर तजै जो पूरण नेह ३

नर पशु में अंतर यहै मनुज कहै पशु नाहिं
प्राण देत मृग बीन पर प्रीति अधिक मन माहिं ४

ब्रह्मज्ञान जानत सोई नेह चिन्ह जेहि अंग
गुप्त प्रगट सब लखपरत जब झलकत तन रंग ५

राजा०-(मनही मनमें) स्नेह तो ब्राह्मणके हृदयमें अचल पाया जाता है आगे जो विधाताकी इच्छा परंतु मन से आश नहीं तजे करता सब संयोग बना देता है (जो जो बात राजा ब्राह्मणसे बूझता था वह उत्तर समासम देता था) (चरण छूकर) हे ब्राह्मण मैं ब्राह्मणोंका दास हूं जो आपकी इच्छा हो सो मांगो विधाता सब मनोर्थ आपका पूर्ण करैगा मुझे किसी तरहका तुमसे दुर्भाव नहींहै-

माधो०-हे महाराज कामकंदलासे अधिक कोई वस्तुकी मुझे कांक्षा नहीं जिसके कारण मैंने अपना धन धाम लुटाय रक्तकी धारनेत्रोंसे वहाय तन सुखाय उदासी बन बन बन फिरा आपसे बन पडै तो उस बनितासे मेरा बानक बनादो मैं क्या करूं मुझसे कुछ बन नहीं पडता.

दोहा

मम अँखियनको पंखबल जो देदे करतार
मनहरणी छवि मित्रकी उडि देखौं यक बार

राजा०-हे द्विजराज दशदिन और व्यतीत करो मैं कामसैन पर चढाई करूंगा अरु उसको पराजय कर कामकंदला तुमको दिलादूंगा निसंदेह रहो किसी भांतिकी चिं

तानकरो राजाको बाँधकर तुम्हारे सन्मुख खडा करदूंगा जो तुम्हारी इच्छाहोसो करना अब रात्री हो गई आपधि श्रामकीजे (अरुराजाराजभवन में पधारते हैं अरु माधवनल सोता है अरु पलंगपर पडा पडानैपथ्य में यह गीत गारहाहै)

माधो०- गजल

अरी कंदल अरी कंदल अरी कंदल अरी कंदल
मुझे क्या कर दिया तैंने न सोते कल न बैठे कल १
कभी सूझे है बनमें बैठकर कर मित्र का सुमरन
जो बैठूं तो यह सूझे है कहीं को चल कहीं को चल २
अजब चक्कर में डाला है न कहने का न सुन्ने का
जो कहता हूं किसी से कुछ वह बतलाता मुझे पागल
जिस घडी भोली भोली शकल तेरी याद आती है
कलेजा थाम रह जाता हूं दोनों हाथों को मलमल ४
देह सब सूख कर कांटे की माफिक हो गई मेरी
तंग हूं जिंदगानी से कठिन है काटना पल पल ५

इति श्री माधवनल कामकंदला नाटक तृतीयो गर्भांक सम्पूर्णम् ॥३॥

चौथा गर्भांक

स्थानराजभवन

(राजा प्रातःकालउठतेहैं अरुमंत्रीको बुलाकर अन्योत्तम वारांगनाओंका नृत्य रचाया जाय मंत्री सब नगरकी पातरें बुलाताहै अरु अद्भुतनाटक कराताहै)



मंत्री०-महाराज नाटक होरहाहै चलिये देखिये

राजा०-हे ब्राम्हण जबलौंसेनापति सैनाइकट्ठीकरे तबलौं तुम नाटकालयमें गणिकाओंकी निपुणाई अरु चतुराई देखो

(राजा अरुद्विजराज सभामेंगये महाराज नृत्यदेखिये कैसी कैसी सुंदर वेश्या नृत्यकर रहीहैं)

दोहा

अतिस्वरूपवहुगुणभरी नवयोवनकटिछीन
रागरंगसवचातुरी रूपविधातादीन ॥१॥

इनकारहस्य देखिये यह सुंदर नाटक आपहीके लिये र

चायागयाहै सब सोचसकुच विसार यह नाटकाकार दे रिवये

माधो०- हे राजन् नृत्य कोन देखै मेरे नयनतो कामकंदला के फंदमें फँस रहेहैं

दोहा

नृत्यगीतगुणरूपसब मोहिंकंदला नारिं
सो नयननमें बसरही दोनोंतनमनडारि

सोरठा

विधिजडियाअपहाथ सत्यप्रीतिकंदलजडी
मनमाणिकतिहिसाथ जड्योसोकैसेउच्चटे

महाराज यह तो पच्चीस सोहै परंतु पच्चीस करोडमें भीउ सके जोडकी दूसरी न निकलेगी विधाताने वहएकही रचीहै

कवित्त

गतिगजराजकेसीकटिमृगराजकैसीहृय
केसो घूंघट ओहरिणकेसेनैनहैं।अलिकेसे
केश औरकीरकेसी नासिकाहै कपोतकेसो
कण्ठ औरकोकिलासेवै नहैं।कमलकेसेच
रणऔ अंगुरीकुसुमरंगचम्पकतनवरण
गंधजूहीजैनहैं।एडीनारंगीसी उरोजश्रीफ
लसे बिम्बासे अधरदंत दाडिमाविजैनहैं॥१॥

ऐसी ऐसी करोड स्त्रियोंका रूप लेकर विधाताने इसके लालित्यपद बनायेहैं मेरा मुख इस योग्य नही जोउसके रूपकी लावण्यताकी शोभा वर्णन करसकूं परमेश्वरने जगत्में वह एकही रचीहै.

राजा०-(मनही मनमें) यह ब्राह्मण तो उसीके रंगढंग परमत्त वालाहै इसके चित्तपर दूसरी वाला कयचढसक्तीहै जो इसका उपाय आज नहुआ तो नजानिये कलको क्याहै जो यह ब्राह्मण मरगया तो वृथा ब्रह्महत्याका भागी होना पडैगा (माधोसे) अच्छा महाराज धीर्य धरिये वहुत शीघ्र आपके कार्यका प्रयत्न किया जायगा

माधो०-हे राजन् आपने मुझसे यह वात नबूझी किकामसेनने तुझे किस अपराधपर निकाल दिया सो अपनीव्यथामें आपही अपने मुखसे वर्णन करताहूं

चौपदी

एकदिनकामसेननृपराई।नाटकरच्येउपरम सुखदाई।नाचतकामकंदलावाला।भ्रमरएक आयोतेहिकाला।कुचकेअग्र सुबैठेउआई पवनतेजतिनदियोउडाई।मानोसुदितब्रह्म करगही।सबसांगीतकीकरसपढी।गुणअरुरूपविधातादियो।शिरसकाढिताहिको कियो।ताहिरीझमेंसर्वसदियो।राजारक्तघूंटभरिपियो मूरखराबनकुछमहिचाना भयोक्रुद्धकुछ भेदनजाना।गुणअवगुणकुछ नाहिविचारो।तुरतदियोमुहिदेशनिकारो अवहौंशरणतुम्हारीराजा।जोवनपडैतोकीजेकाजा।

दोहा०साहसीकपरदुखहरणमेंजुसुनोमहाकान जोशकबंधीचक्कवेदेहुनेहकोदान १

राजा०-हे द्विजदेव आप कोई सन्देह नकीजे परमेश्वरने चाहा तो तुम्हारा कार्य वहुत शीघ्र होगा परंतु आपके

अवलोकनार्थ यह सुंदर नाटक रच वडे वडे गुणी गायन चातर पातर बुलाईहैं जिनका रूप देख रति अरु रंभाभी अचंभा मान लज्जितहो इनका नृत्य अवलोकन कीजे

दोहा

इंद्र अखाडे ते अधिक रूप नृत्य गुण राग
जेन निहारैं नयन भर तेनर परम अभाग

माधो०- सोरठा

जो नहिं होत अभाग तौ कंदल क्यों बिछुरती
रूप नृत्य गुण राग बिन कंदल विषदल भये

दोहा

जिहि कारण सब सुख तज्यौ ताही सों मन लाग
जो मूरति चित में बसै ताही को वैराग
नहीं कंदला सी कहीं दृष्टि परी मोहिं और
पश्चिम दक्षिण पूर्वगिरि ढूंढ फिरो सब ठौर

मंत्री०- पृथ्वीनाथ यह ब्राह्मण तो पूराही प्रेमी निकला स्वप्नमे भी कामकंदलाको नहीं भूलता इसने कामकंदलाको ऐसा मीठा समझाहै दिनरात कंदला कंदला करताहै जोइ संके काममें देर करी अरु यह मरगया तो वृथा कलंक लगेगा अरु ब्रह्महत्यागले पडेगी- अबसेनापतिको बुलाय झटपट कटक सजाय युद्धका सामान कीजे ।

राजा०- मंत्री इस वियोगीका वियोग देख देख मेरा चित्त व्याकुल हुआजाताहै अरु जबसे इसके विरह भरे वचन सुनेहैं मेरी नींद भूख सब जाती रही जबतक इसका काम नहोजायगा दूसरा काम मैंनहीं करनेका यह मेरा संकल्पहै परंतु अबतो संध्या समयहुई कुछ हो नहीं

सक्ता प्रातःकाल सबसामान किया जायगा (नाटक विसर्जन होताहै अरु राजा रनिवासमें जातेहैं यवनिका गिरतीहै)

इतिश्री माधवनलकामकंदला नाटक चतुर्थोगर्भांकसम्पूर्णम्

पाँचवाँगर्भांक

स्थान राजावीरविक्रमाजीतकीसभा

(राजा सिंहासनपर विराजमानहैं मंत्री सेनापतिसब सन्मुख खडेहैं)



राजा०- सेनापति

सैना०- हां पृथ्वीनाथ क्या आज्ञाहै.

राजा०- सब नगरमें डौंडी फिरवादो जितने शूर वीरसावंतयों

धा वलवान हैं सब अपनी अपनी चतुरंगिनी सेना सजा य एकत्र करें.

सेना०- हे प्रजापालक सबसेना उपस्थित है.

चौपाई

देशदेशके भूपति आये। छप्पनकोटि निशान बजाये, साजे रथ मांजे हथियारा। धनुटंकार करें असवारा॥ पीपी भंग तुरंग नचावत। अपने अपने रंग दिखावत सबै लोहके चावनहारे। उमगि रहे कर लिये कटारे॥ आज्ञा होय चढें तेहि देशा। जहां कहूं को कहै न रेशा॥

नब्बे सहस्र कुंजर बीस लाख घोडे बारह लाख ऊंट अठारह सहस्र खिच्चर चालीस सहस्र पैदल दश सहस्र सैनापति

दोहा

अगणित रथ कंचन मंढे जोते धवल तुरंग
पायक पैदल को गने हाट बाट बहु संग १

राजा०- सैनापति सैनाको आज्ञा दो कामावती नगरी को चले (दलके चलते ही धरती धसकने लगी धौंसा बाजने लगा तुरंगोंके खुरोंसे उडि उडिकर धूरि आकाशमें छागई शूरवीर घोडोंको नचाते कुदाते मारू राग गाते रणसिंहा वजाते चले जाते थे)

अरु एक हाथीपर राजा वीर विक्रमाजीत माधवनल को संग लिये दश सहस्र सैनापतियोंके गोलमें चले जाते थे अरु आगे आगे एक घोडेके ऊपर कवीन्द्र यह

कवित्त पढता चला जाताथा.)

कवित्त

धरधर हाले धराधर धुन्धकार नको धीरन धरत जे धरीया बलवाहके। फूटन पाताल ताल सागर सुरवात सात जाते हैं उडात व्योम विहंग वलाहके। झालरि झकत झलकत झपी फील नपै वीर विक्रमजीतके सुभट सराहके। अरि उर दाह शोर परत संसार घोर वाजत नगारे आज विक्रम नरनाहके ॥१॥ श्वेत रथ श्वेत वस्त्र श्वेत ध्वजा श्वेत क्षत्र श्वेत हैं तुरंग लखि भूप लगे लरजन। ज्ञानमें गणेश अस्त्र शास्त्रमें महेश सम पौरुषमें रामसे शत्रुदल विसरजन झलाझलकत कत मार्तंडके समान तेज जाकी हांक सुन मुख फेरलेत अरिजन। रोदाके वजत शूरवीर संग्राम तजें गंधर्वसेन तनयकी सुसिंह केसी गरजन ॥२॥ ॥२॥ ॥२॥

युद्धको चढत राउ बुद्धको सक्रुद्ध दल चहूं ओर संकनके पसरे पसारेसे। भनत कविंद्र आगे पहरे धुजारे घोर धहरे नगारे जात गिरिवर गारेसे। धसके धराके दाढ कालके करा केहोत सुनि सुनि आवत दिगपालन तमारेसे फेनीसे फनीके फन फेलि फेलि फूटे छूटे उछरि उछरि परें सिंधुमें फुहारेसे ॥३॥ ॥३॥

धुकत अचल अरि लुकत उलूक नलों मु

कृत किलीनके धुकारनदवेशाके। भनतक
विंद्रतहांपेशाके मवासीकोनलरवत अवा
से अलकेशाके लकेशाके। जीतके जहूरसा
जें फौजनके भयबाजें भारे महाराजकेस
मारेवलवेशाके। दरजें दिल्लीके उमरायन
के उरफारें गरजें नगारे जबविक्रमनरेशके ४
जादिन चढत दलसाज अवधूतसिंहतादि
नदिगंतनलों दोंनदाटियतहें। प्रलयकेसी
धाराधराधमकेनगारा धूरिधारासोंसमुद्र
नकीधारापाटियनेंहैं। भनतकविंद्र भुवगो
लकोलहहरतकहरतदिग्गजमगाजकाटि
यतहें। दाविदाबिकचरिफनीशफनमंडल
मेंकमठकीपीठमें पिठीसीबाटियतहें ॥५॥
जिनफनफुनकारउडतपहारभार भूतलह
लतपीठकमठविदलिगो। जिनविषज्वाल
ज्वालावलीलवलोनहोत जिनझारिदिग्ग
जचिकरमतिझलिगो। कीनो जिनपानपय
पानसो जहानकुलकूरमउछलिजलसिंधु
खलहलिगो। खग्गखगराजमहाराजनृ
पराजवीरसांपनिशत्रुसेनाकोपलमेंनिग
लिगो ॥६॥ ॥६॥
रनवन भूमें तो भुजलतिकापेचढीकढीम्या
नवांवीतेविषविषभरीहे। जारिपुकोडसेसो
तोतजे प्राणताही छिनगाडरू अनेकहारेझा
रेंतेनझरीहें। भनतकविंद्र राउ बुद्धअनुरुद्ध

तनैताकोवीरयुद्ध एकतेंहीवशकरींहैं।तर
लतिहारीतरवार भन्नगीकोकहूं मंत्रहैं नतं
त्रहैनजंत्रहैंनजरीहैं ॥८॥

ग्रामकेमनुष्य॰- (अपने आपको कालके गालमें समझड
रते कांपते कविंद्र रायसे आय आय यह वुझने लगे)

ग्रामवासी॰- **कवित्त**

चारोंओरकारीकारीघटासीचलीआवत
धसकनहैं धराअरुशेषकपकपानोंहै।तोपन
के शब्दहोनकेधोंघनगर्जरहेशस्त्रहैं किंच
पलाकछुपरतनाहिंजानोंहै।कोपकीदृष्टिसे
जाहिदेखेंएकवारछिनकमेंछारकरधूरिसें
मिलानोंहै।कालकोकालमहाकालविकरा
लरूपविक्रमभुवालआजकापरीरिसानोंहै ९
घोडनकीटापनकीधूरिसेआकाशछयोभ
योहै अंधेरोसानेंडहूहिरानोंहै।धसकनल
गीधरा औरशेषसन्नाटे भंरेदिग्गजडिगमि
गे और कूर्म कुलसुलानोंहै।देशदेशकेनरेश
भाजेकरविभ्रंवेषकोउवनमाहिंकोउगुफामेंछि
पानोंहै।कालकोकालमहाकालविकराल
रूपविक्रमभुवालआजकापरीरिसानोंहै १०
धमधमधोंसाहोतचमचमलोहाहोतझूम
झूमतमकनयोधनकोजालहै।तैसियपरी
है गजघोरनकीरवरभरव्हेभयोमलीनरज
से सूरजको भालहै। चक्रवती विकलउसासें
कहेंभरिभरिसाजदलदौरो आजकापैविक्र

मालहै।करमहिरानो काकोकोनपेरिसा
नोदैव नजानियैकापर आजकिल्ल किलानो
कालहै ॥११॥ ॥११॥

कविंद्र०-कामावती नगरीमें कामसैनराजाएक
द्विजकी अविज्ञाकरीनेकनाडरानोहै।विक्र
मनेदूत भेजताको समझायो वहु कामसै
न मूरख नाहिं कहा एक मानोहै। फिरतो द्वैकु
द्व युद्ध करिवेकी मन मेंठानि माधोके संगक
ट कलै के तहांजानोहै।कालके कोपकोठिका
नोहै चार दिवस विक्रमके कोपकोन एकक्ष
पाठिकानोहै ॥११॥

(दशोदिशाके राजा कंपायमानथे न जानिये किसपर कोपकी दृष्टि पडजाय जबदशयोजन कामावती रहगई त व राजा विक्रमने वहींडेरे डालदिये)

राजा०-मंत्रीचलो वेषवदलकर कामकंदला की परीक्षाले
मंत्री०-चलिये मैं उपस्थित हूं (दोनों घोडोंपर सवार होतेहैं अरु कामावतीमें आतेहैं) यवानिका पतित होती है

इतिश्री पंचमो गर्भांक सम्पूर्णम्

छठा गर्भांक

स्थान कामावती कामकंदलाका मन्दिर



राजा०-हे मंत्री मैंतो वैद्यबनूँ तू मेरा शिष्यबन कामकंदला
के मंदिरके नीचे पुकारैं

मंत्री०-परीक्षाकी विधितो ठीक ठहराई

राजा०-(आपही आपमंत्री संगमें) वैद्यहूं वैद्य सब रोगोंको
उपचार अरु विचारसें परिपूर्ण जादूटोना वियोगका
निर्मूलक पाहिले काम पीछे इनाम सबेरेसे शामतक
आरामकर सकाहूं अपने काममें चतुर अरु विलक्ष
णहूं

मदन०-मनोज मंजरी यहतो कोई बड़ाचतुर वैद्य जान पड़ताहै

मनो०-मायो इसको यहां बुलाओ कामकंदलाको दिखा
देवैं जो इसे अच्छी करदेतो इससे अधिक और क्या

कुसु०- इसको को रोग तो नहीं वियोगहे इसको वैद्य क्या करैगा.

मनो०- अरी यह वियोगका मंत्र यंत्र भी तो जानेहे.

कुसु०- अच्छाहे दिखादेखो कुछ हानि नहीं मेंतो दिनरात येही मनाऊंहूं किसी भांति प्यारीको शीघ्र आरामहो.

मनो०- अहो महाराज वैद्य राजजी कोमल चरण धरकर हमारा घरभी पवित्र करते जाओ.

वैद्य०- बहुत अच्छा क्या कोई तुम्हारे घररोगीहे

मनो०- हां महाराज हमारी प्यारी कामकंदला बहुत दिनोंसे दुखारीहे.

वैद्य०- चलो चलतेहैं तुम आगे आगे होलो (भवनमें आये)

मनो०- आसनपर विराजिये (बैठगये)

वैद्य०- इसका हाथ निकालो मुख खोलो (वैद्य राज हाथ देखतेहैं) इसको तो वियोगका रोग हमारी समझमेंआ

मनो०- हे कृपासिंधु इस रोगका कुछ यत्न भीहे.

वैद्य०- यत्न सबरोगोंकाहे परंतु इसके लक्षण कुलक्षण दृष्टि आतेहैं यह कुछ खाती पीतीतो होगीही नहीं दिन रात मुंहलपेटे मूर्छित पडी रहती होगी नकुछ कहती होगी नसुनती होगी

म० कु०- हां महाराजयेही सबलक्षणहैं जो आपने बताये अब हमको निश्चै हुआकि इसको आपके हाथसे आरामहो जायगा परंतु यह संदेह हमारा और दूरकरदो यह कबतक अच्छी हो जायगी

वैद्य०- यह तो बताओ इसको यह रोग कितने दिनोंसेहे अ

रुकेसे हुआ। आद्योपांत सब वृत्तांत सुनाओ

कुसु०-महाराज मनमोहन रूप धरे एक ब्राह्मणका लडका कहींसे आयाथा अरु माधवनल उसका नामथा नहीं जान पडा कि वह इंद्रथा या चंद्रथा रविथा या मदनथा सो इस के चित्तको चुराकर लेगया अरु कुछ ऐसी मोहनीसी डाल गयाहै उसी दिनसे दिनरात वेसुध पडी रहतीहै और की सुनतीहै न अपनी कहतीहै भूख प्यास निद्रा त्याग दीहै आठपहर माधोहीका ध्यानहै

दोहा

भरि भरि ढारे नयन जल मीत वियोगिनि नारि
समझाई समझे नहीं रहीं सवै पचिहारि १

उसकी विरहानलमें अपने तनको जला जलाकर भस्म करदेतीहै एक वर्षसे इसकी येही व्यवस्थाहै

वैद्य०-हमने इसका सब भेद जानलिया घबराओमति यह शीघ्र अच्छी होजायगी औषधिकी परीक्षातो तुमको अभी दिखाये देतेहैं परंतु आठदिनमें अच्छीतरह चलने फिरने लगेगी जबतक अच्छा आराम नहो जायगा तबलों किसी वस्तुकी हमको कांक्षा भी नहींहै अब सब तुम यहां से हट जाओ हम इसका उपचार करतेहैं (सबहटगई) राजाने कंदलाके कानमें कहा माधवनल आयाहै परंतु दूसरेके यह बात प्रगट नहो किसी मुनीश्वरका वचनहै

श्लोक-षट्कर्णोभिद्यतेमंत्रस्तथाप्राप्तश्चवर्तया
इत्यात्मनाद्वितीयेनमंत्रः कार्योमहीभृता १

इसलिये यह बात गुप्त रखनी अवश्य चाहिये औरबातें करो

काम०- (नेत्र खोलबोलने लगी) प्राणनाथ कहांहै मेरे सन्मुख लाओ

वैद्य०-मैंने तो पहलेही तुमको समझा दियाथा किइस बातको प्रगट न करो तुम नहीं जानतीकि राजाका चोरहै आधा जाताहै धीर्य रक्खो परंतु यह बात दूसरा नजानै औरओर बातें करो

काम०-हे वैद्यराज मुझको आपका कहना सब भांति स्वीकारहै परंतु यहतो कहो वह बातहै तो सत्य

वैद्य०-झूठ सत्य सब प्रगटहो जावगा

काम०-जो मेरा मनोर्थ पूराहो गयातो जन्मभर आपका गुणन भूलूंगी

वैद्य०-हे कुसुमकुमारी तुम्हारी प्यारी तुमको बुलातीहै इस्सेबूझोतो कुछ कष्ट दूर हुवा या नहीं

मद०-धन्यहै धन्यहै आपके उपचारको जोइ नारी प्यारीका नयाजन्म किया.

वैद्य०-लो और जो कुछ कहनाहोसो कहलो फिर कुछ औरउपाय करें

मद०-क्यों महाराज अब क्या उपाय करोगे.

वैद्य०-दो घडी पीछे फिर इसका वही रंगहो जावगा

मद०- क्यों

वैद्य०-इस समय हमारे बटुवेमें औषधि एकही मात्राथी अब और औषधि बनेतो इसको भली भांति आरामहो

कुसु०-फिर वह औषधि कबतक बन जायगी

वैद्य०-दो तीन दिनमें

कुसु०-तुम बतादोतो हम बनालें

वैद्य०-तुमसे नहीं बनैगी हमबनादेंगे

कुसु०-आपठहरे कहांहैं

वैद्य०-वैद्योंका क्या ठिकाना कभी कहीं कभी कहीं जब औषधि बन जायगी हम आप आजायंगे अब विदा दीजे तुम हट जाओ तो मैं कुछ और युक्ति करता जाऊं सब हट गई हे कामकंदला तू किसके वियोगमें बौरी बनी पड़ीहै मा धवनलको तो छलबल कर एक स्त्रीने छलिया अब उसने उसे ऐसे जालमें डालाहै उसीके वियोगमें रात्रि दिन मतवाला बना घूमतारहताहै नजानिये क्याजादू कर दियाहै तू और पुरुषसे प्रीति क्यों नहीं करलेती

काम०-हे वैद्येंद्र समझकर बात कहो तुम्हारे मुखारविंदसे यह वचन शोभा नहीं देते चंद्रमा सहस्रों चकोरोंपर दृष्टि करताहै परंतु चकोर दूसरा चंद्रमा नहीं समझती

चौपाई

मैंमनद्विजहिदक्षिणादीना।देखततजोंनैनहूतलीना॥बोलौतासौंजोमनमाहीं॥जाको देखेनयनसिराहीं।तेहिबिनुजगतसूनसव भयो।मनधनजीवविप्रलैगयो॥सोप्रीतम दैगयोठगोरी।तजिगुणरूपभईहौंबौरी॥

दोहा

जेहिंमारगप्रीतमगये नयनगये तेहिराह।
कैसेदेखों औरको जहँ देखों तहँ नाह १

वैद्य०-(मनहीमन इसकी प्रीति ब्राह्मणसेभी अधिक है परंतु एक परीक्षा औरभी करलूं प्रगट सत्यतौ यहहै मैंतेरी प्रीतिकी परीक्षा करताथा सो तेरी प्रीति परिपूर्ण नि

कली धन्यहै धन्यहै तेरे सत्यशीलको तेरापतिव्रत धर्म बहुत पक्का देखा अबमैं सत्य सत्य बात तुझसे कहताहूं उज्जैन नगरमें मैंने माधवनलको देखाथा उसकीभी ऐसीही पूर्ण प्रीति दृष्टि आई दिनरात हाय कामकंदला हाय कामकंदला करता फिरताथा न कुछ खाताथा न कुछ पीताथा एक तेरे नामके आसरेपर जीताथा दिनआठ या दश हुए एक अद्भुत चरित्र हुवा उसे कहते मेरा हृदय विदीर्ण होताहै

काम०- हे वैद्य भूषण आपने क्या आश्चर्य देखा

वैद्य०- (नेत्रोंसे अस्रुधारा बहाकर) माधवनल मार्गमें कामकंदला कामकंदला करता चला जाताथा किसी मनुष्यने हंसिकर कह दिया अरे मूर्ख क्या कामकंदला कामकंदला करता फिरताहै कंदला तो मरगई यहबात सुन विरहानलकी तेजीमें उनमत्त हो एक पत्थरसे ऐसी टक्कर मारी उसी समय छटपटाकर मरगया कहनेके योग्य बात तो नथी परंतु आधीनतासे कहनी पड़ी

(यह बात सुनतेही कामकंदलाहकी बकीसीहोधरनपर पछाड खाय हायके करतेही मरगई सच्चीप्रीति इसीका नामहै)

वैद्य०- (आपही आप) इसको तो प्राण खोते एक पलभी नलगा हा ऐसेभी मनुष्य संसारमें हैं जो हाय करतेही प्राण छोडदें हायमें जिसके कारण सैना सजाय कर लायाथा सो सबकाममट्टी होगया अब कामकंदला कहांसे आवे हाय मैं अब उस ब्राह्मणको क्या उत्तर दूंगा

जो मैं जानता यह विरह दहीहायके करतेही प्राणत्या
ग देगी तो यह बात इस्से में क्यों कहता मैंने जान बूझकर
स्त्रीहत्या करी हे परमात्मा मुझ दुराचारीकी क्या गति
होगी.

स॰स॰-(जब कामकंदलाकी यह गति देखी तबतोलगीहा
यहाय कर छाती पीटने अरु शिर धुन)
हे प्यारी तू हमको अकेली माँझधारमें छोड़चली ह
म किसको अपनी प्यारी प्यारी कर पुकारेंगी हे काम
कंदला हमसे क्यों नहीं बोलती अब हमारा आदर स
न्मान कौन करेगा अबहम अपना प्राणघात करती हैं
हाय प्यारी हमारी सुनी न अपनी कही अबकौन हमारा
मनोर्थ पूर्ण करैगा.

वैद्य॰-चुपहोजाओ क्यों घबराती हो क्या तुमने इसे मरा जान
लिया विरहके मदमें मग्न हो गई है दिननिकलतेहीअ-
च्छीहो जायगी विरहकी तापसे नेत्र बंद कर मूर्छित
हो गईहै मैं औषधि लाताहूं तुम कुछ संदेह मत करो इ-
सके अच्छे होनेमें कुछ संदेह नहीं

दोहा

कालकूट ते कठिन है जिहिं व्यापे यह साल
यम नेरे आवत नहीं विरह काल को काल॥

जबलों मैं न आऊं इसका मुख मत उघाड़ना (यह क
ह राजा अरु मंत्री आधी रातके समय अपने करकेमें
आतेहैं अरु लोट पोटकर रात गमातेहैं मार्तंड उदय हो
ताहै अरु **यवनिका** गिरतीहै)

इतिश्री माधवनल कामकंदला नाटक षष्ठमो गर्भांकस-
पूर्णम् ॥६॥

सातवां गर्भांक

स्थान राजा वीर विक्रम के डेरे

(राजा वीर विक्रमाजीत का दरबार लग रहा है मंत्री सेनापति हाथ बांधे खडे हैं माधवनल पास बैठा है)



राजा॰–हे द्विजदेव कामकंदला तुम्हारे वियोग की आग में जलकर मरगई जिसके कारण नव्वे लाख सैना ले कर चढा था सो कार्य सब निस्फल हो गया.

माधो॰–हे राजन् यह बात सत्य है

राजा॰–भला यह समय झूठ बोलने का है

माधो॰–(चकित हो आपही आप) हाय प्यारी मुझे अकेला ही छोड कर चलदी हे विधाता और दुःखमें दुःख घावपर नोन लगाना यह शरीर ऐसे कठिन कष्ट सहने योग्य

तो नहीं था परंतु इस समय तू भी अपने करतव्य से मत चूक अरे निर्दयी कठोर चित्त हमारी प्यारी के प्राणांतक रने का एही दिन छांटाथा ले अन्याई वह प्राणभी अपने से तरख अबतो तेरे मनकी अभिलाष पूर्ण होगई और जो कुछ इच्छा शेषहो वहभी करले कभी पीछे मनमें पछतावा करे अरे अत्याचारी तुझको यह भी लज्जा नहीं आतीकि मरते को मारकर क्या शूरताहोगी (यह वचन कह उलटी पछाड़ खाय पृथ्वीपर गिरतेही प्राण त्याग दिये)

राजा०- मंत्री यह क्या हुआ ब्राह्मणने कामकंदलाका मरण सुनतेही देह छोडदी

मंत्री०- महाराज सच्चे प्रेमी पुरुष ऐसेही होते हैं

दोहा

दोंदाधीसुनिमालती अलिदाध्योतेहिंगांहिं
मालति विनुअलिनारहे अलि विनुमालतिनाहिं
आलम ऐसीप्रीतिकर ज्योंवारिज अरुबारि
वह सूखे वहनारहे मिटे मूलजलडारि

राजा०-हे सचिव अव मैं भी अपने प्राण नष्टकरूंगा क्योंकि प्रथमतो स्त्रीहत्या दूसरे ब्रह्मघातक फिरमेरा निस्तारा कैसे होगा मुझको कोई नर्क में भी चैन नलेनदेगा वहां भी मुझे प्राणीहत्यारा कहकर पुकारेंगे यह पापमेरा सहस्र जन्म पर्यंत भी मुचित नहोगा (आपही आप) हे बुद्धि जन्मसे तुझ को वेदशास्त्र धर्मकर्म्म के संस्कार कराये उस समय तू भी ऐसी निर्बुद्ध होगई रंचक मात्रभी दया न आई अरी दुष्टतैंने भी मेरा नर्कवास

ही चाहा धिक्कार है तेरे करतव्यको मैं यह नहीं जाने था कि तूही मेरे प्राणोंकी ग्राहक हो जायगी जो कुछ किया सो अच्छा किया तेरे ऋणसे भी एक दिन उद्धार होनाहीथा (प्रधानसे)

प्रधान-चंदन-अगर-देवदारु-पद्माक्ष-घृतादि म-गाय शीघ्र चिता रचो अब मुझको अपना प्राण रख ना पल पल भारी है अब मुझे कोई वस्तु अच्छी नही दृष्टि आती

मंत्री०-हे राजन् तुम किसलिये अग्निमें जलते हो ऐसी क्या बात है राजाओंकी आज्ञासे सैंकडों स्त्रीपुरुष मारे जा तेहैं राजा कहीं इतना क्लेश करतेहैं यहांसे उठिके च लिये रहनेदीजे चिताको नहीं तो सब राजा अरु कट क क्षणभरमें शिर पटक पटक मर जाँयगे सब सैना में खलबली पड रही है शत्रु शिरपर गाजरहा है देश सूना पडा है इस बातको तो कोई न जानैगा परंतु देशदे शमें यह दुरनामता होगी कि कामसेनको जीत नसके भय मानकर भस्म होगये बडी लज्जाकी बात है ऐसी ऐसी हत्याओंका राजाओंको दोष नहीं

दोहा

जग समुद्र दुख सुख करण नर तिय मरैं अपार
राजन दुख व्यापै नहीं जिन्हैं भूमिको भार १

राजा०-हे मंत्री इस समयके चलनेमें धर्मकी हानि अरु चि त्तमें ग्लानि होगी सब संसार मरनेही के लियेहै क्या राजा क्या रंक सब कालके गालमें जाँयगे परंतु यश अपयश बना रहेगा बलि दधीचि हरिश्चंद्र दशरथ

करण की कहानी आजलौं प्रसिद्ध है रावण कंस दुश्शासन जिनका यश जगमें विख्यात है उनका जीवनभी मरणहीकी समतुल्य है अब तुम सब लोग मेरे धोरेसे हट जाओ मुझको जल जानेदो.

(गंगास्नानकर मोह ममताको त्याग अत्यंत दानपुण्य कर गंगाजल पी भास्करको नमस्कार कर चितामें बैठगया उस समय सब दलमें हाहाकार पडगया फूट फूट कर रोनेलगे)

मंत्री०-हे करतारतैं ने यह कैसी विपरीतिकी जो हमारे नरेश एक ब्राह्मणके पीछे चितामें भस्म हुए जाते हैं (लगे सबसैनप काष्ठभार मंगाय मंगाय अपनी अपनी चिता बनाने अरु रोने महा घोर रोनेका द्वंद्व स्वर्गलों पहुचा कि राजा वीर विक्रमाजीत जीताही अग्निमें भस्म हुवा जाता है अप्सरा परस्पर युद्ध मचानेलगीं राजा विक्रमादित्यको हम वरेंगी यह बात सुनि बैताल तत्काल दौडे जभी राजा चितामें आगलगानेको उपस्थित था दोनों बैताल आ पहुंचे राजाका हाथ पकड लिया)

बैता०-हे दीनानाथ तुम चक्रवर्ती होकर एक वियोगी ब्राह्मणके कारण अपना शरीर भस्म कर डालते हो बडे आश्चर्यकी बात है.

राजा०-मैनेतो बैठे बैठाये अपने आपको पाप लगालिया पहिले तो

।।४। कामकंदलाका वध किया पीछे ब्राह्मणका जीवलि
।।४। या अब मरनेसे अधिक कोई बात अच्छी नहींजा
।।४। नपडती

वैताल० ।।४। हे नृपेंद्र क्या तुच्छ कार्यके लिये अपने प्राण
।।४।। खोतेहो हम अभी अमृतका कलश। भर कर ला
।।४। तेहैं (गये अमृत लाकर) यह अमृत किसके मु
।।४। खमें डालैं

राजा०-।।४। प्रथम इस ब्राह्मणके मुखमें डालो (सुधाबुं
।।४। दके पीतेही माधवनल कंदला कंदला करता उठि
।।४। बैठा परमानंदहो कहने लगा)
(राजा चितासे उठि कहने लगा) तुम्हारेही प्रताप
से आज हमारा मुख उजियाला हुआ सब सैना आनंद
मयी हो गई

माधो०-मेरा चित्तउसी समय प्रफुल्लितहोगा जब कामकंद
ला जीजाइगी (अरु राजा आप अमृत लेकर कामकं
दलाके घर आताहै अरु बैतालोंको बिदा करताहै अरु
यवनिका पतित होतीहै)

**इतिश्री माधवनल कामकंदलानाम नाटक सप्तमो
गर्भांक सम्पूर्णम्** ।।७।। ।।७।।

आठवां गर्भांक

स्थान कामावती कामकंदला का मंदिर

(कामकंदला छपर खट में मूर्छित पडीहै सब सखी ख डी वैद्यकी राह देख रहीहैं)



मदन मोहनी यह रागिनी सबको सुनातीहै

वैद्य नहिं आयो होगई रात मोकोतो कुछ दृष्ट परतहै औरनयो उलपात चलकर नैदेखो कंदलकोकर तनकल सेबात १ स्वास चलतनहिं नारी बोलतशर्द परोसबगात मुरदाई छाई सब तनकाले परगये दात २ देखदेख कंदलकी सूरत जियघबरायो जात कैसी करूं जाऊंमैंकापै घर अँगनानसुहात ३ वैद्यराजहू घोरवादके भाजगये परभात सबलक्षण कंदलके मोको बुरे बुरे दिखरात ४

सबसखी रो-पीटती दोडी आई हाय कंदला अरी तु हसे तौबोल तुझको क्याहो गया सब संगकी सहेलियोंको अकेली छोडे देतीहै हाय हम किसको कामकंदला काम कंदला कहकर पुकारेंगी हे प्यारी अब कोन हमारा आदर सत्कार करेगा हाय अब कौन हमारे मनगुनकी बात बुझेगा हे प्यारी अब किसका हम सुंदर सुंदर शृंगार बनावेंगी हे प्यारी किसके ऊपर होलीमें गुलाल उडावेंगी किसको श्रावणमें काजरी तीजके दिन मलारें गाय गाय झूला झुलावेंगी हे प्यारी यह तुम्हारी प्यारी कुसुमकुमारी हाती पीटपीट उलटी पछाडें खातीहै इनको उठाकर क्यों नहीं समझाती हे प्यारी तू हमको किंचित्मात्र भी दुखी देखतीथी तो अपने उपरनेसे हमारे आंसू पूंछतीथी अरु गुदगुदाकर हमको हंसातीथी हाय अब ऐसी कठोर चित्त हो गई हमारी ओरभी नहीं देखती हे प्यारी यह श्याम सरोजनी अरु कुंदकली डीग फोड फोड रोरहीहै अरु शिरधुनि धुनि विलाप कर रहीहैं अरु हलाहलका कटोरा हाथमें लिये पीनेको विद्यमानहै इनका हाथ क्यों नहीं पकडती अब तुझको दईने ऐसा निरदईकर दियाह मारे प्राण खोने परभी तेरे हृदयमें दया नहीं आती हे प्यारी तेरे वियोगका ताप हमकैसे सहेंगी अरु अपनी बिपतिका वृत्तांत किससे कहेंगी हमारा धरणीपर धीर्यका धरिया अरु बातका बुझैया अब कोई नहीं रहा। हे प्यारी हमारा कानभी दुखेथातो तू आय सहाय करेथी अब हमारी सहाय कौन करेगा आकाशकी ओर देखकर हे ईश्वर हे निरंजन तुझको सब संसार दुखभंजन कहता

है तू कैसा दुःख भंजन अरु जनमन रंजन है जो हमारा दु
ख भंजन नहीं करता हमने सुना है तैंने गजको ग्राहसे ब
चाया द्रौपदीका चीर बढाया पांडवोंको लाखा मंदिरसे ब
चाया फिर हमको यह दुःख क्यों दिखाया है हे परमेश्वर
तू कैसा न्यायकारी है तेरे यहां किंचित्मात्र भी न्याय न
हीं किस अन्यायीने तेरा नाम न्यायी रक्खा है जो तू स
च्चा न्यायकारी है तो हमारी प्यारीको अच्छा कर अरु
हमारी भारी बिपत्ति हर उसी समय वीर विक्रमादित्य
वैद्यका रूप किये अमृत लिये आ पहुंचा

राजा०- कहो- कुसुमकुमारी तुम्हारी प्यारी कामकंदलाकी
क्या गति है

कुसु०- चलिये महाराज देखिये उसकी वही व्यवस्था है न ने
त्र खोलै न मुखसे बोले

वैद्य०- नारीकी नारी देखकर रोगमें तो संदेह है नहीं परंतु उप
चार करता हूं यह कह थोडासा अमृत उसके मुखमें
चुवाय दिया (उसी समय माधो माधो करती उठि बैठी)

दोहा

सुधाबुन्द मुखमें परी चलन लग्यो तन स्वास
बोली नारी नारिकी भई सखिनको आस

काम०- मुझको तो नींद ही नहीं आती थी आज क्या है जो ऐसी
सोई -

मद०- हे कामकंदला तू तो मर चुकी थी तेरे मरनेमें कुछ सन्दे
ह नहीं था परंतु तेरे भाग्यसे यह वैद्य शिरोमणि कहांसे
अच्छे आगये हनुमानकी नांई सञ्जीवन मूल खवायके
तुझे जिवाय दिया

काम०- जब कामकंदलाको सुधिहुई तबवैद्यराजके चरणों में शिर धरकर सब आभूषण उतार उनके आगे रखक हा है वैद्यशिरोमणि मुझपै कुछदेनेको नहींहै अपना तनभीदेदूं तौ भी आपके ऋण सेउ ऋण नहींहोसक्तीप रंतु यह शरीर माधोको अर्पण कर चुकीहूं

वैद्य०- वैसेही मेरा चित्त तुमसे अत्यंत प्रसन्नहै मैं तुमसे कुछ नलूंगा एकतौ तुमको कुछ देनेसे गया दूसरे औरउलटा लूं यहबात तुम्हारे कहने योग्य नहीं जोगुणी पुरुष लोभी होतेहैं उनको संसारमें यश नहीं मिलता लोभी को कोई परमार्थी नहीं कहता उनका नाम स्वार्थीहै

दोहा

जोजियलोभतौगुणकहां जोगुणतौधनकोटि
गुणी सराहै सर्व जग धनी सराहै छोटि ॥

काम०-हे वैद्यभूषण इससमय मेरा चित्त अत्यंतविभ्रमहो रहाहै

वैद्य०- क्यों

काम०-आप मुझे वैद्य नहीं ज्ञातहोते देवताहोया किन्नरहो या सुरेंद्र हो या कुवेरहो या रामचंद्र हो या महादेवहोया युधिष्ठिरहो। यावीरविक्रमाजीतहो सत्य सत्य अप- नावृत्तांत कहो तौमेरे चित्तकी चिंता जाय

वैद्य०- अहो कंदलासत्यसत्य तौ यहहै वीरविक्रमाजीतमेरा नामहै अरु उज्जैन नगरका बासीहूं मुझसे दुखियोंका दुःखदेखानहीं जाता माधोनल मेरेपास गया उसको दुःखीदे खनव्वेलक्ष ९०००००० सैनाले कामावतीनगरीको आयाहूं अरु माधवनल मेरे संगहै परंतु तेरी प्रीतिकी

परीक्षालेनेको भिषज् का वेष धर तेरे घर आया अरुमा धोका मरण सुनाया तू सुनतेही मरगई तेरे मरनेकास माचार सुन वहभी खडेहीसे पछा ड़खामरगया तबतो मैंने चिता बनाय जलनेकी ठहरायदी यहबात सुनवी र वेतालोंने अमृतला माधवनलको जिलाया फिर आय अमृत तुझको पिलाया हे कंदला यह अपराध मेरा क्षमा करदीजे क्योंकि प्रेमका समुद्र अथाहहै मैं मतिमंद इसके पारको नहींपासका

काम०-पाँवोंपर शिरधरकर हे कृपानिधान आपदानियोंके विषे हरिश्चंद्र अरु दशरथके समानहैं इस संसाररू पी समुद्रके तारण तरण अरुदीन दुख हरण आपहीहैं जो प्राणी किसीकी डुबती हुई नौकाको पारलगातेहैं सोनरजगत्में अपार यश पातेहैं हे पृथ्वीनाथ संसारमें सब इकसार नहीं होते.

दोहा

बिरलानर पंडितगुणी बिरला बूझनहार
दुखखंडनबिरलापुरुष बिरलाबुद्धिउदार

हे भूपेंद्र- लिखतीतो पाती परंतु छाती उमड़ी आतीहै इस्से लिखी नहीं जाती दूसरे अँगुली कपकपातीहैं ती सरे विरहनेत्रोंसे आंसू वहातीहैं

दोहा

कागज भीजत नयन जल करकांपत मसिलेत
पापी बिरहा मन बसत बिरह लिखन नहिंदेत १
करकांपत पतिया लिखत जल भरि आवत नैन
कोरो कागज हाथदे मुखियोकहियोबैन २

लिखन पढनकीहै नहीं कहीसुनीनहिं जात
अपनेजीसे जानले मेरजीकीबात ॥ ३ ॥

इतनी विनय मेरी ओरसे हाथ जोरकर प्यारेसे कहियो तुम्हारी दासी दर्शनकी प्यासीहै तुम बिना निशिदिन बिरहानल देहको दाहतीहै परंतु अंतरगति आठ पहर तुम्हाराही ध्यान निद्रानेत्रोंसे ऐसी गईहै न धरतीपर आतीहै नसय्यापर आतीहै (किसी कविका वचनहै)

दोहा

प्यारे मेरीनींदकी बात तुम्हारे हाथ
आवतही तबसाथही गई तुम्हारे साथ

निशि अँधियारी कारी नागिनिकी नांई पुकारती रहती है यह भारी विपत्ति मुझसे सहारी नहीं जाती दोनों नयन रैन दिन द्वारहीकी ओर निहारते रहते हैं-

दोहा

करकपोल अरु श्रवण यह सदारहत इकसंग
रोयरुधिरगयो नयनसग स्वेतभयो सब अंग

कवित्त

गई भूख प्यास तन सूख सूख कांटा भयोसे
तसे तरंग सब अंगको परगयो, नयननते पानीके पनारेसे चले जात तिन्हींके नीरसे लवणसिंधु भरगयो। शर्द शर्द स्वास मेरी नासिकासे निकसैहै वियोगको रोग मेरी देहको चरगयो। नैकचैन परत नाहिं बौरीसी दौरी फिरों शंकरको छौना कुछ टोनासो करगयो १
आयोहै वसंतकंत अंत कहूं छाय रहे मेरे हूश

रीरमाहिंपीरापनछैगयो, विधिकीकरतू-
तको भेदनाहिंजानो परैकहाहौं समझीहु
तीओरकहाव्हैगयो. वांकीसी झांकीदिखा
यहाय माधवनलबौरीसी बनायकुछठगौरी
सीदैगयो, सोतेनाहिंवैठे कलकेसे करूं शालि
ग्राममाधोनिरमोहीदुहीदिनमेंमनलेगयो २

हाय यह वसंत ऋतु अरु मैं अकेली कोकिलाकीकू
कसुनू। हे प्रीतम इस कठिनदुःखका निर्वारणकरो य
ह महाक्लेश मुझसे कहा नहीं जाता जिसपर यह त्रिवि
धिसमीर शरीरको फूंके देतीहै इस विपत्तिसेवेगि बचा
ओ मुझे अकेली जान कामदेव भस्मकरे डालताहै प
रंतु मैं जानतीहूं इसपापीने मुझे शिवसमझाहै अप
ना वदला लेनोको फिरताहै जव मैं तुम्हारा ध्यान क
रनेको नेत्र वंद करती हूं यह काम अन्याई धनुषवाण
तानमेरे सन्मुख आनखडा होता है उससमयमें कह
तीहूं

सवैया

गगननहीं मुक्तानकी मांगहै चंद्रनहीं यहउ
द्यन भालहै॥नीलनहीं मखतूलकी पूंजहै शे
षनहीं शिरवेणी विशालहै॥विभूतिनहीं मल
यागिरिशोभित विजियानहीं पियविरहवि
हालहै। ऐरे मनोजसँभारिकेमारियोईशनहीं
यहकोमलवालहै॥

उधर मालन वसंत लेकर आईहै इधर प्राणांतहोनेको
वैठेहैं। हे कंत यह वसंत किसपर रक्खू वहुतेरीतो

इनपीले पीले फूलोंको देख फूलती हैं परंतु मेरा इन फुलोंकारंग देख अंग पीला पडाजाताहै

कवित्त

मदमातीरसालकीडारनपेचढीआनंदसोंयों पुकारतीहैं कोउकेसीकरेंविनतीइनकीनहीं नेकदयाउरधारतीहैं कुलकानिकीकानेकरें नकछुमनहाथपरायहिमारतीहैं यहकोकि याकूकिकरेजनकीकिरचेकिरचेकरेडारतीहैं॥

इस पावस ऋतुमे जब मेघ बरसताहै अरु अंधियारी झुकतीहै अरु दामिनि दमकतीहै उस समय छाती पर साँप चलताहै मोरोंकी झिंगार को किलाकी पुकार सुन हृदयमें सालहोतेहैं जिसपर यह पापी पपीहा पिया पियाकर औरभी घावोंपर लोन लगाताहै। बेरन बूंदो ने बेढबही बैरबांध रक्खाहै

कवित्त

अहोवैद्यराज जब चारों ओरगर्जेघनलर जतहे हिया और जिया अकुलातहे। रवि गयोदविछिति अंजन तिमिर भयो भेदनिशि दिनकोन क्योंहूजान्योजातहै॥ होतचपचौं धीजोतिचपलाकेचमकेतेसूझिनपरतपा छेमानो अधरातहै॥ काजरते कारोअँधियारो भारोगगनमें घुमडि घुमडि घन घोर घहरातहै

हे वैद्यराज आज आपके आनेसे धीर्यहुवा अब पिया अवश्य मिलजायंगे.

शर्द पूनोकी चंद्रिकाको सब शीतल कहते हैं परंतु मेरे नेत्रोंमें ज्वालाही भडकती रहतीहै जिसवस्तुको सज्जन पुरुष सदासे शीतल कहते चले आयेहैं. वह मुझे आग दिखाई देतीहै

दोहा

चंदन चंद चकोर पिक दादुर मोर समीर
यह सब मम वैरी भये कैसे बांधूं धीर
नल को कहियो जाय कै हे नृपेंद्र मम पीर
तुम बिनु सब वैरी भये कौन बंधावे धीर

राजा।०- हे काम कंदला तेरा दुःख देख मेरा चित्त अत्यंत दुखी होताहै परंतु क्या करूं न उसको यहां लानेका न तुझे वहां ले जानेका थोडे दिनों और धीर्य धरो अरु मुझको विदा दो तो मैं अपने कटकमें जाऊं (यह बात कह विदा हो राजा कटकमें आताहै अरु यवनिका गिरतीहै)

इतिश्री माधवनल कामकन्दला नाम नाटक शालिग्राम वैश्य कृत चतुर्थो अंक समाप्तम् ॥४॥

पांचवाँ अंक

प्रथम गर्भांक

स्थान कामसेनकी सभा नगर कामावती



(द्वारपाल आताहै)

द्वार०-महाराज एक दूत कहींसे आयाहै सो द्वारपर खडाहै

राजा०-हमारे सन्मुख लाओ

द्वार०- (जो आज्ञा) बाहर जाकर दूतको बुला लाया

दूत०- (सामने जाकर) प्रणाम करताहूं

राजा०- क्या नाम कहांसे आये किसने तुमको भेजाहै

दूत०- श्रीपति तो मेरा नामहै अरु अपने आनेका कारण कहताहूं उज्जैन नगरके राजा वीरविक्रमाजीत महारणधीर जिनको तुम भली भांति जानतेहो उनका पठायाकु

छ संदेशा लेकर आयाहूं.

राजा०- क्या संदेशा लायेहो कहो.

दूत०- आपके नगरका एक माधवनल नाम ब्राह्मण जिसको आपने कामकंदलाके पीछे अपने देशसे निकाल दिया था सो तुम भली भांति जानते होगे कामकंदला के वियोगमें फिरते फिरते हमारे राजासे भेटहुई तबराजानेउस्से कहा में कामकंदला को तुझे दिला दूंगा सो नब्बे लाख सैना लेकर तुम्हारी सीमापर आगयेहैं जिसके भयसे देवता थर्रातेहैं बडे बडे राजा धबरातेहैं जिसने ब्राका बांध अनेक देशोंको विजय कियाहै सोराजा आपसे कामकंदलाको मांगताहै.

दोहा

माधवनलके कारने चलिआयेइहिं देश
कामकंदलाविप्रको मांगें देहुनरेश॥

राजा०-(क्रोधकरके) अरेबसीठ निठुर बचन मुखसे न निकाल तू बसीठहै नहीं तो तेरी जिह्वा अभी काटली जाती बसीठका मारना राजनीतिसे वर्जितहै अरे दुष्ट जोमें कामकंदला कोदे दूंगा तो राजाओंमें मेरा अपयश होगा देश देशके नरेश कहेंगे दंडदेकर अपनादेश बचाया जबतक देहमें स्वासशेषहै तबलों कामकंदलाकोनहीं देनेका राजा विक्रमादित्य तो एकहै जो सहस्रादित्य चढि आवै तो क्याहै एकबार मरकर क्या दुबारा मरनाहै जो राजा युद्धका सामान कल करतेहों वह आजकरें मैंभी अपनी सेना सजाताहूं.

दूत०- सुनो महाराज राजा वीर विक्रमाजीत बडे बली अरु परा-

क्रमीहैं जिनके दलमें लाखों हस्ती अरु घोडे अनंत रथहैं अरु पाँय पैदलकी तो कुछ गिन्तीही नहीं अरु बडे बडे बल वान शूरवीर रावत योधा संगमें हैं जिनका प्रताप आदित्य के समान सब पृथ्वीपर प्रकाशवानहै सब राजा जिसके आज्ञाकारी ऐसे राजासे थोडीसी बातके कारण विग्रह करना चतुरोंका काम नहीं.

श्लोक

एकास्त्वंजगतःप्रभुस्त्वंनवंवयःकान्तिमिदं
वपुश्च अलश्चहेतोर्बहुहातुमिछन्विचारमू
ढप्रतिभासिमेत्वम् १।

राजा॰- (लाल लाल नेत्रकर) अरे दूत जानतानहीं कामसेन मेरा नामहै विनाविधाताके दूसरेका भय मुझको नहीं जा अभी अपने राजासे कहदे युद्धका सामान करें.

दूत॰- (जो आज्ञा) परंतु अबभी कुछ नहीं बिगडा क्रोधको शांति करो अरु कामकंदलाको देदो नहीं पीछे बहुत पछिताओगे अरु कंदलाको दोगे मेरा प्रणाम लो मैं जाता हूं (गया).

राजा॰- मंत्री अभी हमारी सेनामें डोंडी पिटवादो कि सब सावधान हो जाँय सेनापतिसे कहो कि चतुरंगिनी सेनासजाय युद्धका सामान करे.

मंत्री॰- सेनापति आपको राजाजी बुलाते हैं.

सेना॰- पृथ्वीनाथ क्या आज्ञा है.

राजा॰- सेनापति हमारी सेना शीघ्र प्रस्तुत करो.

बजाओ फौजमें डंका जहां लोहै मेरा लशकर
छोड घर बारकी ममता नगरसे चल पडो बाहर

अगाडी कालेकाले हाथियोंके दलहों बादलसे
पिछाडी घोडोंकी सेना अठारह लाखसे बढकर
रथोंके तांतेके तांते चले जावें झमाझमसे
बैठेहों दोदो मतवाले सिपाही पहिरे जरवख्तर
पैदलोंकी हो दलबादलसी सैना बांकी अरु तिरछी
किजिसकी गर्दसे छिपजाय शशि आकाश अरु दिनकर
रचो चतुरंगिनी सैना बनाओ व्यूह अलबेला
कि ऐसा सूक्ष्म हो मार्ग नाजिसमें जासकें मच्छर
अरे शूरो अरे वीरो तुम्हाराही सहाराहै
बढाहै युद्ध विक्रमसे तुम्हारेही भरोसे पर
भाइयो इसही दिनके वास्ते बरसोंसे पालाहै
पौत्र रणधीरसिंह औ पुत्र मदनादित्यसे बढकर
नामहो जायदुनियामें लडोइंस भांति डटडटकर
एकदफे कोतो पृथ्वीपर बहादो रक्तका सागर

सबसेन०–हे महाराज आप धीर्य रखिये एक क्षण भरमें शत्रुकी सैना को मार भगाये देते हैं आप सन्देह न कीजे परमेश्वरने चाहा तो वीर विक्रमाजीतको जीत उज्जैनके कोटकी शिला शिला बखेर दी जायंगी अरु ऐसे लडेंगे चाहे तनके कटकें टुकडे हो जांय परंतु पीछेको पग न धरें आप धीर्यसे बैठे रहें (यह कह सेनापति डेरे नगरसे बाहर डालते हैं अरु यवनिका धीरे धीरे गिरतीहै)

इतिश्री माधवनलकामकंदला नाम नाटक प्रथमो गर्भांक सम्पूर्णम् ॥१॥

दूसरा गर्भांक

स्थान राजा विक्रम के डेरे

(राजा वीर विक्रमादित्य सब सेनापति मंडली समेत बैठे हैं वसीठ आता है अरु कामसेन राजा का सब वृत्तांत सुनाता है)



रा० वि०—मंत्री जो कुछ दूतने कहासो तुमने सुन लियो अब क्या ढील है हे मेरे भुजदंड सेनापतियो कामसेनके कठोर बचन सुनकर हमारे हृदयकी आग भडक उठी इसलिये उसपै चढाई करना चाहते हैं हमारा कटक शीघ्र उपस्थित हो अरु आज ऐसा करो कि एक बार तो धुआंधार हो जाय पृथ्वी कांपने लगे कूर्म कुल मुलाने लगे दिग्गज डिगमिगाने लगें भूतनाथ प्रेतमंडली लिये नाचते फिरें योगिनियों के खप्पड रुधिरसे परिपूर्ण हो जाँय चौमुण्डा रक्त भर स्नान करने लगें अं-

धाधुंध युद्ध कर कबन्ध संग्राममें नाम करें रक्तकी धारा धरापर बह निकले.

दूत०- (इतनेमें एक दूतनें आकर कहा) महाराज शत्रुकी वाईस लाख सेना प्रलयकी घटाके समान उमडती चली आती है जिसकी धूरिसे आकाश आच्छादित होरहाहै सूर्य दृष्टि नहीं आता धोंसोंका शब्द शूरोंका सिंहनाद वीरोंका गर्जना गजोंका चिंघाडना घोडों का हिनहिनाहट वाजोंके शब्दसे कान गुंगियाये जाते हैं बरछी भाले सांगीनें बिजलीसे चमकतेहैं अरु चित्रविचित्र पक्षियोंकी भांति लालपीले पंचरंगे झंडे फहराते चले आतेहैं.

कवित्त

बडेबडे शूरवीरयोधासावंतवलीरथोंसेंस
वारमानोसूरतिहैं मैनकी। शूलगदामुदग
रकृपानधनुषबानलियेऐसीधाकहांक
जैसीभीमकरणवैनकी। कहतलल्लकारशू
रवीरवारवारएहीलूटलेहुचलकेआजग
द्दीउज्जैनकी। गजनकोदबावतऔनचा
वततुरंगनकोआवतमहाराजआजसे
नकामसैनकी ॥१॥

विदू०- महाराज आप सब बैठे कौतुक देखते रहिये हम निरे पंडित हीनहींहैं अरु परमेश्वरकी दयासे हम योद्धा भी पूरेहीहैं एकही बार कुंभकरणकी भांति सबका भक्षण करछेः महीने की नींद सोऊंगा फिर किसीकी सुन्नेका नहीं चाहे महादेव शिरमारतेरहैं चाहे ब्रह्मा पीछेपीछे

पुकारते फिरें

रा० वि०-(हसिकर) कृपासिंधु आपकातो भरोसाही है क्यों वृथा परिश्रम करते हो.

विदू०-मैं अपना करतव्य प्रथमही क्या वर्णन करूं आपके प्रतापसे जो कुछ करूं सो देख लेना बहुत कहनेसे क्या होताहै बाण वर्षासे भूमिकी भांति शत्रुओंके हृदय विदीर्ण करूंगा घायलोंकी तृषार्त वाणी रणभूमिमें पपीहोंकी भांति ठौर ठौर सुनाई देगी बाणोंके मारे गगन अदृष्ट होजायगा बाणविद्ध शीश अरु भुजा आकाशमें गिद्धादि पक्षियोंकी नांई उडते फिरेंगे चील काक स्वान गीदड आदि मांस भक्षी जीव भली भांति तृप्ति हो परस्पर विरुद्ध त्याग देंगे अरु रक्त रंजित रण भूमिमें आपके शत्रु ऐसी मोहकी घोर निद्रामें सोवेंगे कि फिर उठाये न उठेंगे अथवा उनका उठाने वालाही कोई न रहेगा.

सबवीर०-महाराज आज रणभूमिमें आप हमारा पराक्रम देखना जैसे किसान नाजका खेत काट काट बराबर बराबर बिछा देताहै ऐसे आज हम रिपुदलका बिछौना बिछादेंगे हमारेती खेती खेतीर विषके बुझे हुए जहरीले तक्षककी भांति उड उड कर शत्रुओंके हृदयका शोणित पियेंगे तब हमारा बल शत्रुदलको प्रगट होगा जबतक हमारे शरीरमें पुरुषार्थ रहेगा हम शत्रुको स्वप्नमें भी सुखसे न सोने देंगे आज हमको आपके ऋणसे उद्धार होने क्षत्रीजन्म सुफल करने अरु सुरपुरके आनंद भोगनेका समय सहजमें मिलगयाहै सो

अब हम नाशवान शरीरके लिये कभी नहीं छोड़ेंगे.

रा० धि०- धन्य है शूरवीरो धन्य है ऐसेही समयके लिये कुलीन पुरुषोंकी सहायता कीजातीहै तुम्हारी ओरका मुझको पूर्ण विश्वासहै अरु तुम्हारेही भरोसेपर मैं निश्चिंत रहताहूं देखो भाइयो आज ऐसा संग्राम करो जो दोनों दलमें तुम्हारी वाहवाह हो जाय हम लोगोंको अपना क्षत्री धर्म अरु अपने शस्त्र सबसे अधिक प्रिय हैं सो परमेश्वरकी कृपासे आज दोनोंका समागम आ बनाहै इस लिये अब ऐसा उपाय करना उचितहै जिससे अपने धर्मकी ध्वजा फहरातीरहे अरु अपने शस्त्रोंको शोणितकी तृषा शेष नरहे.

शू० वी०- आप देखते जाइये कैसे कैसे पराक्रम अरु कर्तव्य आपको दिखातेहैं जैसे पतंग दलको दीप शिखा पर जलते कुछ काल नहीं लगता तैसे आपके प्रबल प्रतापसे समरके समय यह दल बादल तत्काल छिन्न भिन्न हो जायँगे.

दूत०- (जलदी आनकर) महाराज शत्रुकी सेना सावनकेसी घटासम उमडी चली आतीहै खेतके निकट आपहुंची जो कुछ यत्न करनाहै शीघ्र कीजे.

सै० प०- अहो बीर रणधीर सेना सजाओ। अटल मारू बाजे बजाओ बजाओ १ करो सैनका सर्व सामान पूरा। अगाडी अगाडी बजाओ सिंदूरा २ तुरंगोंको दल मेंनचाओ नचाओ। लडो आगे बढ पगन पीछे हटाओ ॥३॥ छुरी सांग भाले संभालो संभालो॥ रिसालोंको शत्रूके झटपट दबालो ४ झपाकेसे घोडोंकी बागें उठाओ। भगा

ओ भगाओ भगाओ भगाओ ५ झपट शूरता धीरता बल दिखाओ। अर्सी खड्ग बर्छी शत्रुदलमें मचाओ ६ शतघ्नीमें बत्ती लगाओ लगाओ। सकल शत्रुसेनाकी धज्जी उडाओ ७ धडाधड धडाधड करो मार ऐसी। जो शत्रूको मालूम होवै प्रलयसी ८ लडेखेतके पगमति हटाओ। रुधिर धार धरणीपै ध्रुवतक वहाओ ९ जो मारो वर्छी नाम उसका लिखाओ। जो भागे कोई पीछे उसके न जाओ १० करो युद्ध बांका अरु शूर वीरो। मेरे शत्रुके दलको घेरो घरेरो ११ करो युद्ध ऐसा रहे नाम कलमें अकेलेही घुसजाओ शत्रूके दलमें १२ जहां शत्रु देखो वहीं धर गिराओ। सदा विक्रमादित्यकी जय मनाओ १३ सुयश विक्रमादित्यका नित्य गाओ। मनाओ मनाओ सदा जय मनाओ १४

सब योधा मिलकर एकवारतो शत्रुसेनामें हालाचाला डालदो (दलमें लगे मारू बाजे वजने अरु शूर वीर शस्त्र बांधबांध लगे घोडे कुदाने अरु वरछी भाले चमकाने अरु अपना अपना करत्तव दिखाते) (नेपथ्यमें जातेहैं).

माधो०- हे पृथ्वीनाथ आपने मेरे कारण अत्यंत परिश्रम उठाया। लज्जाके मारे मेरा मुख आपके सन्मुख नहीं होसक्ता क्योंकि नकुछ वातके उपर आपको इतना क्लेश सहना पडा परंतु मेरी कुछ इच्छाहै जो आप मेरा मनोर्थ पूर्ण करें.

रा०वि०- तुम्हारा क्या मनोरथहै वर्णन कीजिये.

माधो०- आपके शूरवीरतो बडेही रणधीरहैं परंतु प्रथम मुझसे अरु कामसैनसे अथवा उसके पुत्र पौत्रसे युद्ध

हो कामसैनकी ओरसे मेरे मनमें बडा क्रोध भर रहाहै क्योंकि उस दुष्टने कुछ अपना बुरा भला नविचारा अरु मुझे ऐसे समयमें अपने नगरसे निकालाहै कि मेराहीजी जानताहै जो आपकी आज्ञाहो तो उस दिन काव दला आज लूं अरु अपने हृदयकी दाह बुझाऊं.

रा०बि०—(हंसिकर) जान पडताहै कि आप रणविद्यामेंभी निपुणहैं.

माधो०—सब आपहीके प्रतापका प्रभावहै.

रा०बि०—यह वीर क्या थोडेहैं जो तुम संग्राम करनेकी इच्छा करतेहो! आप बैठे बैठे मेरे वीरोंका कौतुक देखिये जरा देरमें कामसेनकी सैनको जीत दलमें जीतका डंका बजाये देतेहैं अरु अभी कामसैन समेत कामकंदलाको मंगातेहैं अरु कामावतीकी गद्दीपर आपको बिठाये देतेहैं फिर धीरे धीरे अपने हृदयकी दाह बुझा लेना.

माधो०—सत्यहै महाराज आपके वचन तो पत्थरकी लकीरहैं इसमें कोई सन्देह नहीं यह तो न कुछ कामहै आपके प्रतापसे इन्द्रलोक अरु पाताललोक से सब बस्तु आसक्तीहै परन्तु मेरे मनका दाह उसी समय बुझेगा जब अपने हाथसे कामसेनको परास्त करूं.

रा०बि०—जो आपहीकी यह इच्छाहै तो मैं निषेधभी नहीं करसक्ता आप युद्ध कीजे अरु जिस शस्त्रकी कांक्षाहो सो लीजे अरु अपने मनकी अभिलाषा पूरी कीजे.

माधो०—(सब आपकी दयाहै) यह शिवका दिया त्रिशूलही बहुतहै.

विदू०- महाराज तो आज मुझको भी आज्ञा होय जो क्षण भरमें शत्रुदल छिन्न भिन्न कर तुंड मुंड बखेरडालूं अरु सात समुद्र आपके नामके अरु सात समुद्र अपने नामके अरु सात इस वियोगी ब्राह्मणके नामके खुदवाय रुधिरसे भरदूं अरु कामावती नगरीको उठाय इक्कीस समुद्रके पार जाय धरि आऊं जो यह वियोगी योगी वन ढूंढता ही फिरो करैं जब लौं हमको कुछ अकोर नहीं दे करोरवर्ष पर्यंत भी हाथ न आवै सब त्रिशूल प्रसूल भूल जांयगे हमको भी परमेश्वरने पूर्ण बली ब्राह्मण बनायाहै परशुरामने भी हमसे ही बूझकर अपनी माताको माराथा रावणभी हमारा पुराना मित्रथा उसने हमारीही आज्ञासे सीताको हरयाथा जरासंधने हमारीही सहायतासे श्रीकृष्णको सत्रह बार जीताथा जब कंस हमसे मिलातो हमने सहाय कीतो कंसका विध्वंस किया शिशुपाल बाणासुर हिरण्याक्ष हमारे घरानेके चेले थे हमारीही बांधी बंधैथी अरु हमारीही खोली खुलैथी कहोतो सब पृथ्वीपर जल्हीजल करदूं कहो दशोंदिशामें ज्वालाही ज्वाला दृष्टि आने लगेमें सर्व विद्यामें पारगामीहूं.

रा०बि०- (मुस्क्याकर) सत्यहै महाराज सत्यहै आपके वाक्य अरु बलका क्या सराहनाहै आपकी दृष्टिसेही सृष्टि काल यहो सक्ताहै तुमको परमेश्वरने महाबलवान अरु परोपकारी बनायाहै आप तुच्छ काममें परिश्रम नकीजे किसी भारी काममें आपसे काम लिया जायगा यह किंचित् संग्राम क्याहै यहां तो आपके नामसेही काम हो जाइगा.

विदू०- (आपकीइच्छा) हमकोतो किसी बातसे प्रयोजन नहीं

रा०धि०- सेनापति बारहलक्ष सैना अत्यंत युद्धमें बुद्धिवल शाली अरु पांच महाबली महाराज माधवनलकी सहायताके लिये संग करदो.

१ वज्रनाभ २ मेघडंबर ३ रिपुदमन ४ अरिमर्दन ५ शत्रुनाशक. अरु हे विजय भैरव तुमइनके संगर हना किसी भांतिसे यह अपने मनमें दुरव न मानै अरु जो शत्रुकी सैना को प्रवल देखोतो बसीठ को भेज देना उसी समय ओर सैना भेजदी जायगी.

(राजाके वचन सुन विजयभैरव सेनापति बारहला रव सैनाले माधवनलके संग युद्धको जाताहै अरु य वनिका गिरतीहै).

इति श्री माधवनल कामकंदला नाम नाटक शालि ग्राम वैश्य कृत् पंचमो अंक समाप्तम् ॥५॥

छठवां अंक

स्थान कामसैनका कटक



(एक दूतने आकर कहा महाराज)

दूत०- कवित्त

आवतहै सैनमहाप्रलयके वादलसे धौंसन
केशब्द मानोगर्जन आसमानकी। चपला
से अस्त्रशस्त्र चमकरहे चारों ओर वर्षासी
वर्षरही धनुष औरवानकी ओलेसे गोलेप
ड़ेंकिरचैंबगपांतिनसी धनुषकी शोभा मानो
पंचरंगानिशानकी शूरवीररावत पुकाररहे
दादुरसे सदाजैहो सदाजैहो विक्रम बलवा
नकी ॥१॥

माधवनल ब्राह्मण बारह लाख सैना लिये आताहै सा
क्षात परशुरामका अवतारहै उसके बलकी बराबरीको

न कर सक्ता है तक्षकसे शत्रुओंको मयूरके नेत्रोंकी अ
ग्निके सदृश इनके नेत्रही सन्मुख नहीं रहनेदेते संग्रा
ममें परशुरामकी भांति इनका अमोघ पुरुषार्थ प्रग
टहै इक्कीस वार छत्रियोंको मार उनका वंश निर्वंशक
रदिया जैसी युद्धकी रीति किसीको नहीं आती इनके
दलके प्रहारके सहनेकी किसको सामर्थहै पांच से
नापति इनके संगहैं युधिष्ठिर· सहदेव· नकुल· अर्जु
न· भीम· केसमान कौन बलवान इनका साम्हा करस
क्ताहै प्रथम यही दलसे निकल शस्त्रलगाये त्रिशूल
ताने सिंहसा दहाडरहाहै जोशत्रुसेनामें संग्रामका पा
रगामी और नामीहो वह मेरे सन्मुख आनकर युद्ध करै

रा० का०- पुत्र मदनादित्य· माधवनलसे तुम युद्ध करो जा
ओदेवीकी कृपासे जयहोगी दशलक्षसेना अरु सात
सावंत महाबलवंत लोहेके चाबने वाले अपने संगले
जाओ परंतु उस ब्रह्मनेटे भिखारीका शिरतो काटना
मति पकडकर हाथोंमें हाथकडी पैरोंमें बेडी डाल मेरे
पास ले आना अरु जितनेवीर उसके संगमेंहैं सबको
रंगभूमिमें रुधिरके रंगमें रंगदेना.

मद० दि०-(खड्गहाथमें लेदलसे बाहर निकल पुकारा) खबर
दार संभलजाना में आपहुंचा भाग न जाना.

माधो०- अरे मूर्ख भाग जाना क्या वस्तुहै भागक्रियाहमारी
भली भांति जानीहुईहै अभी तेरे शरीरके चार भाग क
र दिखाये देतेहैं तेरे भागमें हमारे ही हाथसे तेरा मरण
लिखाहै.

मद० दि०- आपके सब लक्षण ब्राह्मणोंकेसे दृष्टि आतेहैं कि

र वेद पाठ त्याग मेरी भुजाओंके सागरमें क्यो डूबन च
ले आये अपने प्राण ले भाग जाओ क्या भाग क्रियाभा
ग क्रिया करते फिरोहो कहीं तुम्हारीही क्रिया नहो रहे
अभी यहां रणयुद्ध यज्ञ होरहाहै कामसेन यज्ञकर्त्ता
है हमसब ऋत्विकहैं विक्रमादित्य यज्ञका बकराहै
जिस समय यज्ञ सम्पूर्ण होकर संत ब्राह्मणोंको भोज
न जिमाया जायगा आपका भागभी निकाल
कर रखछोडेंगे लेजाना अब यहांसे भाग जाओ धोखे
में कहीं किसीकी आईमें तुमन मारे जाओ यह लोहेकी
कठिन आंचहै क्षत्रियोंके सिवाय किसी औरसे स
ही नहीं जाती.

माधो०-रे अधम दुर्बुद्धि हम तुझको अज्ञानी जान तेरे कह
नेका बुरा नहीं मान्ते नहीं तो तेरे दुर्वचन सुनतेही मारे
बाणोंके तेरी जिव्हाके खण्ड खण्ड करदेते तू ह
मारा वेष देख निरा ब्राह्मणही मति समझना जब हमा
रा पौरुष देखेगा तो स्त्रीवन किसी बनमें वनवासियोंकी
कुटी ढूंढता फिरेगा चकमकके पानीमें रहनेसे उसकी
अग्नि छीन नहीं हो जाती.

मदनदि०-ओहो आपके शरीरमें तो बातके कहनेही पतंगे
लग गये चकमककी तरह चिनगारी निकलने लगीं आप
केवल लक्षणोंसेही नहीं कर्तव्यसे भी ब्राह्मणही जान
पडते हैं क्योंकि क्षत्रियोंकी भांति आपकी भुजाओंसे
बल नहीं दिखाई देता केवल वाणीहीके वीर दृष्टिमें आ
ते हो कहनेको सब कुछ परंतु हो न सके कुछ भी.

माधो०-अरे अत्याचारी विश्वास घाती तैंने विश्वामित्रके

कर्म नहीं देखे मुहूर्त मात्रमें इन्द्रको जीत नई श्रृष्टि रच दिखाई तुझको लज्जा नहीं आती तू हमारे सन्मुख मुख करके बोलता है याद नहीं इक्कीस बार परशुरामने पृथ्वीको जीत क्षत्री वंशको निकच्छ कर क्षिति ब्राह्मणको दान करदी

मद०दि०- धन्य धन्य आपकी बुद्धिको यह तो कहिये ब्राह्मणोंसे मिलकर फल किसने पाया विश्वामित्रने नवीन श्रृष्टि रचिके कौनसा सुयश कमाया त्रिशंकुका ऐसा खोज खोयाकि उसको मध्यमें लटकाया धरतीका रक्खा न आकाशका हमतो लज्जाके मारे डूबे जाते हैं परशुराम ऐसे औतारी प्रगट हुएकि जिस महतारी के गर्भमें जन्म लिया उसीका शिरकाटा दशरथके पुत्रोंके आगे कानभी न हलाया निरे साधुही बनगये लज्जा तो न आती होगी परंतु तुमको क्या लाज तुमतो जन्मके भिखारीही ठहरे घरके कुटुंबको मार अपने आपको वली समझने लगे परंतु आपने समर रूपी समुद्रकी लहरें नहीं देखीं जो देखोगे तो छाती फट जायगी वहां ठहरनेके लिये परमेश्वरने क्षत्रियोंही को उत्पन्न कियाहै.

माधो०-रे सठ मिथ्यावादी तुझे हमारे पुरुषार्थकी सुधि नहीं हमारे तेजसे एक समर सिंधुकी तरंगेंही शांति नहीं होंगी जैसे परशुरामके प्रतापको देख वारीशने शीशनवास आय शरणली अरु मार्ग दिया अगस्त्य मुनि समुद्रके तीन चुल्लूकर पीगये अरु मूत्रके मार्ग बहादिया अरु कहा जा हमारे नेत्रोंकी ओट होजा जा आजसे तेरा जल खारी हो जायगा जब उसी समुद्रकी यह गति

की तो यह संग्राम सिंधुतो कोईसा फाड दिया जायगा

मद०दि०-ओहो अवतो आपसमुद्रके चुल्लू करनेलगे वि दित होता है पृथ्वीकाभी भक्षण करोगे अवकाहेको कोई जीताबचेगा मैंने जानलिया आपहीके कोपसे महा प्रलयहोतीहैं.

माधो०- अरे अज्ञानी हमको निराब्राह्मणही मत जान क्षण मात्रमेंतेरे दलको क्रोधकी कृशानुमें विजया हवन करसक्ते हैं चाप जोहै यही हमारा श्रुवाहै शर आ हुतिहै कोपअग्निहै यह तेरी सेनासम धैहैं तेरे कटु वचन साकल्यहै कामसेन यज्ञ पशुहै यह त्रिशूल वलि देनेका शस्त्रहै तेराशीश हवनकी शान्तिके लि ये श्रीफल है.

मद०दि०- अपने मुखसे अपनी वडाई करनी कायरोंका कामहै.

माधो०-रे मिथ्या अभिमानी हमकायरहैं तू नहीं जान्ता प रशुरामने सहस्त्रावाहुकी सहस्त्र भुजा क्षणमात्रमें काटकर फेंकदीं.

मद०दि०- नहीं महाराज आप कायर क्यों होते आपतो वाक शूरहैं बलवान भुजवलसे कायर नेत्रजलसेवा कशूर वचन छलसे निजमनानंद कर लेते हैं.

माधो०- रे निर्लज्ज हम छलवलसे चित्त संतुष्ट कर लेतेहैं सो क्या हम अपनी भुजाओंकी सामर्थ्यसे नहीं करस के आज हमको वह शक्तिहै चाहैतो तेरे देशकोक्ष णमात्रमें लोट पोटकरदें.

मद०दि० आपतो साक्षात् वलभद्रहैं जो यह काम करभी

डालो तो कुछ आश्चर्य नहीं मैंने तो आपका स्वरूप देख तेही जान लिया था अब क्यों व्यर्थ ब्रह्मघातका दोष मेरे शिर रखते हो.

माधो०-धिक् मूढ लम्पट मुझको निरा ब्राह्मण ही कहकर हमारे तीक्ष्ण शरोंसे निवृत होना चाहता है तो लेह मजने ऊ भी उतारकर बगेले देते हैं अरु शस्त्र भी अलग धरे देते हैं मुष्ट प्रहारसे ही हमारी तेरी जीतहार विदित हो जायगी हमको कोरा लोभी ब्राह्मण मत समझ हम रावणसे अधिक युद्धार्थी ब्राह्मण हैं हमने इक्कीस बार क्षत्रीवंशका विध्वंश कर पृथ्वी ब्राह्मणको दान करदी अरु फिर क्षत्रियोंको दुखी देख उन्हींको दे दी.

गौडोंको गोड बंगाला... पौडपुरियोंको उडीसा जगन्नाथ.
बघेलोंको मगध... वैश्योंको-वैश्यवारा-अंतरवेद.
भिलवारोंको विदर्भ.... रागेरोंको कम्बोज.
पंचवानोको पांचालदेश.... चावडोका पाटन.
वत्सलोंको कावरू....गोल्लवत्तोंको चोलदेश.
वड गूजरोंको काठियावाड गुजरात.
कठेरियोंको करनाटक.. जंघारोंको द्रावण मद्रदेश.
पलनहास्योंको तेलंग चौहानोको सम्भल.
तोमरोंको दिल्ली, बुंदेलोंको बुंदेलखंड.
गहरवारोंको केरलदेश... पमारोंको पंचजल.
यादवोंको सोरठ..कछवायोंको कच्छ.
परिहारोंको मारवाड. समा-और-भट्टोंको सिन्धु.
रूम-साम-गोरखोंको नैपाल-कटियारोंकोकाश्मीर.

पारस- कैकेय- गान्धार- समरकवन्ध- मौलिंगियोंको मुलतान- लाहौर- अमरेशोंको अम्बरीषा- राजपूतों को- भीमताल- भोटान- मानसरोवरसे बद्रिकाश्रमपर्यंत इस भांति पृथ्वी सबको बांट हमने वैराग्यलेलिया.

मद०दि०-सब वडाई होचुकी अवतो कुछ बाकीनहीं रही ओर कुछ कहनाहोतो कहलो क्योंकिफिर पीछे मनमें पछितावा नरहजाय हमने कोई बात नहीं कही तुम्हाराही सुख तुम्हारीही वडाई यहांकुछ लडाई लडनी थोडेही पडतीहै मनमें आयासो गाया.

माधो०-रे कायर क्लीव हमक्या अपनी वडाई अपने मुखसे झूंठी करतेहैं क्या हमको धरती आकाश एक करनेकी सामर्थ नहींहै क्या हम तुझसेहैं सातवर्ष पर्यंतस्त्री बनाबन विचरता फिरा हमारेही पिताने तुझको पुरुष वनाया अब वलवान वन बलका घमंड दिखाते हो मनमें लज्जित नहीं होता.

मद०दि०- अरे वृथा वकवादी ब्रह्मवंश घालक मैंने ब्राह्मण समझतेरे कठोर बचन सुने परंतु अबजानाकि तूब्राह्मणके वीर्य्यसे उत्पन्न नहींहै अरु तेरीबंदरकेसी घुडकी अरु कौवेकेसी कांवकांव नहीं जातीहै ले संभलजा मैं शस्त्र प्रहार करताहूं.

माधो०-रे दुष्टात्मा- चाण्डाल- तेराकाल तेरे शिरपर गाज रहाहै क्यों वृथा हत्यादेनेको फिरताहै जामेरे नेत्रोंके सामनेसे चलाजा केहरी मेंडकको कभी नहीं मारता परंतु वह अपने आपको बडा वलवान जान अपनीटरटर करताही रहता है अपने नीच पनको नहीं छोडता ले हम

भी अब धनुष चढातेहैं संभल (दोनोंने धनुषबाण चढालिये) रणसिंहेका शब्द नेपथ्यमें होताहै अरु मारू राग गा रहेहैं चरण घुमा घुमाकर दोनों वीर तूणीरसे तीर निकाल निकाल वह उसके शरीरमें अरु वह उसके शरीरमें तक तक मारताहै अरु बारम्बार शंखध्वनि होतीहै) नेपथ्यमें.

राग मारू

रंगभूमि घूम घूम लरत वीर भारी
भं भं भट भिरत आन कं कं करले कमान सं सं
शरतान तान मारत धनुधारी १ पं पं पग धरत बदल भं भं भट उछल उछल सं सं संग शूर सकल लरत ले कटारी २ गं गं गहि गहि कटार कं कं करहें मार मार रं रं रिपु कोप छार पीटत हैं तारी ३ बं बं बलवान लरत नं नं नहिं नेकुडरत धं धं धनु धाय धरत रिपु को ललकारी ४

राग मारू तथा

युद्ध करत क्रुद्ध सहित योधा नहिं हारत खेंच कानलों कमान मारत शर तान तान शूर वीर पल निधान ठाडे किलकारत १ गिरत परन फेर उरत मनमें नाहिं नेकु डरत सन्मुख हो शस्त्र करत कठिन वार मारत २ मार मार चार ओर होत युद्ध महा घोर योधा कर जोर शोर दलमें ललकारत ३ बरछी भाले कृपान दमकें चपला समान वैरी भय मान शान शत्रको पुकारत ४ कटत मुंड लरत रुंड मस्तक सोह

तत्रिपुंडलोहूसे भरतकुंड भयो भूरि भारत ५

गानेका शब्द अरु तूर्य्यका नाद शंखकी ध्वनिसुनिदो नोंवीर सिंह समानगर्जनेलगे कायर क्लीव कठिन युद्धदेख लर्जने लगे माधवनल बाणवर्षासे अरु त्रिशूलकी मारसे मदनादित्यको व्याकुल करदेताहै अरु वेधडक हरकवीरको मारता पछाडता सिंहकी तरह दहाडता सम र सिंधुकी काईभी फाडता दलियोंको उखाडता चला जा ताहै).

(सुबाहुकी बाहु उखाड शत्राजितको पछाड वज्रदंत के दंत झाड कुलिशनाभकी छाती फाड व्यूहरूपी बाग को उजाड अकेला सिंहकी तरह दहाडरहाहै माधो०)

मद०दि०- उंचस्वरसे ललकारकर सावधानहो. रे पाखंडी पाखंड फैलानेवाले कभी किसीसे लडना कभी किसीसे लडना कभी इधर जुटना कभी उधर जुटना कभी आगेको भागना कभी पीछेको भागना इनबातोंसें कुछ शूरता नहीं पाईजाती जोतू बडा व लका गर्व रखताहै तो शस्त्र रखदे अरु मुष्टयुद्धकर प्रथम हमसे झूंठी सटपटसे काम नहीं चलता आजदे खूं तूं कैसा बलशालीहै.

माधो०- यह बडे आश्चर्यकी बातहै कि स्यारको सिंहसे यु द्ध करनेकी अभिलाषाहुई (इतनाकह फिर माधोनल मदनादित्यसे जाजुटा अरु ऐसा घोर युद्ध मचाकि दोनो के शरीर चलनी बन होगये निदान लडते लडते माधो नलका त्रिशूल मदनादित्यके हृदयमें लगताहै अरु व्याकुल होकर भूमिपर गिरताहै अरु सेनामें कुलाहल

पडताहे अरु अप्सराओंका मनोर्थ पूर्ण होताहे ! नेपथ्य में गाना बंद होताहे).

(कामसेनकी सेनामें हाल्लाचाल्ला देख विजयसैं खक टकको धीर्य दे बेखटक आगे बढताहे अरु फिर माधव नल अपने अस्त्र शस्त्र सँभाल कालरूप हो गर्जताहे अरु फिर महाघोर संग्राम मचताहे अरु फिर नेपथ्य में जुझाऊबाजेके संग मारूराग गातेहें)

राग झंझोटी

करत सब योधा युद्ध अपार
चलत कृपान शूल अरु शक्ती मारत कोई कटार
धूमधामसे चलें भुजंगी होरही मारामार
तक तक तीर बीर सब मारत जहरी सर्पाकार
कटत शीश भुज उर छत्रिनके तौऊ न मानत हार
मारमार कर रहे दशौं दिशि तनकी सुरत बिसार
गिरत वीर उठि करत बहुरि रण धुवां धार अंधियार
दोउ दल लरत गिरत भट कट कट बहत रुधिरकी धार
मचो घोर घमसान कोनकित कोउ नहिं करत विचार
मारमार ध्वनि होत कटक में दया करें करतार
बडे बडे सावत शूर सागढे रहे निहार
बरन परत काहू कोन लपर छल बल कर तह जार
दोनों दलमें चलत शतघ्नी रहे वीर ललकार
खबरदार कोइ जान न पावै घेर घार लो मार
लरवल रवदमक चमक शस्त्रनकी कायर कूरग मार
साधुसंत बन लगे भागने डार डार हथियार
धरु धरु धरु रिपु जान न पावे योधा रहे पुकार

शालिग्रामसरामइसरणमेंरारवेनामहसार

(माधवनलकी वाणवर्षासे पलमात्रमें पृथ्वी आकाश अ दृष्ट होगया गज अश्व मनुजादि घायल मृतक शरीरोंके ढेरकेढेर पर्वतसे दृष्टि आतेउनमेंसे रक्तकी नदी लहरेल्ले तीचली जातीथी जिन्में वीरोंके छिन्नभिन्न अंगकच्छ मच्छ ग्राहसे दिखाईदे रहेथे अरु कनारोंपर चीलका क गृद्धादिहंससारस चकवेचकवीकी नांई तक रहेथे अरु वगुले मुर्दोंके नेत्रोंको मीन समझ निकालनिका लखारहेथे आँतें कमल नाल शैवालादिसीजिधर ति धर जान पडतीथीं स्वानशृगालआदि मनुष्योंकी अं तडी ऐसे खैंच तानरहेथे मानो मोर सर्पोंको पकड पकड निगलरहेहैं घायलोंके करुणावचन प्यासे पपीहेकी तरह सबके चित्तको उदासकर रहेहैं योधा ओंके क्रोध भरे शिरभी दांतोंसे होटोंको काटतेही दृष्टि आतेहैं मानो नारियल रुधिरधारमें वहे चले जातेहैं सेवक स्वामियोंकी आर्तवाणी सुनिसुनि शिरधुनि धुनि रोयरोय घावोंमें टांके जो लगा रहेहैं मानोकिशा न अपनी खेती नलारहेहैं अरु कोई कोई योधायु द्धका समान जोकर रहेहैं मानोकिशानोंको खेतोंमें वीजबोनेकी कांक्षाहै चारोंओरजो हाहाकार शब्द हो रहाहै मानो दादुरमोर झिंगार रहेहैं शत्रुशैना खेत छोड छोड ऐसे भाग निकली मानोकि सान ग्रामवासी हल कांधेपर धरे वैल आगे करे संध्या समय अपनेअपने घरको चले जातेहैं (नेपथ्यमें)

नाराचछंद

अनेकवीर शस्त्रडार मुंहछिपाय चलदिये ॥
अनेकवीर चूतरोंपै दागखाय चलदिये ॥१॥
अनेकवीर वस्त्रकांख मेंदबाय चलदिये ॥
अनेकवेष साधुसंतका बनाय चलदिये ॥२॥
अनेकपुत्र पौत्रत्यागजीव चाय चलदिये ॥
अनेकवीर स्वर्गलोक शिरकटाय चलदिये ॥३॥
अनेकवीर रक्तकीनदी बहाय चलदिये ॥
अनेकवीर छापनामकी लगाय चलदिये ॥४॥
अनेकवीर सैनमेंवली कहाय चलदिये ॥
अनेकवीर दोनोंदलमें नामपाय चलदिये ॥५॥
अनेकवीर वीरपनकि धजा दिखाय चलदिये ॥
अनेकवीर धनुषबानको चढाय चलदिये ॥६॥
अनेकवीर निजकबन्धको नचाय चलदिये ॥
अनेकवीर नामवंशको मिटाय चलदिये ॥७॥
अनेकवीर शत्रुसैनको सुवाय चलदिये ॥
अनेकवीर भृत्यवर्गऋण चुकाय चलदिये ॥८॥
अनेकवीर सिंहसेंदहाड रहे युद्धमें ॥
अनेक शूर शत्रुशीशझाड रहे युद्धमें ॥९॥
अनेक शूर शत्रुपेट फाड रहे युद्धमें ॥
अनेक शूर शत्रुकोलताड रहे युद्धमें ॥१०॥
अनेक शूर शत्रुकोपछाड रहे युद्धमें ॥
अनेक वीर शत्रुदल उजाड रहे युद्धमें ॥११॥
अनेक वीर शत्रुशीशकाट काट कटगये ॥
अनेक वीर युद्धमाहिं कुद्ध सहित उठगये ॥१२॥
अनेक वीर शत्रु शयन मारमूर हटगये ॥

अनेक वीर जूझते फिरैं इधर सुभट गये ॥१३॥
अनेक वीर शत्रु को मसान से लिपट गये ॥
अनेक वीर पैंतरे बदल बदल झपट गये ॥१४॥
अनेक वीर शत्रु सैन का संहार कर रहे ॥
अनेक वीर मार मार मार मार कर रहे ॥१५॥
अनेक वीर क्रुद्ध ह्वै गदा प्रहार कर रहे ॥
अनेक वीर शत्रु हनन का विचार कर रहे ॥१६॥
अनेक वीर शत्रु सैन घेर घार कर रहे ॥
अनेक वीर शीश कंठ पर कटार कर रहे ॥१७॥
अनेक वीर जीत पाय कर जुहार कर रहे ॥
अनेक वीर जयति जयति बार बार कर रहे ॥१८॥

दोहा

लरत धरणि पर धरणि हित नभ में अवल नहित
हमलें हमलें कर मरत को अलि तन देत ॥१॥
लरत मरत पुनि उठि लरत देखें को ले आज ॥
अवल न कारण युद्ध में करत स्वर्ग में साज ॥२॥

राग काफी

महावीर वधीर धरणि पर दुख निवारण
लरत मरत फिर भिरत समर सैन पेट भरत सुरपुर में
बहुरि लरत लरत नाश कारण
लरत सकल शस्त्र धार कहत वीर बार बार मार
मार मार मार निकसत मुख मारण
देख एक शुभग नारि आपस में करत रारि है हमा
रि है हमारि झगरत जिमि वारण
लरत मरत नारि हित तरवत माहिं प्राण देत जौन जौन

जन्मलेत सीखत संहारण

(राजा विक्रमके पास आकर)

दूत०-परमेश्वरकी कृपासे शत्रुसे विजय पाई माधोनलके हाथ जीतरही आपके प्रतापसे शत्रुकी सबसैना तितर बितर हो गई अरु कामसेनका पुत्र मदनादित्य माधवनलके हाथसे मारागया विजय भैरव कटक छोड भाग निकला दलमें जीतका डंका बजादिया अरु आपका सब परिश्रम परमेश्वरने सफल किया अब संध्यासमय जान सबबलवानमैदान छोड अपनेअपने स्थानको जातेहैं (अरु यवनिका गिरतीहै).

इतिश्री माधवनल कामकंदला नाम नाटक शालिग्राम वैश्यकृत षष्टमो अंक समाप्तम ॥ ६ ॥

सातवां अंक

स्थान रणभूमि

(कामसैनका पौत्र रणधीरसिंह अपनेपिता मदनादित्यकी लोथलेस्थानपर आताहै अरु सबदलमें हाहाकार मचताहै).



काम॰– हाय पुत्र आज तुम रणभूमि छोड वैकुंठवासीहो गये हाय हम किसका नामले पुत्र पुत्र पुकारेंगे हाय मेरे नेत्रोंके सन्मुख तुम्हारी यह गतिहो जोमें यहजानता कि रणमें तुम्हारा मरण होगा तो तुमको मैं अकेला कभी नहीं भेजता हाय पुत्र मैंनेतुमको बहुतेराबर्जा परंतु तुमने मेरा एक कहा नहींमाना हाय मेरासब परिश्रम परमेश्वरने निष्फल करदिया अरु मेराभी जीना व्यर्थ है हे पुत्र अबतो मेरे मरणका समयथा मेरे बदले तुमने अपना प्राणदिया हाय पुत्र इस समय

ऐसा कठिन दुख दिखाया हे पुत्र मेरे ऊपर जराभी विप त्ति पडती थी तो तुम। वारंवार बुझ ते थे कि पिताजी क्यों उदास हो रहे हो अव मेरा विलाप सुन क्यों नहीं उठके धीर्य देते अव ऐसा मोनसा धा किसी की भी नहीं सुनते हाय अव मैं नगरमें क्या मुंह दिखाऊंगा सवलोग परिहास करेंगे कि पातर के पीछे पुत्रका विनाश करा दिया इन वातों के सहनेको मेरा हृदय वज्रका होग- या जो नहीं फटता हाय तुम्हारा मृतक शरीरमें अपने नेत्रोंसे देखूं अरु मेराहृदय विदीर्ण नहो धिक्कार है ऐसे जीतवको हे परमेश्वर मेरे प्राण क्यों नही लेता यह कठिन कठोर कष्ट मुझसे सहा नहीं जाता.

मंत्री०- महाराज ईश्वरकी गति अपरम्पार है उसकी महिमा किसीसे जानी नहीं जाती इस समय सोच संकोच करना वृथाहे चतुर मनुष्य हानिलाभको समान मानते हैं विलाप करना मूर्खोंका काम है दूसरे आप के शिरपे शत्रु गाज रहाहै यह समय धीर्यका है तु म जो इस सोच सागरमें पडेहो तुमको राजके भंगहो नेका कुछ भी भय नहीं अव आप धीर्य्य धारिये अरु कुछ उपाय करिये अपने इष्टदेवको मनाइये क्यों कि इसी समय कोई काम न आया तो फिर किस सम य काम आवेगा-

राजा०- मेरी इष्टदेव तो दुर्गादेवी हैं.

मंत्री०- महाराज आज युद्ध तो वंद रखिये अरु श्री भवा नी महारानीका पूजन कीजे जो इस विपत्तिमें आप सहायकरे वहतो अनेक कष्ट भंजनी दुष्टदलगंजनी

भक्त मन रंजनीहै जिसने उसकी चरण शरण लीपल मात्रमें उसका कष्ट निर्वारण हो गया.

राजा॰- (स्तुति करताहै) हे देवी॰-

श्लोक

ब्रह्मावेदनिधिः कृष्णोलक्ष्म्यावासः पुरन्दरः।
त्रिलोकाधिपतिःपाशीयादसाम्पतिरुत्तमः १
कुवेरो निधिनाथो भूद्यमोजातः परेतराट ॥
नैऋतोरक्षसान्नासौ भोजातोह्यपोमयः २
त्रिलोक वन्धोलोकेशि महामांगल्यरूपिणी।
नमस्तेस्तु पुनर्भूयोजगन्मातर्नमो नमः ३

हे आम्बिके तूभी इस समय सोगई यह सब अवस्था तेरीही सेवामें व्यतीतकी परंतु तुझको कुछभी ध्यान नहीं तेराही वडा भरोसाथा सोतैंने भी सुधि नहींली आजहीके दिनके कारण तेरी टहलकीथी जो तू सच्ची सुखदानीहै तो शीघ्र आन मेरे सुतको जीव दानदे (यह कह मूर्छित हो गिरपडा).

मंत्री॰- महाराज उठिये वुद्धि शुद्धि रखिये आप घवराते किस कारण हैं वह देखो सिंहारूढ अस्त्र शस्त्र धारणकिये चौसठ योगिनि बावन भैरव वीर वैताल संगलिये मदका प्यालापिये एक हाथमें खप्पड एक हाथमें त्रिशूल शेष हाथोंमें अनेक अनेक शस्त्रलिये श्रीमती भगवती ललकारती ववकारती मार मार पुकारती धूम धामसे चली आती है.

देवी॰- किधरहैरे कामसेन किधरहै मेरे सन्मुखआ घवराना मतिमैं आन पहुंची वेगवता तुझे किसने स

ताया मैं अभी क्षणमात्रमें चंड मुंडकी भांति उसका मुंड काट तेरा चित्त संतुष्ट करूंगी.

कवित्त

केसे यह रुंड मुंड झुंड परे लोथिनके भूमिला
ललाल है किमैंहीं आज लालीहूं कवने सतायो
तेंहि अभी खंडखंड करों अवल अरक्षणकीर
क्षप्रतिपालीहूं। फोरिडारों वसुधा मरोरिडारों सु
रुगिरिकालचक्र तोरिडारों आजु मैं वहालीहूं।
कालीकरों अरिकु आज शत्रुविकराली करों
जंगभूमिलाली करों तो मैं महाकालीहूं॥

काम०-(चरणारविन्दकी वन्दनाकर) धन्य है मात धन्य है जो मुझे इस विपत्तिकालमें दर्शन दिया अरु इस समय आय सहाय करी.

देवी०-हे पुत्र बताता नहीं तुझपर क्या विपत्ति पडी जो तैंने मेरा स्मरण किया.

काम०-हे भगवती इस माधवनल ब्राह्मण निलज्ज भिक्षुक दुराचारीने अति अनीतिकर मदनादित्यको मारडाला अरु सब सेनाको तितर बितर करदिया (यह कह मदनादित्यकी लोथ देवीके आगे धरदी).

देवी०-अरे मदनादित्य उठ मैं तेरे मुखमें अमृतकी बुन्द चुवातीहूं.

मद०दि०-(पढाहीपडा) कहां है माधवनल अरे निलज्ज मेरे सन्मुखसे भागगया (यह कहता हुवा उठकर बैठगया) देखैतो देवी साम्हे खडी है (देवीको देख चरणोंमें शिर नवाय यह कवित्त पढने लगा).

कवित्त

बैरीझुंड मुंडमुंडलुंडसे भरनकुंड प्रबलप्रचंड
मुंड सुंड मुंडखंडिका।स्वपक्षपक्षरक्षिणी विप
क्षपक्षयक्षिणी जासंगलक्षयक्षिणी विपक्षप
ण्डदण्डिका।दासहितकारिकासुदासदुखदारि
का अदासगणमारिका प्रसादकीकरण्डिका।
हिमगिरिदारिकाशिवाई अंगधारिका औदेव
परिचारिका शिवन्तुदातुचण्डिका ॥१॥
असुरवलदारिणी स्वबल भलभारिणी सक
लखल नारिणी हिमाचलकी बालिका।चु
गुलकुल मारिणीविपुलरिपुहारिणीवरसिंह
चारिणी अनाथनकी पालिका।कुटिलविदा
रिणी भवाम्बुपारतारिणी औभक्तमनसारि
णीहे रुष्टपुष्टघालिका।दिगम्बर विहारिकीश
मनभयवारिणीस्वदासहितकारिणीपुनात
मातकालिका ॥२॥

यह कह गिरगिराकरचरणोंपर गिरपडा.

माधो०-देवीकादल देख शिव शिव पुकारा हे शंकर हे शशि
शेखर हे त्रिशूलपाणि हे त्रिपुरारि हे मकरध्वज भंज
न हे गंगाधर हे पिता यह समय सहाय करनेका है आज
कामसेनके दल कालिका आगई है आप कृपाकर आ
य मेरी सहायकीजे ध्यानके करतेही भोलानाथका
आसन डोला अरु ध्यान छूटा.

शिव०- ध्यानके छूटतेही ध्यान किया हे पार्वती इससमय मेरे
पुत्र माधवनलपर कुछ भारी भीर पड़ीहै जो मेरा स्मरण

किया इस्से अव अपने आत्मजकी चिंतामेटनी चाहिये

पार्वती०-हे नाथ आपजायंगे वा वीरभद्रको भेजोगे.

शिव०-हे चंद्रानने मेरे जानेकी क्या अवश्यकताहै वीरभद्र ही सबकाममें चतुरहै.

पार्वती०-अच्छा महाराज जोइच्छा.

शिव०-वीरभद्र अभीबारहगण अरु वीस सहस्र सेना संगले वहुत शीघ्र कामावती नगरीमें जाय माधवनलकी सहायकर.

वीर०-जो आज्ञा मैं अभीजाकर कामसैनका विध्वंसकरे डालताहूं गया.

दूत०-उत्तर दिशाकी ओरदेख महाराज सोचनकी जो वहदेखो शिवसैना काली काली घटासी उमडी चली आनीहै वीरभद्र जटाजूट वांधे तनपर भस्म चढाये भांगधतूरा खाये कानोमें सर्पाकार कुंडल अरु वृश्चिकाकारमुद्रा ललाटपर लाल चंदनका त्रिपुण्ड लगाये शिरपर सर्पोका मुकुट सजाये सेतपीतनागोंका उपवीत गलेमेंडाले वाघम्बर ओढे मुण्ड माल घाले काले काले व्यालोंका हारकिये त्रिशूल पिनाक खप्पड झोली लिये महिषपर सवारीकिये लाललाल नेत्र करे भयंकर वेषधरे महाकाल विकरालरूप वनाये भूत प्रेत पिशाच गणादिकी वीस सहस्र सैना सजाये मानो महा प्रलय करनेको बारह गण अत्यन्त विपरीति भयानकरीतिसे इसभांति गाते वजाते भूत प्रेतोंको नचाते धूमधाम मचाते धूरि उडाते चले आतेहैं इसभयंकर सैनाको देख कौन ऐसा धीर्यवानहै जो भय भीत नहो वातकी वातमें वीरभद्रसे

ना समेत माधोनलके दलमें आपहुंचा देखातो सामने दे
वीकी सेना भी सजी खडीहे.

माधो०- शिवदल देख प्रसन्न हो हे भ्रातृगण इससमय वि
ना आपके कौन रक्षाकरने वालाहे आप आगये अब
मेरे मनको धीर्यबंधा एक देवीक्याअबसहस्र देवीभी
आ जाँयतो कुछ संशय नहीं.

दूत०- महाराज आज बडा घोर युद्ध होगा उधरतो कामसेनने
देवी बुलाई हे अरु इधर माधवनलकी सहायको शिव
सेना आईहे दोनों ओर युद्धके बाजे बाज रहेहें शूरवीर
रावत अस्त्र शस्त्र साज रहेहें अधीर कायर खेतछो
ड छोड भाज रहेहें भूत प्रेत पिशाच महाकाल समगा
ज रहेहें सदा ऐसेही वेसोंसे काम पडाहे अबतक वीर
कोई नहीं मिला जो तुझको बलका बडा घमंडहे तो मेरे
सन्मुख आ अरु वीरोंके बलकायु नद देखा चाहेतो
धर्मयुद्ध कर एकसे एकका जोड मिलामदनादित्यनेभी
इसबातको स्वीकार कर लियाहे.

परमेश्वर आज कुशल करे महाराज आज दूसरा
महा भारत हे। वह भारत तो कानोहीसे सुनाथा परंतु
यह भारत सदृष्टः-

इधरमहाकालरूपवीरभद्रउधरमहाविकरालरूपकालिका
इधरमहाबलशालीमाधवनलउधरमहाराजकुमारमदनादित्य
इधर महावीर वज्रनाभ उधर रावत रणेंद्र.
इधर महामल्ल मेघडम्बर उधर बलवंत दलथम्भन.
इधर बलवान अरिमर्दन उधर बलीवज्रायुधा.
इधर योधा सुधाजित उधर बलीष्ट दीर्घबाहु.

इधर सावंत शत्रुनाशक उधर महापुरुषार्थी दन्तवज्र

इस भांति योधाओंके जोड मिलाये गये हैं दोनों दल तुले खडे हैं!

रा०वि०- फिर जाकर देख अब क्या हो रहा है गया

दूत०- आकर पृथ्वीनाथ जब देवीने त्रिशूल सँवारा अरु काल भैरव ललकारा अरु योगिनी खप्पर लेले मुंह फैलाये खाऊं खाऊं करती शिवसेनके ऊपर दौडीं उस समय प्रलय दिखाई देती थी.

इधर वीरभद्र महाकोपहोकर अग्निबाण छोडने लगा देवीके सबदलमें हाहाकार मच गया लगीं योगिनीजलने जहां तहां अनलकी डीगें प्रज्वलित होगई जिधर देखो उधर ज्वालाहीज्वाला सब सेनामें हाला चाला पडगया लगे भूत प्रेत योगिनियोंके पीछे तालीपीटने पिशाचोंसे पीछा छुटाना भारी पडगया देवीने अपने दलकी यह दुर्दशा देख नेत्रोंसे जलधारा बहाय सब हाय हाय मिटायदी अरु फिर त्रिशूल लेकर के वीरभद्रका दल ऐसे काट डाला जैसे किसान खेतीको काट काट तिरछा डालदेहै ऐसे सब सेनाका बिछौनासा बिछादिया मानो प्रलय आगई.

वीरभद्रने जानाकि अब ठिकाना नहीं महाक्रोधितहो भूत प्रेतोंको आज्ञादीकी योगिनियोंके खप्पर फोड फोड गर्दन मरोड मरोड शिर तोड डालो एकको जीता मति छोडो आज्ञा पातेही लगे वीर योगिनियोंको मार मार भगाने अरु खप्पड चटकाने अरु देवीके दलको ठिकाने लगाने फिरतो ऐसी त्राहि त्राहि मचीकी उससमय

अपना धिराना कुछ नहीं दृष्टि आताथा कभी उधरहार कभी इधर हार योगिनी अरु भूत प्रेत परस्पर ऐसी मारामार कर रहेथे मानो होली खेल रहेहैं रुधिरने सबब रूप रंग रहेहैं रंगके बदले रक्तके पिचकारे चल रहेहैं हायहाय मारमार गानेका शब्द सुनाई देताहै सबकेमुखपर रुधिर गुलालसा दिखाई दे रहाहै गोले कुमकुमे से उछल रहेहैं लडाई क्याहै मानो रुधिरकी नदीपर बुढवा मंगल कामेला होरहाहै

कवित्त

लोथिनसे लोहूके प्रवाह चले जहांतहां मानो गिरन्हगेरूके झरनाझरतहैं॥ श्रोणितसहित घोरकुंजरकरारेभारकूकृतेसमूलबाजिवि टपपरतहैं सुभटशरीरनीर — चारीभारीतहां शूरनउछाहक्रूरकादरडरतहैं फेकारिफेकारि फेरुफेरुफारिफारिपेटखातकाककंकबाल ककोलाहलकरतहैं ॥१॥

ओझरीयझोरीकांधेआंतनकेसेलाबांधेमूंडकेकमंडलुखप्परकियेकोरिके। योगिनि जमातजारिझुंडबनीतापसीसीतीरतीरबैठीसीसमरसारिखोरिके। श्रोणितसोंसानि सानिगूदाखातसतुवासेप्रेतयकपियत बहोरिघोरिघोरिके। रणमेंबेतालभूतसाथ लियेभूतनाथहेरिहेरिहंसतहैंहाथजोरिजोरिके ॥२॥

दक्षिण द्वारपर युद्धाजित अरु शत्रुनाशक दीर्घबाहु

अरु दंतवज्रसे संग्राम कर रहेहैं यह चारो वीर कैसे रण धीरहैं मानो भीमजरासंध पूर्वकी ओर मेघडम्बर वज्रनाभ रणेंद्र अरु दलथंभनसे समरकर रहेहैं यह चारो सावंत ऐसे वलवंत हैं जैसे मेघनाद हनुमंत अत्यंत वलवान थे उत्तर दिशामें अकेला अरिमर्दन वज्रायुधसे युद्ध कर रहाहै यह दोनों योधा महावल शाली हैं मानो सुकंठ अरु वाली पाली वद वदलडरहे हैं.

दोहा- गज कहू केसन्मुरवलरें रणजूझेंअनमोग
शूरवीरगणियेसोई अपसर व्याहनयोग

चौपाई

अगिनवाण छूटें चहुं ओरा। चौंकिपरें हाथीअरुघोरा
दुहुंदिशिराग दुंद भी वाजें। कायरडरें सुभटरणगाजें
चटकें धनुषवाण जब छोडें रवायँवाण उरमुरवनहिंमोडें
लरहिंवीर टूटें गजदंता। अम्बारीचढिजाँय तुरंता
शत्रुशीशकाटहिंक्षण माहीं नेकशंकउरमानत नाहीं
लर हिंमरहिँउरशंकनमानें लिये फिरें कर लालकमानें
चलें चक्र अरु छुरी कटारी लरहिं सुभटरणभूमिमझारी
क्षणयक धनुषवाणसे लरें पुनिउठिमार रवडगकी करें
वरषे लोह उठे झनकारा। योधाकरहिंरवड्गकी मारा
रावतसे रावतजोलरहीं एकहिमार एक महिपरहीं
मारें रवडगउतारें मुंडा फरफराहिंधरणी पररुंडा
शूर जूझजे महिपर परहीं तेहूमार मार उच्चरहीं.
लरहिंकवन्धदोऊदलमाहीं निर्भय जुटतडरतजियनाहीं
अंगसेलनिकसेजोपारा दुहुंदिशिचलें रक्तकी धारा
शूर समरमें करनी करहीं घायल घूम घूममहिपरहीं

चांके शूरवीर जे भारी। ते गजकुंभ नहने कटारी
झरें खडग टूटें तरवारी। ते फिर काढहिँ छुरी कटारी
टूटहिं सुंड होहिं मुख भंगा। जनु पर्वत ते गिरहिँ भुजंगा
गज गयंद हय जहँ तहँ परे। जनु धरती पर पर्वत धरे
चडे वडे राव तरण भारे। गज के दंत उखार नहारे
दुहूँ दिशि सबल अबल नहिं कोऊ। तजैं वीर समा समदोऊ
योधा शस्त्र घात जब करहीं। हीसें हय हाथी चिंघरहीं
लरहिं एक ते एक नहारे। धनु ले तान तान शर मारे
वीर विषवुझे शर संहारें। रण में तक्षक से फुंकारें
शूर सिंह सिंहिनि के जाये। करें युद्ध नहिं हटहिं हटाये
शूर सुभट जे छुरियन लरहीं दोऊ जूझ धरणि पर परहीं
जूझें शूर परहिं भुइँ सेजा। लेहिँ योगिनी काढि कलेजा
भरे रक्त के कुण्ड अपारा। मानो अहिरावति की धारा
तहां अन्हात भूत वैताला। डाल गले मुंडों की माला
भूत पिशाच नाचत तहँ करहीं हरहर हर मुख से उच्चरहीं
भरवें मांस अरु रुधिर पियाहीं योगिनि काढि करे जारवाहीं

दोहा

योगिनि फोरें खोपरी जंबुक भरवें जु मांस
शूरन की गति देख कर शूरो होहिँ उदास ॥१॥
शत्रु सेन भागन लगी देखि कठिन संग्राम
बाजा डंका कटक में जीते शालियाम ॥२॥
आठ पहर बांधे रहत तीन तीन तरवार
तिन्ह पुरुषन की खोपरी खात गिद्ध अरु स्यार
उदय अस्त लो बंधरहीं जिन पुरुषन की धाक
तिन्ह की आँखें खात हैं काढि काढि कर काक ॥४॥

बड़ेबड़े जेश्वूरमा धरेमुकुट मणिशीश
पदसेठुकरावतनहीं तिन्हकीतनकसहीश ॥५॥
जेयोधासंग्राममें रहेसिंह समगाज
पाँवपसारेलेपरे समरभूमिमें आज ॥६॥
रणेंद्र वज्रायुधवलीदीर्घवाहुवलवान
तिन्हके उरकी अंतडी खैंचेंगीदड़स्वान ॥७॥
जोजोयोधायुद्धमें नामी अरु विख्यात
कागातिन्हकेमांसको नोचनोचकरखात ॥८॥
वीरोंमेंजेवीरवर गिनेजातदिनरात
तिनकी आज मसानमें कोउनवूझतवात ॥९॥
जिनके सन्मुख अपसरा करतनितनयेनाच
तिन्हके शिरकीगेंदकर खेलतभूतपिशाच ॥१०
जिन श्रूरोंकासमरमें नामसुनत घवरांय
तिन्हके शिरकोपांवसे ठुकरातेघिनयांय ॥११
विजय आपके नामसे भईआजमहाराज
जयजयजययोधाकरतसमरभूमिमेंआज ॥१२
सेलधमाकेजेसहैं करें खड़गकीमार
श्रूरातेईसराहिये सहैंलोहकीझार ॥१३॥

पश्चिमकी ओर महापराक्रमी माधवनल अकेला मदनादित्यके सन्मुख संग्राम कर रहाहै अरु दोनों ओर से वर्षाहो रहीहै अरु वीरोंके शरीरोमें चलनी केसे छिद्र दृष्टि आतेहैं जबलडते लडते संध्याकाल होगया तव माधवनलने क्रोधमें आन एक वानतान कर ऐसा मारा कि मदनादित्य काशीश धडसे कटकर कटकसे वाहर अलगजा पडा झटवीरभद्रने उठायके लाशपर

महादेवजीके पास वगदायदिया देवी शीशके पीछेग ई माधवनलने कवन्ध छीन आपके दलमें भेजदिया कामसेनकी सेनामें भाजड पडगई उनके पांचोसेना पति मारेगये कामसेन रणभूमि छोड भागगया देवी की सेना वीरभद्रने भगादी आपके लाशको चला गया सबदलसें आपके प्रतापसे आनंदके बाजे बाज ने योधाअरु यूथप किलकारी मारमार पुकार पुकार आपकी जय बोल रहेहैं (अरु शस्त्र खोल खोल अप ने अपने डेरेपर धरतेहैं अरु यवनिका पतितहोतीहै

इतिश्रीमाधवनल कामकन्दला नाम नाटक शालि ग्राम वैश्यकृत सप्तमो अंक समाप्तम् ॥७॥

आठवां अंक

कामसैनके डेरे

कामसैन संग्राममें सब परिवार का मरण सुन विलाप करताहै। अरु मंत्री कामसैनको सैन विहीनमन मलीन देख समझाताहै।



मंत्री०- महाराज वीरविक्रमादित्य बडा बलवान दयानिधान राजाहै। उनसे सन्धिकरिके राज कुमारकी लोथले लीजे अरु कामकन्दलाको उनकी भेटकरदीजे वहवीरों से अमृत मँगाय अभी तुम्हारे पुत्रको जिवाय देंगे अरु कुंवर मदनादित्य नहीं जियातो आपके हृदयका दाह जीवन पर्यंत नजायगा सबसंकोचको त्याग क्रोधकी आग को शांतिकर दोनों हाथ बांध दांतोंमें तृणदबाय कामकन्दलाको आगेकर बेखटक राजा विक्रमादित्यके क

टकमें चले जाओ वह पूर्ण प्रतापी सब भांति आपका आ
दर सन्मान करेंगे आप कुछ चिन्ता न करें उनका नाम
पर दुःख हरण आनंद करण है उनके चरणोंकी शरण
लेना तुमको परमानंद दायक है.

राजा०- मंत्री तुम्हारे कहनेसे मुझको अग्रह नहीं परंतु बडी
लज्जाकी बातहै इस शरणसे मरण उत्तमहै

मंत्री०- महाराज राजनीतिका धर्महै काजके समय लाजको
विसारदे.

राजा०- वह भी तो समय था दूतको पठकार युद्धको तय्यार था
अब उनके सन्मुख नेत्र कैसे होसक्तेहैं.

मंत्री०- महाराज वह समय वोहीथा यह समय येहीहै कभी
नाव गाडीमें कभी गाडीमें नाव सदा एकसे दिन नहीं र
हते.

राजा०- मुझको तुम्हारा कहना स्वीकार है.

मंत्री०- अरे वसीठ.

वसी०- हां महाराज क्या आज्ञाहै.

मंत्री०- जा अभी कामकन्दला को बुलाला.

वसी०- अच्छा महाराज अभी जाताहूं (गया).

मंत्री०- यह बात और कहदेना सहेलियोंको संगलेती आवैदू
तगया

वसीठ०- हे कामकन्दला सोलह सिंगार बत्ती स आभूषण
सज शीघ्र सिधारिये तुमको आज महाराजने बुला
याहै

काम०- महाराजकी आज्ञा शिर आंखोंपर मैं अभी चलतीहूं

वसी०- महाराज कामकन्दला आगई

काम०- स विनय हाथ जोरि कर हे अवनीश क्या आज्ञा है.

राजा०- कामकंदला हमारे संग चल हम राजा वीर विक्रमादित्यका दर्शन करने चलते हैं

काम०- मुझको चलनेसे क्या आन है मैं अपने धन्य भाग्य समझती हूं। आपहीके द्वारा राजा बीर विक्रमादित्यका दर्शन हो जायगा.

राजा कामसेन मंत्री अरु सेनापतिको संग लिये कामकंदलाको आगे किये राजा बीर विक्रमाजीतके पासको जाते हैं अरु यवनिका गिरती है

इतिश्री माधवनल कामकंदला नाटक प्रथमो गर्भांक सम्पूर्णम् ॥

दूसरा गर्भांक

स्थान राजा बिक्रम का कटक

कामसैन राजा वीर विक्रमाजीतके कटकमें जाताहै अरु दूत महाराजसे जाकर कहताहै



दूत०-पृथ्वीनाथ राजा कामसैन प्रधान सेनापति संगलिये कामकंदलाको आगे किये आपसे मिलनेको आताहै

विक्र०-अच्छा बुलाओ

रा०का०-हे कृपासिंधु दीन बंधु

आपकी मैं शरणतकिके आया। तुमको ईश्वरने राजा बनाया॥ मुझको अभिमान था दिलमें भारी, है न मुझसा कोई तेजधारी ऐसा अभिमान दिलमें समाया। तुझको ईश्वरने राजा बनाया ॥१॥ जबकि सब दल कटा अरु मैं हारा

मेरे सुतको भी माधोने मारा । विधिने सब गर्व
मेरा घटाया । तुमको ईश्वरने राजा बनाया ॥ २ ॥
मेरा अपराध कीजे क्षमा अब । मैं शरण हूं श
रण हूं शरण अब । मैंने जैसा किया वैसा पाया
तुमको ईश्वरने राजा बनाया ॥ ३ ॥ कृपा हे ज
गतपति इतनी कीजे । मेरे बेटेको जीदान दीजे
पहिले नलको भी तुमने जिलाया ॥ ४ ॥
विक्र०-मति करो शोच अरु फिक्र प्यारे । मैं जिला
दूंगा सुतको तुम्हारे । अब न समझो तुम अप
ना पराया ॥ तुमको ईश्वरने राजा बनाया ॥ ५ ॥
मित्र तुमको न चहिये था ऐसा । विप्रके संग क
रा काम जैसा । उस्की प्यारीको तुमने छुटाया
तुमको ईश्वरने राजा बनाया ॥ ६ ॥ जबकि
माधोको तुमने निकाला । उस्का दुख देख दि
ल मेरा हाला ॥ मैं उसी वक्त दल्ले सिधाया ७
जो न नलको तुम इतना सताते हम न हरगि
ज यहां चढिके आते । सारा झगडा तुम्हींने
मचाया । तुमको ईश्वरने राजा बनाया ॥ ८ ॥
जो कुछ होनी थी वह सब हुई अब शीघ्र दो
नोंकी शादी करो अब । जिसलिये रंज इतना
उठाया । तुमको ईश्वरने राजा बनाया ॥ ९ ॥
दोष इसमें नहीं कुछ तुम्हारा । होनीसे कुछ
न चलता है चारा कौन जोने है ईश्वरकी मा
या । तुमको ईश्वरने राजा बनाया ॥ १० ॥
का०सै०-प्रभु धन धन है महिमा तुम्हारी सुत जियाला ज

रवरवोहमारी॥मोहनिद्रासे मुझको जगाया
तुमको ईश्वरनेराजाबनाया ॥११॥

राजा वीर विक्रमाजीत कैलाशपर शिवजीके पास वीरों को भेज मदनादित्यका शीश मँगाताहै अरु कबंधसे जोड अमृत मुखमें टपकाताहै अरु मदनादित्य किधरहै रे माधवनल किधरहै यह कहता हुवा उठकर बैठजाताहै विक्रमको अरु अपने पिताको एक ओर बैठादेख मनमें लजियाताहै अरु दोनों हाथ जोड राजाको मस्तक झुकाताहै अरु राजा वीरविक्रमाजीत मदनादित्यकी पीठ ठोक धन्यवाददे उठाताहै अरु माधवनलको बुलाताहै अरु दोनोंकापरस्पर मिलाप करातांहै अरु माधवनल कामकंदलाका दरशन पाताहै अरु वीणा बजाकर यहपद गाताहै.

राग भैरवी

आजसब भयोमेरो मनभायो
ज्योंचकोर आनंद चंदलखरंकमहाधनपायो।
मूरिसजीवन पायमृतकज्योंफूलो अंगनसमायो
नयनविहीनतीन पुरलखके आनंदउरअधिकायो
गूंगाज्यों मिष्ठान खाय करमनही मनमुसिकायो
रोगबिहायपायसुंदर तनज्यों मन हर्षबढायो
ऐसेही आज पाय सुखसम्पति मेरो मन हरषायो
जोजो आनंदहोत चित्तमें प्रगट नजात जतायो
आजविधाता भयोदाहिनो बानकसकलबनायो
धन धन धन नरनाथ आपको सुयशजक्तमें छायो
जान अनाथनाथ मोहिं तुमने भली भांति अपनायो
मूरिसजीवनलायलखनको ज्यों हनुमान जिवायो

त्योंतुमनेंमोहिंविप्रजानके मेराप्राणबचायो
दीनदुखहरणनामतुम्हारोसबकवियोंनेगायो
शालिग्रामआजमोहिंप्रभुनेसबऐश्वर्य्यदिखायो

रा० का०- महाराज आपतो सर्व विद्यानिधान अरु बुद्धिवान निकले.

माधो०- पृथ्वीनाथ सब आपहीका प्रतापहै.

रा० का०- हे महाराज मैंने माधोको ऐसा गुणी नहीं जानाथा मेरेनेत्र इनके सन्मुख नहीं होते आपनेभी इनके कारण अत्यंत परीश्रम उठाया परंतु अब मेरे ऊपर कृपा करकेकिंचितमात्र परिश्रम और भी उठाना पडैगा.

रा० वि०- क्या.

रा० का०- हे नरनाह मेरे नगरमें चलकर मेराघर पवित्रकीजे अरु माधवनल कामकंदलाका विवाह करादीजे क्योंकि कामकंदला यह दोहा दिनरात पढे करैथी

दोहा

पियप्यारे जादिनमिलैं तादिनमनआनंद
बाढेसुखसबअंगमें कटैविरहदुखदंद १

सो आज आपके संयोगसे इनदोनोंका मनोर्थपूर्ण होगया अब सब मंगला सुखियोंको बुलाय नगरमें पान मिष्टान बटवायदीजे।

राजा वीरविक्रमादित्य कामावती नगरीको जातेहैं अरु यवनिका पतितहोतीहै.

इतिश्री माधवनल कामकन्दला नाम नाटक शालिग्राम वैश्यकृत् अष्टमोअंक समाप्तम्.

नवमा अंक
स्थान नगर कामावती

राजा वीर विक्रमादित्य सिंहासनपर बैठेहैं माधवनलका मकन्दलाके फेरे फिर रहेहैं आनंदके बाजे बाजरहेहैं घर घर मिष्ठान वट रहाहै मंगलाचारहो रहाहै कामसेन काम कन्दला माधवनलको समर्प्पण करताहै अरु दोनों रंगम हलमें जातेहैं.



म०मो०- हे प्यारी तुमने अपने प्यारेके कारण जो महा कठिन कठिन कष्ट उठायेथे सो आज अपने सब मनोर्थ पूर्ण कर लो अरु अपने हृदयकी तप्त बुझालो क्योंकि तुम्हारे भी तम शय्यापर तुम्हारे नेत्रोंके सन्मुख बैठेहैं नेत्रोंमें जल भरकर हे मनरंजन आपके दर्शनसे में कृतार्थ होगई आ ज परमेश्वरने सर्वानंद दिखाकर मुझको सर्वानंदी ब

ना दिया ! अब मुझको संसारमें किसी बातकी कांक्षा नहीं रही अब बारबार आपसे येही वर माँगतीहूं मुझको अपने चरण शरणसे विलग नकरना अरु मेरे मनमें येही इच्छाहै जन्मभर आपके चरण धो धोकर चरणामृत पीती रहूं.

काम०-हे प्यारी हमारी भी यही इच्छाहै तुमको क्षण भरको अपने नेत्रोंसे न्यारी न करूं अपने नेत्रोंके सन्मुख बैठाय दिनरात तुम्हारी बांकी झांकी निहारता रहूं.

दोनोंको एक जगह बैठा देख मदनमोहनी यह भैरवी गातीहै-

भयो मन आनँद लख शुभ जोरी
एक ओर माधोनल राजत एक ओर मदन किशोरी
मानहुँ रतिपति पति दोउ सोहत लख जेहि चंदल जोरी
त्रिलोकीको रूप विधाता लायो चोरी चोरी
उसी रूपसे माधोनल अरु रची कंदला गोरी २
हे मनोज मंजरी सकल मिल कन्दल पास चलोरी
आज कभी है कोन बातकी आनँद सिन्धु भरोरी ३
काम कंदला नलकी जोरी युग युग सुबस बसोरी
शालिग्राम काम भयो पूरण पूरण योग मिलोरी ४

सब सखी०-हे प्यारी अबतो पांचो घीमें है अबतो सब मनोर्थ परिपूर्ण हो गये मन माना वर मिलगया लो अब पारतो षिक दिलाओ.

काम०-हे प्यारी यह सब तुम्हारेही चरणोंका मतापहै मेरी क्या सामर्थ थी जो अपना मनोर्थ सिद्ध करती अरु पारतोषिक क्या वस्तु है यह तन मन धन सब आपहीका है. अब मेरी परमेश्वर से यह प्रार्थना है कि जैसा मेरा मनोर्थ सिद्ध हुवा ऐसेही तुमको मन भावने सुहावने वर मिलें अरु

तुम्हारी इच्छा पूर्ण हो अरु वह आनंदसें अपने नेत्रोंसे देखूं अरु अपने हृदयकों ठंडा करूं. यह बात सुन सब सखी हँसि पडती हैं अरु नैपथ्यमें बाजा बजने लगता है अरु धीरे धीरे यवनिका गिरती है.

इतिश्री माधवनल कामकंदला नाटक शालिग्राम वैश्यकृत नवमो अंक समाप्तम्.

दशमा अंक.

स्थान नगर कामावती

राजा विक्रमादित्य सिंहासनपर विराजमानहैं सचिव सैनप समीप खडे हैं कामसेन अरु माधवनल निकट बैठे हैं



विक्रमा०- तुमको बडा क्लेश हुवा पुत्रका दुःख देखना

पडा सहस्त्रों वीर तुम्हारे मारे गये जगत्में दुर्नामता हुई परंतु तुम किंचित् मात्रभी संदेह न करना मैं तुमसे अत्यंत प्रसन्न हूं जो आपकी इच्छा हो सो मांगो.

काम०-महाराजमैं क्या मांगू आपने मुझे ऐसा अमूल्य रत्न दिया जिसका कुछ वर्णन नहीं हो सक्ता पुत्रसे अधिक और क्या वस्तु है सो आपने मेरा दुसह दुःख देख अमृत मँगाय मदनादित्यको जिवाय मुझे कृतार्थ किया इस्से अधिक और क्या वस्तु है जो याचना करूं अब आप मेरे ऊपर सदा अनुग्रह रखना अरु मेरी अज्ञानता पर दृष्टि न करना.

विक्रम०-माधवनल तुमने कामकन्दलाके कारण बडा परिश्रम उठायाथा सो सब मनोर्थ ईश्वरने तुम्हारा परिपूर्ण किया अब जो कुछ कांक्षा आपके चित्तमें हो सो कहिये.

माधो०-हे अवनीपति आपके यहां किस वस्तुकी कमी है तुमको विधाताने ऐसा दाता बनाया है जैसे किसी समयमें दधीचि और दशरथ हुए हैं अरु मैंने जिस कामकन्दलाके कारण घर बार त्याग वैराग लियाथा सो कामकन्दला कामसेनसे आपने मुझको समर्पण करादी अब मेरा कोई मनोर्थ शेष न रहा परंतु एक अभिलाषा और रहगई सो कहते हुए मुझको संकोच लगता है.

विक्रम०-नहीं नहीं तुम निसन्देह कहो मैं सब भांति आपकी इच्छा पूर्ण करूंगा.

माधो०- दोहा.

प्रिया सहित सैनासहित आपसहित नृपराय
लख्योचहत पुष्पावती तातमात के पाय ॥१

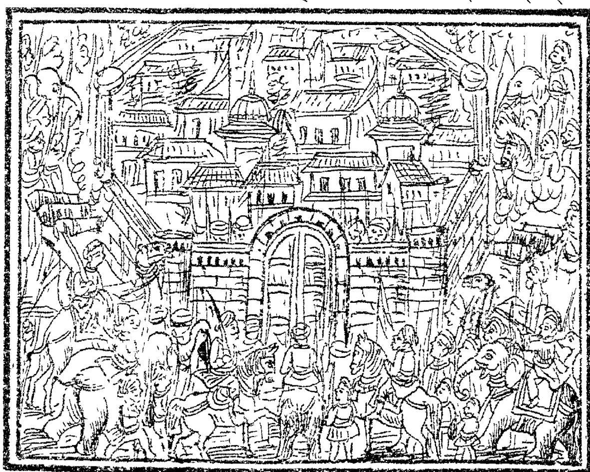
विक्रम०-हे माधवनल हमको तुम्हारा कहना सब भां-
ति स्वीकार है.

राजा विक्रम सैना समेत माधवनलके संग जाता है अरु पुष्पावती नगर नियराता है अरु यवनिका धीरे धीरे पतित होती है.

इति श्री माधवनलकामकंदला नाटक प्रथमो गर्भांक समाप्त.

दूसरा गर्भांक

पुष्पावती नगरके चारों ओर राजा वीर विक्रमादित्यका कटक छा रहा है तोपोंकी बाडै झड रहीं हैं.



दूत०- महाराज कोई राजा नगरपर चढि आया है अग-

णित सेना संग है.

गोविन्द०- हे मंत्री हे शंकरदास पुरोहित जाकर देखो तो कौन नरेश नगरपर चढ आया.

मंत्री०- पुरोहितजी भण्डारसे उत्तमोत्तम रत्न अरु सुंदर सुंदर हय हाथी सजाकर राजाकी भेट करो अरु जो न मानै तो युद्धका सामान करो.

पुरोहित जाता है.

राजा विक्रम दलमें विराजमान है माधवनल समीप वर्त्ती है सचिव सेनापति हाथ बांधे खडे हैं.

पुरोहित०- हे महिपालमणि आशीर्वाद धन्य है हमारे राजाका भाग्य जो हमें आपने घर बैठे दर्शन दिया परन्तु अब आपका निमंत्रण है आज हमारे राजाके यहां भोजन करना होगा अरु यह आपकी भेट है.

विक्रम०- प्रणाम आपने बडी कृपा करी भेटकी क्या अवश्यकता थी विराजिये विराजिये कुछ संदेह न कीजे केवल हम आपके राजासे मिलनेको आयेहैं.

शंकरदास माधोनलको देख आंखोमें आंशू भर लाता है.

हे द्विजराज इस समय आपको क्या कष्ट हुवा जो नेत्रोंमें नीर भर लाये जो दुःख तुम्हारे चितके अंतर होसो वर्णन कीजे मैं अभी आपकी आशा पूर्ण करूंगा जो धनकी इच्छा हो तो कोशाधीश तुमको करदूं जो पृथ्वीकी कांक्षा हो तो पृथ्वीराज बनादूं जो किसीने क्रुद्ध होकर आपकी ओर देखा हो तो आधा भूमिमें गडवाकर बाणोंसे बिंधवादूं परंतु अपने मनका भेद प्रगट कीजे.

शंकर०-नेत्रोंमें नीरभर कर. **दोहा**

अतिदुरवदुर्लभमोहिन्नृप महापापकोफंद।
कहाकहों दुरवकीदशा भाग्यमोरअतिमंद १

सोरठा

मोरपुत्रसुकुमार उत्तमगुणनिर्दोषअति
ताको देशनिकार दियोचन्द्रमतिमन्दनृप

जिस दिनसे मेरा पुत्र घरवार त्याग प्रवासी हुवा है उस दिनसे न नींद है न भूख है न प्यास है चित्त अत्यंत उदास है परंतु किसी किसीके मुखसे यह सुना है कामावती नगरीमें हमने अपने नेत्रोंसे देखाथा परंतु फिर सुधि नहीं कि अंतको क्या हुवा.

हे नृपेंद्र यह कठिन कष्ट मुझसे सहा नहीं जाता अरु पुत्र विन मुझे सब संसार अँधियारा दृष्ट आताहै ईश्वर मुझको मृत्युभी नहीं देता अरु इस समय नेत्रोंमें जल भरनेका कारण यह है। यह जो ब्राह्मणका लडका आपके निकट वर्ती है मेरा पुत्रभी इसीकी अनुहार है इसकारण इसके मुखारविन्दको निहार मुझे अपने पुत्र माधवनलका स्मरण हुवा इसलिये आंखोंसे आंसू टपकने लगे.

विक्रम०- ब्राह्मणकी यह दशा देख मंत्री भण्डारीजो ब्राह्मण भेट लाया है पांच लक्ष रुपये अरु सुंदर सुंदर आभूषण मुक्तमाल सहित इस ब्राह्मणको देदो.

मंत्री०- जो आज्ञा महाराजकी.

विक्रम०- माधोनल येही हैं तुम्हारे पिता.

माधो०- हां पृथ्वीनाथ.

विक्रम०- पिताको प्रणाम क्यों नहीं किया.
माधो०- आपके भयसे.
विक्रम०- पिताके चरणोंको दंडवत करो.
माधो०- चरणोंमें शिर झुकाकर हे पिता-

दो० कृपादृष्टिकरदेखिये मैंहीनलअज्ञान
दुखसुखअपने भागको भोगमिलेउमेंआन

मेरी जीवनमूल जननीतो आनंद है.

शंकर०- हृदयसे लगाकर हे पुत्र तुझको देख सर्वानंद है आज हमारे भाग्यका भास्कर उदय हुवा आज त्रिलोकीकी सम्पदा मुझको मिली आज मेरा जीवन सफल हुवा आज मेरे धर्मकी ध्वजा फहराने लगी आज मेरा दान पुण्य सन्ध्या तर्प्पण सब फलदायक हुवा आज मेरे वंशके अवतंशने संसारमें प्रकाश किया. **दोहा**

हवनपाठआगमनिगम आजसुफलममजान
प्राणसमानसुजानसुत मिलेउकुशलसोंआन

हे पुत्र इतने दिन कैसे व्यतीत किये.

माधो०- पिताजी मेरा क्या वृत्तांत बूझोहो जब मुझको राजा गोविंदचंद्रने अपने देशसे निकाल दिया तब मैं कामावती नगरमें पहुंचा अरु मनसें विचारा कि राजासे मिलूं

अत्योत्तम नगर निहार मार्गका सब श्रम विसार राजद्वारपर गया तहां नृत्य हो रहाथा. मुझको भिखारी जान किसीने भीतर न जाने दिया प्रतिहारके कठोर वचन सुन हारकर वहीं बैठ गया. प-

रंतु मैंने कान लगा ध्यान जो किया तो द्वादश मृदंग बज रहे हैं उसमें सात चारके मध्यमें जो मृदंगी मृदंग बजा रहा है उसका अँगुठा मोमका है. मैंने पौरियेसे कहा यह राजाभी मूर्ख है अरु इसकी सभाभी मूर्ख है जिने ताल स्वर पर्यंतका भी ज्ञान नहीं सातचार के बीचवाले मृदंगीका अंगुष्ठ मोमका है प्रतिहारने सब वृत्तांत राजासे कहा. राजाने मृदंगीको बुलाकर जो देखा तो अंगुठा यथार्थ मोमहीका है फिर तो भूपने मुझको बुलाकर बडा आदर सन्मान किया अरु उच्चासन बैठनेको दिया अरु सुंदर सुंदर वसन आभूषण पहनाय एक लक्ष रुपेयेका पारितोषिक मुझे दिया। मेरी चतुराई देख कामकन्दलाने ऐसी अद्भुत कामकला दिखाई उसकी चतुराई वर्णन करनेको मैं असमर्थ हूं. परंतु उसकी महिमा राजा अनारीनें न विचारी.

मुझको जो कुछ राजाने पारितोषिक में दिया था मैंने उसी समय उस चातुर पातुरको समर्पण किया अभिमानी राजाने तामस करके मुझे नगरसे निकाल दिया.

उसी समय मन कामकन्दलाकी भेटकर इसदेहने बनकी राहली

दोहा

निशिवासर बासर निशा चितविपरीति निदान
चलतवसततरोवतहँसत्त पुरउजेननियरान ॥१॥

सो० जबकृशभयोशरीर तबशिवकेमंदिरगयो

भईविरहकीपीर तीर तुल्य दोहालिखो २॥

उस शिवालयमें राजा विक्रमादित्य नित्य दर्शनके लिये आतेथे दोहा देख मंत्रीसे कहा उस वियोगी को दोही घडीमें मेरे पास लाओ

दोहा

यहसुन मंत्रीदूतसब सैनप अरु कुनवाल
ठौरठौर ढूढनलगे वृद्ध युवा अरु बाल ॥१॥

जब मुझको ज्ञानमती भानमती राजाके पास लाई राजाने मुझको नमस्कार कर अति आदर सन्मान से कुशल क्षेम बूझी अरु कहा तुमको किस बात- की इच्छा है अरु किसके विरहमें अपनी दुर्दशा कर रक्खी है आद्योपांत सब वृत्तांत सुनाइये पर- मेश्वर तुम्हारा सब मनोरथ पूर्ण करेगा.

जब मैंने अपनी सब व्यथा राजाको सुनाई तबरा- जाने चित्तमें अत्यंत खेदमान दूतको बुलाय उसी समय कामसेनके पास भेजा परंतु उस अभिमानीने एक न मानी निदान राजा विक्रमादित्य नव्वेलक्ष सैनाले कामसेन पर चढ गये जब भारी युद्ध मचा तब

दो० कामसैनसंग्राममें सबपरिवार जुझाय
राज्यछाडि तृणदन्तगहि परेउआयगहिपाय

सो० विक्रमदयानिधान कीन्हताहि सत्कारबहु
मोमनवांछितदान दियोबहुतसन्मानकरि

अब मुझको अपने संगले यहां पहुंचाने आये ऐसे महिपाल दीनद- यालु कहां प्रगट होते हैं जिनके प्रतापसे आपके चरणकमलका दर्शन पाया धन्य विक्रमादित्यसे दानी जिन्होंने आप पुत्रदान

दिया है पिता यह सब कथा संक्षेप मात्र तुमको सुनादी.

विक्रम०- शंकरदास तुमने अपने पुत्र माधवानलको पाया.

शंकर०- मनमें आनंद मान यह सब आपहीका मनाद है.

विक्रम०- तुम्हारे राजाका क्या व्योहार है किस भांति देश-
का विस्तार है कितनी सैना है मंत्री कौन वंशका है
कैसा चतुर है प्रजापर कैसी प्रीति है कैसी राजनीति
है सब रीती वर्णन कीजे.

दो० कहोसकलसमझायद्विज,जोकुछराजस-
माज। धर्मपंथपरकार्यको कैसीनयननलाज १

शंकर० (मनही मन) देशको अरु सैनाको अरु मंत्रीके कु-
लको राजाने क्यों बूझा (प्रगट) हे नरेंद्र देश सुभट
कुल सब पूर्ण है सैना अरु सैनप ऐसे रणहैं आजलों
उनकी पीठ किसी शत्रुने नहीं देखी मंत्री ऐसा चतुर
अरु प्रवीन है राजकाजका सब भार अपने शिरपर
धारणकर रक्खा है राजनीतिमें अत्यंत कुशल है
परंतु मंत्रीके मंत्र विन राजाने माधवानलको देशसे
निकाल दिया उस्का फल उपस्थित है.

दोहा

तुम प्रभु पूरण प्रण करण हरण सकल दुख दंद,
चकसो मोहिं नरेंद्र तुम जो कुछ चूक सुचंद १

विक्रम०- हे शंकरदास मेरा नाम पर दुःख दलन है मुझ-
से किसीका दुःख देखा नहीं जाता तुम्हारे कहनेसे
मैंने चंद्रका अपराध क्षमा किया अब तुम जा-
कर सब वृत्तांत चंद्रको सुनादो अरु समझादो ऐ-
सा काम फिर कभी भूलकर न करना माधवानलके

कारण हम यहां आये हैं अब चंदको अरु माधवा नलको मिलाना चाहते हैं माधवानलका हाथ चंदके हाथ दे हम अपने देशको जायंगे. अबआ प विलंब न कीजे चंदको यह उपदेश दीजे

दो० मिलिये माधोविप्रसे कीजेपूरणप्रीति
बहुरिनऐसीकीजिये द्विजकेसंगअनीति

शंकरदास जाता है अरु गोविंद चंदकी सभामें आता है अरु यवनिका धीरे धीरे पतित होती है.

श्री द्वितीय गर्भांक समाप्तम् ॥२॥

तीसरा गर्भांक

स्थान नगर पुष्पावती

राजा गोविंद चंदकी सभा लग रही है राजा और मंत्री शोचके समुद्रमें डूबे पडे हैं शंकरदास आताहै अरु स्वास्तिवचन पढकर सुनाता है.



मंत्री०-है तो कुशल.

शंकर०- आनंद! आनंद! परमानंद! कुछ भय नहीं सोच सं-
कोच दूर कीजे.

मंत्री०- कौन राजा है कैसे आना हुवा.

शंकर०- महाराज जब तुमने माधवानलको अपने दे-
शसे निकाल दिया तब माधवानल कामावतीमें
पहुँचा वहां माधोका नन कामकन्दलासे लग गया
कामसेननेभी उसे अपने नगरसे निकाल दिया मा-
धोने विक्रमादित्यको जा जाचा वीर विक्रमादित्यने
नव्वे लक्ष दलले कामावती नगरीपर चढ गये अ-
रु दोनोंकी कामना पूर्ण की यह वोही राजा वीर वि-
क्रमादित्य हैं माधवानलके पहुंचानेके लिये यहां
आये हैं इस विषयमें मंत्रीसे मंत्र लीजे अरु जो
जीमें आवैसो कीजे.

गोविन्द०- कहो मंत्री क्या करना उचित है.

मंत्री०- जो विक्रमादित्य माधोके उपकारी हैं तो अपना
परम हितकारी समझो जो माधो विरहरूपी समुद्र
में बहा जाताथा आपने उसे डुबोय कलंकका टी-
का अपने माथेसे लगायासो राजा विक्रमादित्य
आपका कलंक धोनेके लिये विरहके समुद्रसे मा-
धोनलको निकालकर आपके पास लाये हैं इनसे
अधिक मित्र और कौन होगा.

सो अब आपको उचित है कि महाराज वीर वि-
क्रमादित्यका दर्शन कीजे अरु जगमें यश लीजे जि-
सने हमारे साथ ऐसी भलाई की उस्से हम बुराई

कैसे करें. दोहा

जोपरकारजकेलिये रहतसदालोलीन।
तासोंपलपलमिलनको विधिहरिहरआधीन॥

जो ऐसे पूर्ण प्रतापी घर बैठे मिलनेको आवें तो अपना धन्य भाग्य जानिये.

दो० मंत्रीसज्जनसुभटवर पुरोहितसाहसंयान
सबकोलेकरसंगमें मिलिये कृपानिधान॥

गोविन्द०- जो सबकी इच्छा. दोहा

जोसामग्रीचाहिये लीजे शीघ्र मँगाय
सैनसुभटसंयुतसकल मिलेभूपसेजाय
सबदललेहुसजाय लालरतनकेथारभरि
दुंदभिशंखबजाय चलोभूपसेमिलनको

दूत०- महाराज गोविंदचंद आपसे मिलनेको आता है

विक्रम०- आनेदो कुछ सन्देह नहीं.

गोविन्द०- हाथ जोडकर मैं आपकी शरण हूं धन्य है मेरा भाग्य जो आपने दर्शन दिया अब मेरा अपराध क्षमा कर मुझको कृतार्थ कीजे.

विक्रम०- पीठपर हाथ धरकर हे भ्रातृ कुछ आप अपने मनमें संकोच न करना तुम मुझे छोटे भाईकी सम तुल्य हो परंतु परकार्य अरु नीति धर्ममें नित्य चित लगाना अरु माधोको मेरे समान जान्ना—

दोहा

थोरकहासमझोअधिक तुमजाननसबगाथ
माधोनलको गुरु समझ लेहु हाथमें हाथ १

अब आप इसके ऊपर दयादृष्टि रखना अरु हमको

बिदा देना.

गोबिन्द०- महाराज मैं तो माधोंकेभी चरणोंका दास हूं अरु आपकेभी चरणोंकाभी दास हूं दयाकी दृष्टि तो आपकी चाहिये.

नेत्रोंसे नीर बहाकर दोहा

लघु बाणी मम तुच्छ बुध तव यश अकथ अपार
शेषसहस्र मुखसे जपैं तोहु न पावहिं पार

विक्रम०-हृदयसे लगाकर हे माधोनल नित्य प्रति तात मातकी सेवा करना गो ब्राह्मण साधु संतकी रक्षा रखना अपने धर्म कर्मसे सावधान रहना जो कोई नवीन वार्ता अरु हमारे योग्य कार्य हुवा करैं सो लिखते रहना परंतु मायाके गर्वमें आन परमेश्वरको मति भूल जाना अब हम अपने नगरको जाते हैं फिरभी कभी दर्शन देना राजा वीर विक्रमादित्यका गमन.—

मातके निकट माधवानल अरु कामकंदलाका प्रवेश.

माधो०-चरणोंमें शिर झुकाकर हे जननी तेरे पदारविंदका दर्शन हमारे भाग्य में लिखाथा सो ईश्वरने करा दिया इस समय मेरा चित्त अत्यंत आनंद है अरु यह दासी तेरे चरण सरोज सेवनके निमित लाया हूं.

माता०-नेत्रोंसे अस्तुधारा बहाकर गद गद कण्ठ हो अरे माधवानल मेरे जीवन प्राण तू मुझको अकेला छोड कहां चला गया था षोडश वर्षसे पुकारते पुकारते परमात्माने आज मेरी टेर सुनी.

कन्दला०- चरणोंमें शिर धरकर हे प्रिय जननी इस

दासीकाभी पायलागन दण्डवत स्वीकार कीजै.

माता०- हे पुत्र वधू बृन्द सौभाग्यन सो पुत्रवती हो जिन-
का सुखार्विंद निहार मेरा चित्त परम प्रसन्न है. हे
पुत्री अपने जीवनका फल आज मैंने पाया. सब
जगत आज मुझे सुख सदृश आया. देवी देवताओं
ने अपना सत्य कर्त्तव्य दिखाया. हे सखियो क-
ठिनाईसे यह बडी विपत्तामें मुझे दिखाई है. आज
घर घर वधाई बांटो अरु मंगलचार करोः-

वधाई

आजमेरोवधूतहितसुतआयो घरघरआ-
नंदछायो। परदुखहरनकारणसुखदायक
विक्रम नृपलकहायो।।मेरीमाधोकोअपनेसं-
गले हमको दरशादिखायो ।।१।।
सकलसोचसंकोचशोकदुःसहएकछनमा
हिंमिटायो। धन धन धनाविक्रमनृपराई
हमकोआनजिवायो ।।२।।
हमरे जानआजब्रह्माने फिर संसाररचायो
जितदेखूं तित आनंदहुयरबोसंकटसकलनसायो ३
परसोंसे शिवपुरीकिलुपिरिके आजसुधनकोपायो
मोहिविधातानयोजाकिनो कियोमेरेमनभायो ।।४।।
माधोनलको मातापितानेपुनिपुनिकण्ठलगायो
शालिग्रामसवमनहींमन आनंदउरन समायो ।।५।।

वधाई

सबमिलमंगलगाओ आजसखीआंकरसु-
वनमनाओ। भरभरथारकपूरअरगजाआ-

रतिसुभगासजाओ। चित्र मध्य छिनमाध-
वानलको नहिं फिर मैंहे आओ ॥ १ ॥
करहु सिंगार साज आभूषण केलिन नीको
भराओ। ले मृदंग उपंग झाँझ डफ तौ सों भो-
ज नचाओ ॥ २ ॥
भरभर अबिर गुलाल झोरि मैं केसर रंग छ-
नाओ। खेलो फाग बाग में सब मिल आनंद
की मौज उडाओ ॥ ३ ॥
थर थर ध्वजा पताका तोरण सुंदर कलश
धराओ। पुष्पावती नगर में आनंद सुहि-
हित पुष्प बरसाओ ॥ ४ ॥
इति श्री माधवानल कामकंदला नाटके ... मुरादाबादवासीकृत दशमो अंक समाप्तम्



हिंदुस्थानी भाषाके ग्रंथ विक्रीको तयार हैं.

नाम	रु०	डा० म०
न्यायप्रकाश परमोत्तमपिढलानंदस्वामीकृत	८	१
योगवासिष्ठसार ६ प्रकर्ण	२॥	।॥
योगवासिष्ठ छोटा गुटका उत्तम कागद और अक्षर बडा	१।	६=
तुलसीदासकृत रामायण बडे अक्षरका अति उत्तम	५॥	१
तुलसीकृत रामायण क्षेपकसह टाईपका	३	।॥
व्रजविलास मोटा अक्षरसें छपता है	५	१
प्रेमसागर टाईपका बडा २ रु० बारीक	१।	६=
अर्चावतार वैभवस्तोत्र भजन	।।	६—
चाणक नीति भाषा टीकादोहा सहित जिल्द	।॥=	६=
तुलसीदासकृत दोहावली रामायण	।—	६—
स्वरोदयसार	६=	६॥
शनिकथा राघवदासकृत	।।	६॥
शनिकथा कायस्थकी	६=	६॥
भक्तमाल वा हरिभक्तिप्रकाशिका	४	।॥
विचारसागर सटीक	२	।।
सुंदरविलासमूल टैपका ।॥= सटीक	२।	६—
विदुर प्रजागर	।॥	६—
आत्मपुराणभाषा	१२	१।
एकादशस्कंध भाषा	१।	।—
भक्तमाला बडी महाराज रघुराजसिंहकृत	५	।॥।
भक्तिप्रकाश भजन	।।	६॥